गुरुजी

गुड़गाँव वाले

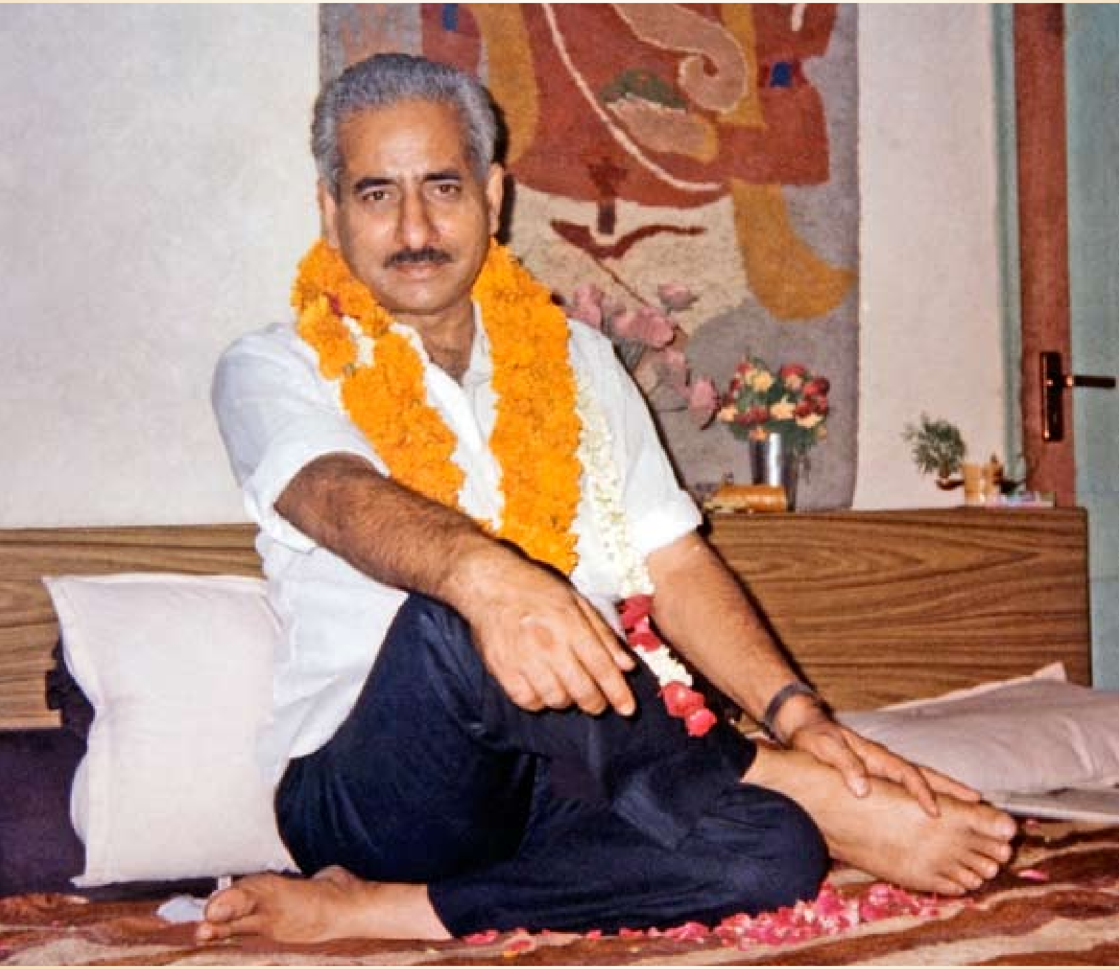

अविश्वसनीय झलकियाँ

भाग-3

"ये मैं हूँ...

मेरे पास स्थान पर आओ,

जो कुछ भी तुम्हारे दुःख हैं मुझे बता डालो

और उन्हें हमेशा के लिए भूल जाओ।

मैं सब कुछ पूरी तरह से ठीक कर दूंगा....."

दुःखों से पीड़ित सभी लोगों से यही कहते थे

...गुरूजी।

जो कुछ भी मैंने कहा,

वह कहने की क्षमता और ज्ञान

दोनों मुझ में नहीं, क्योंकि

यह दोनों एक शिष्य के बस में है ही नहीं।

यह जो सब ज्ञान जैसा दिखता है,

वास्तव में एक सन्देश है जो

शिष्य की सम्पूर्ण रचना में एक स्थाई चैनल द्वारा

गुरूजी ने स्थापित कर रखा है।

सो.....!! जो कुछ भी मैं दिखता हूँ,

वह मैं नहीं, अपितु वह स्वयं् मेरे मालिक ही हैं।

अविश्वस्नीय झलकियाँ

भाग-3

‘राज्जे’ - गुरुशिष्य
(राजपॉल सेखरी)

श्री राजपॉल सेख़री के पास
कॉपीराईट © 2010 सुरक्षित

इस पुस्तक के मुद्रण का, लेख़क के पास पूर्ण नैतिक अधिकार है। इस पुस्तक या इसके किसी भाग को, किसी हालात में प्रकाशक की लिख़ित अनुमति के बिना छापना, वर्जित है।

इस पुस्तक में लिखी घटनाओं का, सुन्दर रीति से वर्णन करने के लिये, किसी बनावटी या झूठे चरित्र का निर्माण नहीं किया गया है। इसमें उल्लिखित नाम व घटनाऐं, सिर्फ लेख़क के नज़रिये से लिखी गयी है।

प्रथम संस्करण 2011
भाग-3

प्रकाशक
श्री राजपॉल सेख़री,
19/77, पंजाबी बाग (पश्चिम)
नई दिल्ली.110026,
भारत
mahaguru9@hotmail.com
www.gurujiofgurgaon.com

हिन्दी रूपान्तरण :
----गुलशन अरोड़ा

मेरे गुरुजी

भाग-3

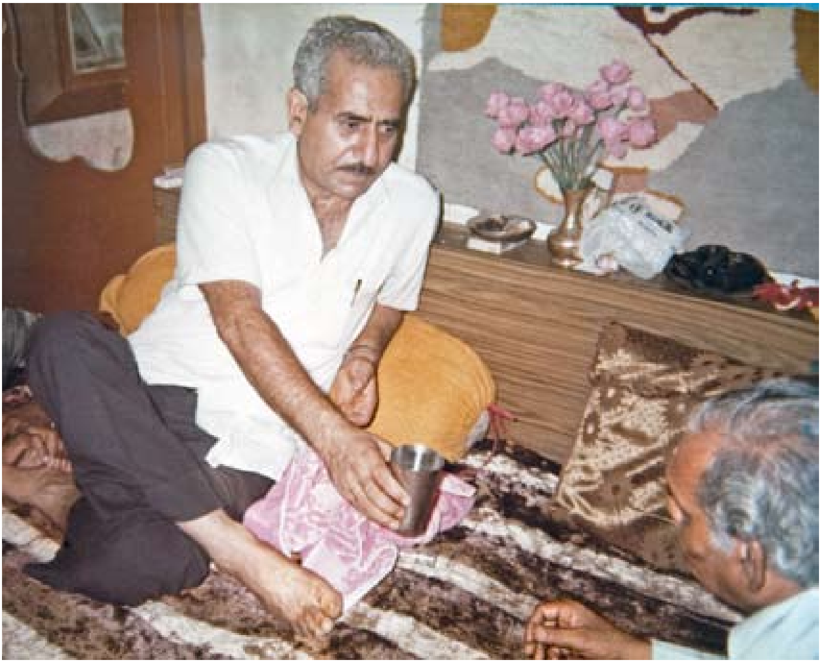

<u>लेखक की कलम से</u> : 'राज्जे' - गुरुशिष्य

***अविश्वस्नीय झलकियों के भाग*-1 *व भाग*-2** *में कुछ झलकियाँ प्रकाशित एवं वितरित करने के बाद कुछ और ऐसी झलकियाँ मुझे स्मरण हो आईं, जिन्हें मेरे सुपर मॉस्टर गुरुजी ने इस पुस्तक में लिखने के लिए निर्देशित किया, जिसे* ***अविश्वस्नीय झलकियाँ भाग*-3** *के नाम से जाना जायेगा।*

मैं बहुत आनन्दित हूँ और आपके लिए भी यही आशा रखता हूँ क्योंकि अतीत में आपने भी समय की सभी बाधाओं को तोड़कर, मेरे साथ यह यात्रा की है। जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है कि मुझे उनके नज़दीक रहने, खड़े होने, उनके समक्ष या पास में बैठकर अपनी आँखों को सुःख देने का अवसर मिला और ***'गुरुजी'*** *की मधुर वाणी में* ***'आ पुत'*** *सुनने का आनन्द प्राप्त हुआ।*

"आओ बेटा, क्या बात है?"

"जी मैंने सुना है कि आप सबको ठीक कर देते हैं। मुझे ये बीमारी है और मैंने बहुत इलाज कराया पर आराम नहीं आया। किसी ने कहा कि आप गुरु हैं और सबका भला करते हैं इसलिए आपके पास आया हूँ। मुझ पर मेहर करें। मैं दवाईयाँ खा खाकर थक गया हूँ।"

"...बैठो बेटा।"

फिर एक आवाज़ पर पानी का गिलास मंगवा कर अपने माथे से लगाकर कहना, ***"लो... जल पी लो बेटा, जाओ आज के बाद तुम ठीक..! कोई दवाई मत खाना। इतने दिन के बाद बड़ा वीरवार आयेगा, तुम सवा रुपये की मीठी फुल्लियाँ प्रसाद के रुप में चढ़ा देना स्थान पर।"***

और बस, इतना ही..!! बीमार की बीमारी खत्म, बिना किसी दवाई या डॉक्टरी इलाज के।

ऐसा ही होता रहा सालों साल ....और मैं देखता रहा... देखता रहा..!

एक बार हिम्मत करके पूछा, "आप इतना कुछ करते हो सुबह से रात तक लोगों के दुःख दूर करते हो और थकते भी नहीं। आप क्यों करते हैं ये सब। ना कोई पैसा और यहाँ तक कि कोई गिफ्ट भी नहीं लेते, आपको मिलता क्या है..?"

"...इनकी दुआऐं, तड़पती हुई इनकी आत्माओं का शाँत और स्थिर होना, मुरझाये हुए इनके चेहरों का खिल जाना, ...ये मिलता है मुझे। इन सबके अन्दर भगवान विराजमान हैं आत्मा के रुप में। मेरे दिये हुए सुःख को वो मालिक ही इनके अन्दर से महसूस करता है और इनका रोना बन्द। फिर निकलती हैं इनकी आत्माओं से दुआंऐ। ...ये मिलता है मुझे। और... ये वो दौलत है जो खर्च करने से खत्म नहीं होती। धन रुपया खर्च करने से खत्म हो जाता है मगर ये दौलत जितनी खर्च करो, उतनी बढ़ती जाती है।

ईश्वर की माया के कारण इन लोगों को याद नहीं कि ये कौन हैं। लेकिन मैं जानता हूँ। कोई भी जब मेरे सामने आकर बैठता है, तो जन्म से मृत्यु तक, सब पता लग जाता है मुझे। जिस बीमारी को लेकर आया है, उसका कारण भी पता चल जाता है। कैसे और कितने दिन में ठीक करना है, वो भी जानता हूँ। मेरे पास उस मालिक का दिया हुआ भंडार है। ज़रा सा बाँट देता हूँ, रोता हुआ, हंसता हुआ वापिस जाता है। ...ये मिलता है मुझे बेटा।

जिसे इतनी पीड़ा है कि सहन नहीं होती और डॉक्टरों व दवाईयों ने भी हाथ खड़े कर दिये हों, मौत सामने है और वो मरना नहीं चाहता, उसे मैंने आराम दे दिया और मौत का डर खत्म कर दिया, कभी उससे पूछना ये सवाल। पूछना उससे कि आपको ठीक करके गुरुजी को क्या मिला!"

"भगवान को बुरा तो नहीं लगता कि आप उसके निज़ाम में दखल देते हैं..?"

"बड़ा खुःश होता है वो..! उसी के कहने पर ही कर रहा हूँ ये सब।" अपने बनाये हुए बन्दों के अन्दर ही रहता है आत्मा के रुप में। सुःख उसी को महसूस होता है। बेटा, बहुत खुःश होता है वो मालिक।

वाह...!!
कैसा अछूता ज्ञान है आपके पास, गुरुजी।
ना कभी सुना और ना ही कभी देखा। सच में आप गुरुओं के भी गुरु हैं। आपके पास एक मिनट बैठना स्वर्ग में एक युग के समान है साहेब जी...।

कभी जुदा ना होने देना और ना ही कभी करना, मालिकों के सरताज।

कोटि-कोटि प्रणाम।

आम मनुष्य को जब कभी शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा आ घेरती है तो उससे बचने के लिए वह रास्ते तलाशता है। स्वाभाविक रुप से वह डॉक्टरों-हकीमों के बारे में सोचता है या अस्पतालों में जाने का प्रबन्ध करता है।

जैसे ही कोई दुःखी या मरीज़ किसी डॉक्टर के पास पहुँचता है तो डॉक्टर खुःश होता है! कारण यह कि उसे अब आमदनी होगी... धन मिलेगा...।

लेकिन जैसे ही वो गुरूजी के पास पहुँचता है तो वे भी खुःश होते हैं! परन्तु अब कारण भिन्न है। गुरूजी को खर्च करना पड़ेगा, अपना ईश्वरीय धन। कमाल का फर्क है खुःशी और खुःशी के बीच।

वाह.... हे गुरूदेव, वाह..!! आफरीन..! आफरीन

राज्जे, गुरू शिष्य,
(राजपॉल सेख़री)
18 *अप्रैल,* 2011

आइए,
अब तृतीय भाग का आनन्द लीजिए...

: : अनुक्रमणिका : :

103.	जब गुरूजी ने मुझे बिना शर्त आत्म समर्पण का वरदान दिया।	17-19
104.	जब गुरूजी का एक प्रारंम्भिक शिष्य, गरदन और गले की समस्या से बीमार पड़ गया।	20-21
105.	जब गुड़गाँव स्थान पर गुरूजी के पैर दबाते हुए मैंने उन्हें काट लिया।	22-25
106.	जब गुरूजी ने कानपुर की गुड्डन को ठीक किया।	27-31
107.	जब सोमवार उपवास के दिन, छोले-कुल्चे ख़ाने का मन में, विचार आया।	32-34
108.	गुरूजी सर्वव्यापक हैं एक बच्चा जो नये स्कूल में गया था उसकी आत्मा की पुकार सुनी।	35-39
109.	गुरूजी नागपुर में थे टेलीफोन पर बात कर रहे थे जब कि दरवाजे पर बाहर से ताला लगा था।	40-42
110.	जब सतनाम सिंह उर्फ मंगा का एक्सीड़ेन्ट हुआ और डॉक्टर ने कहा बचने की कोई उम्मीद नहीं है।	43-45
111.	जब गुरूजी चामुण्ड़ा दर्शन के लिये मुझे और अन्य शिष्यों को मैसूर लेकर गये।	47-50
112.	जब एक महिला दस साल पहले गुरूजी के सामने की गई गलती की माफी माँगने मेरे पास आई।	51-54
113.	जब गुरूजी ने मुझे गाली देकर छेड़ते हुए कहा “You Idiot” अब तू गुरू को भी आशीर्वाद देगा?	55-57

114.	जब गुरूजी ने 'महाशिवरात्रि' और 'गुरूपूर्णिमा' पर आने वाले भक्तजनों के लिए लंगर सेवा शुरु की।	58-65
115.	जब माताजी ने एक पतीला दाल बनाई और उसमे एक बड़ा चम्मच नमक डाला।	66-68
116.	हम सब शिष्यों के बीच में से जब गुरूजी को एक महात्मा ने एक नज़र में ही पहचान लिया।	69-71
117.	जब मैं गुरूजी के कमरे में उनके चरणों की सेवा कर रहा था, तो महसूस हुआ कि उनकी बाँयी टाँग अति नरम थी।	72-74
118.	जब हम गुरूजी के साथ लॉस ऐंजलिस एअरपोर्ट पहुँचे और कृष्ण कुमार हमें लेने आया।	75-78
119.	जब गुरूजी ने कहा कि अरुण कुमार ने ग्राहक को जो फर्नीचर दिया है उसमें दीमक नहीं है।	79-81
120.	जब गुरूजी ने कहा, कि उसकी दोनों किड़नियाँ ठीक हैं	83-85
121.	जब मैं अपनी फैक्ट्री, हरियाणा से दिल्ली,स्थानांत्रित कराना चाहता था।	86-91
122.	देवेन्द्र जैन ने लंदन एयरपोर्ट पर, गुरूजी से कैमी साबुन अपने सामान में साथ ले जाने की प्रार्थना की।	93-95
123.	संतलाल की गुरूजी के साथ मनीकरण से ऊपर की, अविस्मरणीय यात्रा।	96-99
124.	जब गुरूजी ने मुम्बई में एक पारसी लड़की को ठीक किया।	100-102
125.	जब गुरूजी लेटते ही सैकिण्डज़ में ही सो गये।	104-106

126.	गुरु जी टुअर पर गये थे और माताजी, कमरों में ताले लगाकर बच्चों के साथ, छत पर सोने चली गई थी।	107-109
127.	हरियाणा आटो के मि. गुप्ता, जब अपनी फैक्ट्री को दुबारा शुरु करने के लिए मेरे पास मायापुरी आये।	110-113
128.	जब अपने शिष्य के. सी. कपूर को, श्रीमति ऑबराय को आशीर्वाद देने इर्विन अस्पताल भेजा।	114-116
129.	जब गुरुजी ने अपने बेटे बब्बे को, बेसमेन्ट में 108 बाल्टियाँ जल की पहुँचाने का आदेश दिया।	117-119
130.	जब श्री आर. पी. शर्मा बुख़ार पर तो सहमत थे लेकिन घर और ऑफिस में नहीं।	120-122
131.	जब गुरुजी, शाम के समय, गुड़गाँव स्थान की छत पर खड़े आकाश की तरफ देख रहे थे।	124-126
132.	जब मैं गुरुजी के दर्शन करने गुड़गाँव गया तो सेवादार पूरन ने मुझे गुरुजी से मिलने से रोक दिया।	127-129
133.	गुरुजी ने अपने अनूठे अन्दाज़ में संदेश देकर, बब्बू को सड़क पर रोका।	130-132
134.	जब एक बैंक कर्मचारी को उल्टी में हरी मिर्च निकली।	133-135
135.	जब गुरुजी ने लाजपत नगर की नीलम जो ब्लड कैंसर से पीड़ित थी को प्रसाद की फुल्लियाँ दी ।	136-138
136.	जब गुरुजी ने मुझे मोहन सिंह पैलेस में लस्सी पिलाई।	139-141

137. 'गुरूपूर्णिमा' जब शिष्य अपने गुरू की पूजा करते हैं। 142-143

138. जब सैंगर ने डी.एस. जैन को फोन किया कि वह सभी महारथियों को उठा कर फैंक देगा। 145-147

139. जब गुरूजी ने अपने शिष्य आर. सी. मल्हौत्रा जी के अन्दर छिपी धन की चाहत को समाप्त किया। 148-150

140. जब मेरे ड्राईवर ने कहा, कि कार में जिन्दा साँप है, तो गुरूजी ने बिना समय लगाये ही, सच्चाई का पता लगा लिया। 151-153

141. जब सन्नी कत्याल की पुरानी सिरदद्र, गुरूजी के एक अद्भुत क्रिया से समाप्त हो गई। 154-156

142. गुरूजी की तस्वीर स्कूल प्रिंसीपल के ऑफिस की दीवार पर लगी थी लेकिन वह गुरूजी के बारे मे कुछ नहीं जानता था। 157-158

143. जब कृष्ण कुमार साहनी और उसकी पत्नी स्वर्ण से, गुरूजी गोल मार्किट में मिले। 159-161

144. जब सेना के जनरल जगदीश अपने बच्चों के लिये कानूनी संरक्षण का अधिकार माँगा। 162-165

145. जब एक रात में गुरूजी ने, "वीरजी' की भतीजी के चेहरे का मुहासा दूर कर दिया। 166-167

146. जब गुरूजी ओ. पी. आहूजा से बोले कि वे इस व्यक्ति का इन्तज़ार पाँच साल से कर रहे थे। 168-173

147.	जब शिष्यों ने लंदन में खरीदारी की और गुरूजी ने पाउण्ड्स में उसका भुगतान किया।	174-176
148.	जब बड़े वीरवार के दिन मध्यान्तर के दौरान, रवि त्रेहन के लिए गाना गाने के बाद, मैं बोल भी नहीं सका।	177-182
149.	एक संसारिक रुप में गुरूजी, "मर्यादा पुरूषोत्तम"	183-184
150.	मेरे एक मित्र की बहन नाज़ी, जो लगातार सिरदद्र व नींद न आने की बीमारी से ग्रसित थी।	185-187
151.	जब मुम्बई के दिनेश ने 1989 में, अपने सीनियर स्टाफ की शिकायत गुरूजी से की।	188-190
152.	जब गुरूजी ने एफ. सी. शर्मा जी को बाहर सड़क पर जाकर, गुरू दर्शन के लिए लाईन में खड़े भक्तजनों की, परिक्रमा करने के लिए कहा।	191-192
153.	प्रेम और भक्ति की चरम सीमाओं का एक उद्हारण।	193-195

इससे पूर्व भाग-2 में, 52 से 102 तक झलकियाँ लिखी तथा प्रकाशित की जा चुकी है उसी श्रंखला को और आगे बढ़ाते हुए अब प्रस्तुत हैं कुछ और झलकियाँ ---

"जिसकी शक्ल और नाम तक भी याद नहीं है तुझे, उसकी बात को तू दिल से मानता है और मैं तेरा गुरु, जो साक्षात तेरे सामने हूँ उसकी बात मानने को तेरा दिल नहीं मानता?"

103. जब गुरुजी ने मुझे बिना शर्त आत्म समर्पण का वरदान दिया।

गुरुजी ने मुझसे पूछा, ".....राज्जे, दो और दो कितने होते हैं?" मैंने उत्तर दिया, "गुरुजी, चार।"

गुरुजी बोले, "......नहीं बेटा, पाँच होते हैं।"

मैंने सहमति से हाँ कहा और बोला, "जी गुरुजी, पाँच होते हैं। सुनकर गुरुजी बोले "बेटा, दिल से नहीं कहा।"

मुझे लगा जैसे मैं पकड़ा गया और शर्माते हुए बोला, "गुरुजी, दो और दो चार होते हैं, यह मेरे दिमाग में बचपन से ही डाल दिया गया था।"

गुरूजी ने पूछा, "तुमसे किसने कहा कि दो और दो चार होते हैं?" ....मैंने जवाब दिया, "शायद किसी गुरू (अध्यापक) ने कहा था।"

उन्होंने मुझसे उस अध्यापक का नाम पूछा, जो मुझे याद नहीं था। अतः मैंने कहा- "गुरूजी, याद नहीं मुझे।"

गुरूजी ने मुझे उसकी शक्ल याद करने के लिए कहा। तो मैंने कहा, ...मुझे याद नहीं आ रहा।

इस पर गुरूजी बोले,

"जिसकी शक्ल और नाम तक भी याद नहीं है तुझे, उसकी बात को तू दिल से मानता है और मैं तेरा गुरू, जो साक्षात तेरे सामने हूँ उसकी बात मानने को तेरा दिल तैयार नहीं..?"

तथ्यः समझ में आने पर मुझे एहसास हुआ और दिल से स्वीकारते हुए मैंने कहा, "गुरूजी दो और दो उतने होते हैं जितने आपने कहा है, पाँच ही होते हैं। किसी भी कीमत पर चार नहीं हो सकते।"

मैंने आगे कहा, "गुरूजी, जो आपने कहा है वह पूर्णतयाः सत्य है इसमें तनिक मात्र भी संदेह नहीं है तथा हाथ जोड़कर उनके पवित्र चरणों का स्पर्श करते हुए अपनी अज्ञानता के लिये क्षमा माँगी।

गुरूजी ने मेरा और अधिक ध्यान रखना शुरु कर दिया। वे मेरे विचारों, मेरे कार्यो तथा चिन्ताओं का बहुत ध्यान से नियन्त्रण रखने लगे। उन्होने मुझे आध्यात्मिक ज्ञान पर किसी भी लेख़क द्वारा लिखी गई पुस्तक न पढ़ने का आदेश

दिया और कहा कि मैं सिर्फ उनकी ही कही गयी बात सुनूं और विश्वास करुं।

बहुत बड़ी बात थी ये, कोई आम नहीं। संसार में हर सन्त महात्मा अपनी विचारधारा के अनुसार लोगो में ज्ञान बाँटता है लेकिन ये एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं। आध्यात्म की राह पर भिन्नता मुश्किल में डाल सकती है। यह मानूं या वह मानूं के असमन्जस में रास्ता भटकने का डर होता है। इसी कारण गुरुजी ने मुझे किसी भी पुस्तक को पढ़ने के लिए मना कर दिया था। गुरुजी के आदेश के उपरान्त कोई भी पुस्तक मेरी अलमारी में नहीं रही।

किसी भी तरह की कोई जानकारी यदि मुझे चाहिए होती, तो वह गुरुजी के पास उपलब्ध होती। मेरा चुनाव गुरुजी ने कर लिया था और मैं सिर्फ उन्हीं की ही छत्रछाया में रहा और आज तक हूँ।

गुरुजी संसारिक और आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्रों में, उन सभी बड़ों से बहुत बड़े हैं।

वे हर ज्ञान के सम्पूर्ण ज्ञाता हैं।

मैंने कई बड़े-बड़े सन्तों को, गुरुजी के पास आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिये आते हुए और उन्हें, पूर्ण-रुपेण सन्तुष्ट होकर वापिस जाते हुए देखा है। मैं हमेशा इस बात से विस्मित हो जाता था कि कैसे गुरुजी के पास हर उस बात का पूर्ण समाधान होता था, जिसके विषय में सामने वाला पूछना चाहता था।

गुरुजी के कार्यों की तुलना,
किसी के साथ भी करना असम्भव है।

मैंने और अन्य शिष्यों ने गुरुजी को अपने हाथ से उसे जल पिलाते हुए कुछ दिनों तक देखा। परन्तु किसी को भी गुरुजी ने उस रोग का नाम नहीं बताया।

104. *जब गुरुजी का एक प्रांरम्भिक शिष्य, गरदन और गले की समस्या से बीमार पड़ गया।*

<u>गुरुजी के एक बहुत प्रिय शिष्य</u> से सम्बन्धित यह उपकथा (Episode) *वर्णित है। गुरुजी ने उसके घर में स्थान बनाया है और बड़े वीरवार को छोड़कर, बाकी दिन सेवा करने का आशीर्वाद और आदेश दिया है। (बड़े वीरवार के दिन वह सारा दिन गुड़गाँव स्थान पर होते हैं।) वह गुरुजी के आदेशानुसार, वहाँ सेवा कर रहे हैं। उनके यहाँ बहुत से लोग आशीर्वाद लेने आते हैं और ठीक होकर जाते हैं।*

एक बार वह शिष्य गले व गरदन की किसी समस्या की वज़ह से बीमार पड़ गये। वह कुछ भी निगल नहीं सकते

थे। अतः गुरूजी ने उन्हें कुछ दिन गुड़गाँव स्थान पर रहने का आदेश दिया।

मैंने और अन्य शिष्यों ने गुरूजी को अपने हाथ से उसे जल पिलाते हुए कुछ दिनों तक देखा। परन्तु किसी को भी गुरूजी ने उस रोग का नाम नहीं बताया।

गुरूजी उसके मुँह में जल डालते और उसे पीने का आदेश देते थे। लेकिन वह उसे अन्दर तक नहीं ले जा पाते थे क्योंकि गला अन्दर से पूर्णतयाः बन्द था। तब गुरूजी अपना बाँया हाथ उसकी गरदन के पीछे और दाँयें हाथ से उसके गले को पकड़ कर, उस पर हल्के दबाव के साथ कोमलता से नीचे की तरफ सरकाते हुए कोमलता से उसे आदेश देते कि वह अपने मुँह में रखा जल पी ले।

उस शिष्य के लिये यह एक मुश्किल कार्य था लेकिन फिर भी उसे पीने की कोशिश करते और धीरे-धीरे पी लेते हालाँकि इसमें कई मिनट लग जाते थे। इसी तरह से गुरूजी रोज़ उन्हें जल पिलाते रहे और उनके गले की सूज़न कुछ ही दिनों में चली गई और वह पूर्णतयाः ठीक हो गये।

यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था जो गुरूजी ने किया। उक्त प्रदर्शन यह प्रमाणित करता है कि, भगवान शिव और गुरूजी के बीच सीधा सम्बन्ध है या फिर दोनो एक ही हैं।

प्रणाम गुरूजी,

आपको प्रणाम है।

यह अधिकार सिर्फ गुरूजी के ही पास है कि किसे चुनना है और किससे कितना और कैसा प्यार करवाना है। मेरे पास तो यह अधिकार है नहीं.....।।

105. जब गुड़गाँव स्थान पर गुरूजी के पैर दबाते हुए, मैंने उन्हें काट लिया।

दोपहर का समय था और मैं गुरूजी के दर्शन करने गुड़गाँव गया। गुरूजी अपने कमरे में थे और लाईन में खड़े हुए लोगों को आशीर्वाद दे रहे थे। उन्हें प्रणाम करने के बाद मैं उनके पलंग की दूसरी तरफ चरणों के पास बैठ गया।

गुरूजी उस समय बाँयी करवट लेकर आधे लेटे हुए थे तथा आने वाले लोगों को आशीर्वाद देने और उनसे बातें करने में पूर्णतयाः व्यस्त थे। जहाँ पर मैं बैठा हुआ था वहाँ पलंग पर उन्होंने अपनी टाँगें करीब-करीब आधी मोड़ रखी थीं।

जब मैंने गुरूजी के तेजपूर्ण चेहरे की तरफ देखा उस समय वे लोगों से बातें करने में एकाग्रचित थे। मैं उनके चरणों की तरफ मुड़ा। उन्होंने पैन्ट पहनी हुई थी। मेरा ध्यान उनके चरणों की तरफ चला गया और मैंने उन्हें दबाना शुरु कर दिया ।

चरणों की सेवा करते-करते मैंने देखा कि उनका ध्यान पूर्णतयाः लोगों में था। इतने में मेरा ध्यान उनके चरणों की तरफ आकर्षित होता चला गया। मैंने महसूस किया कि वे बहुत सुन्दर हैं, शायद उनका डिज़ाईन 'देवो महेश्वरा' ने खुद़ ही बनाया होगा। मैंने उनके चरणों की बनावट को बडे ध्यान से देखना शुरु कर दिया।

उनके चरण बहुत ही सुन्दर तथा मनमोहक प्रतीत हो रहे थे। कोई हड्डी नज़र नहीं आ रही थी।

- उनके पैरों का नीचे का घुमाव,
- चरणों के ऊपरी हिस्से की त्वचा का रंग,
- उनकी उंगलियों का डिज़ाईन,
- उनकी छोटी उंगली से लेकर, अंगूठे तक पूर्ण तार तम्यता।

जब मैं यह सब निर्बाध्य रुप से देख रहा था तो मैं उन पर इतना मुग्ध हो गया कि मेरे मन में उन्हें चूमने का विचार आ गया।

मैंने गुरूजी की तरफ देखा, वे अपने भक्तों के साथ, बातों में लीन थे। जो चरण मेरे नज़दीक था, उसे हल्के से मैंने चूम लिया।

मैंने ऊपर देखा और मुझे लगा कि उन्होंने ध्यान नहीं दिया। मेरे अन्दर जिज्ञासा उत्पन्न हुई और विचार आया कि अपने पूर्ण सन्तोष के लिये क्यों न थोड़ा जोर से दुबारा चूम लूँ और मैंने वैसा ही किया।

वाह......
इस बार भी उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। मैं बहुत खुः श हुआ फिर मैंने पूरे प्रेशर से एक बार फिर चरणों को चूम लिया। बड़ा आनन्द आया। लेकिन मैं इतना भावुक हो गया कि अपने आपको भूल कर मैंने पाँव को दाँतों से काट लिया। अब गुरूजी का ध्यान मेरी तरफ आकर्षित हुआ और डाँट कर बोले, "अरे ये तू क्या कर रहा है..?" अब मैं होश में आया और बोला कुछ नहीं... कुछ नही... गुरूजी, आप करिये बातें लोगों के साथ और गुरूजी फिर एक बार अपने भक्तों मे लीन हो गये और मैं फिर से उनके पाँव दबाने लगा। लेकिन इस बार कोई शरारत नहीं। मेरे प्रेम और आनन्द की अवस्था ऐसी थी, जिसका मैं ब्यान नहीं कर सकता।

ऊपर लिखी घटना का सम्बन्ध संसारिक है या आध्यात्मिक, मैं नहीं जानता। लेकिन गुरूजी की उस बात से सम्बन्धित ज़रुर है, जो मुझे याद आ रही है। कई साल पहले जब गुरूजी ने मुझे किताबें पढ़ने, मन्दिरों में जाने और ध्यान इत्यादि लगाने से लिए मना किया था और मैंने पूछा था कि गुरूजी फिर मैं क्या करूं..? तो उन्होंने कहा था कि मेरी दी हुई शक्तियों के प्रयोग से लोगों की सेवा कर और मुझसे प्रेम कर। बाकी सब मैं कर लूँगा...

तो क्या, कहीं ये प्रेम तो नहीं था...?

आज तक वे, स्वयं ही सब कुछ कर रहे हैं। उन्होंने मुझे कभी कुछ करने ही नहीं दिया। लोग आते हैं, अपने दुःख मुझे बताते हैं, मुझसे कुछ माँगते हैं और मैं 'हाँ' कर देता हूँ। उनके सब काम आज तक गुरूजी ही करते आ रहे हैं।

हर काम चाहे तो वह मेरे परिवार से सम्बन्ध रखता हो या मेरे व्यापार से, वे स्वयं ही कर्ता हैं। मेरे आध्यात्मिक जीवन के बारे में, मेरी सेवा या भक्ति के बारे में भी वे ही कर्ता हैं। इससे ज़्यादा मैं कुछ नहीं जानता। मैं तो बस इतना ही जानता हूँ कि गुरूजी सम्पूर्ण ज्ञाता हैं और उन्होंने मुझे अपने हिसाब से डिज़ाईन किया तथा बनाया है। मैं बस उनकी ही कृपा का पात्र हूँ। और... जैसा गुरूजी मुझसे कहा करते थे कि मैं बेवकूफ नम्बर 1914 हूँ मैं उनका वही हूँ। बड़ा भाग्यशाली महसूस करता हूँ अपने आप को।

यह अधिकार सिर्फ गुरूजी के ही पास है कि किसे चुनना है और किससे कितना और कैसा प्यार करवाना है। मेरे पास तो यह अधिकार है नहीं.....।।

वे गुरूजी हैं और

उनको पूर्ण रुप से जान पाना असम्भव है।

उनके चरण कमलों में साष्टाँग प्रणाम है।

आप अपनी असीम कृपा द्वारा हमेशा आशीर्वादों की वर्षा करते रहना, हे गुरूदेव...।

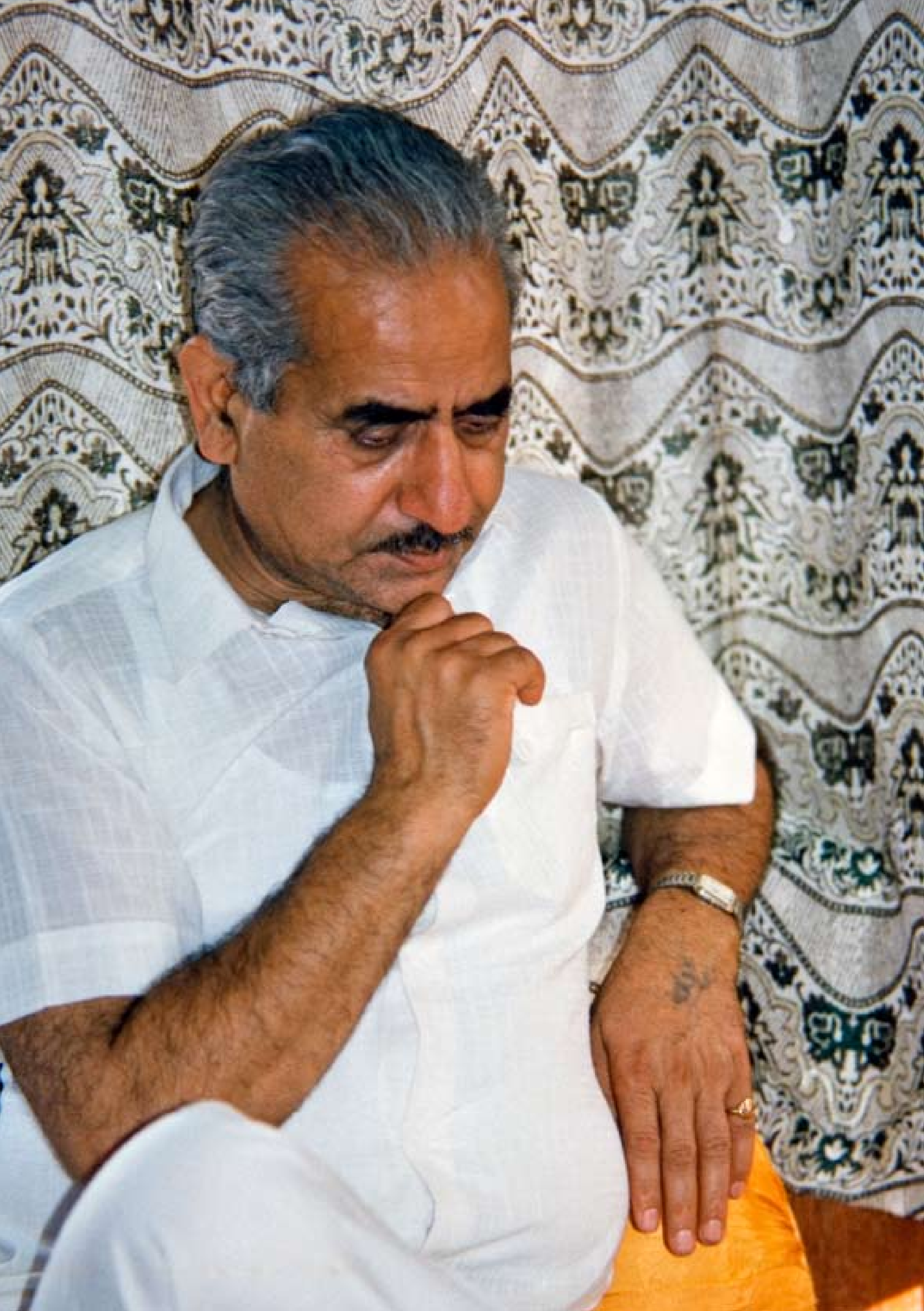

गुरूजी के पास अपनी फोटो भेजने के बाद उसे विश्वास होने लगा तथा उसने सबको बताया कि उसे ऐसा लगने लगा है कि अब वह ठीक हो जायेगी। उसने अपने बड़े भाई सुरेन्द्र से कहा कि वह उसे गुड़गाँव ले जाये।

106. जब गुरूजी ने कानपुर की गुड्डन को ठीक किया।

सन् 1975 की बात है जब एक सरकारी अधिकारी (Government Officer) ने, अपनी व्यक्तिगत समस्या अपने सहयोगी के सामने रखी।

मि. श्रीवास्तव ने मि. दत्ता से, अपने दुःख का कारण बताया। वे दोनों ही सरकारी विभाग में, उच्च अधिकारी के पदों पर दिल्ली में कार्यरत थे। मि. श्रीवास्तव ने कहा, "मेरी बहन की एक लड़की है जो कानपुर में रहती है। वह अल्सर तथा जोड़ों की दर्द से पिछले दस सालों से बहुत परेशान है। उन्होंने बहुत से डॉक्टर व अस्पतालों में उसका इलाज़ कराया, लेकिन सब बेकार..............."

"....हमारा पूरा परिवार, सिर्फ एक ही उद्‌देश्य को लेकर जी रहा है कि किसी तरह वह लड़की ठीक हो जाये।"

मि. दत्ता ने कहा कि उनकी मिनिस्ट्री में एक ऑफिसर हैं। उन्होंने बहुत से मरीज़ों को ठीक किया है और उसने मि. श्रीवास्तव को आश्वासन दिया कि वे उनकी भाँजी के लिये उनसे बात करेंगे।

वह ऑफिसर कोई और नहीं, गुरूजी ही थे। मि. दत्ता, गुरूजी से मिले और उस लड़की को ठीक करने की प्रार्थना की। गुरूजी ने उस लड़की की फोटो मंगवाई।

अट्‌ठारह वर्षीया गुड्डन, दर्द्र निवारक दवाईयों (Pain Killers) *पर जी रही थी और पिछले दस सालों से बिस्तर पर थी। इतनी लम्बी औषधीय-चिकित्सा* (Medical Treatments) *से वह थक चुकी थी और उसका साधु और सन्तो के प्रति भी विश्वास खत्म हो चुका था। इसलिए वह कहीं किसी के पास, मद्‌द के लिये जाने को तैयार नहीं थी।*

गुरूजी के पास अपनी फोटो भेजने के बाद उसे विश्वास होने लगा तथा उसने सबको बताया कि उसे ऐसा लगने लगा है कि अब वह ठीक हो जायेगी। उसने अपने बड़े भाई सुरेन्द्र से कहा कि वह उसे गुड़गाँव ले जाये।

सुरेन्द्र उसे अपनी बाँहों में उठाकर, स्टेशन पर ले गया। उसके पास रेलवे द्वारा आरक्षित कोई सीट/बर्थ नहीं थी। ट्रेन में बहुत अधिक भीड़ थी। उसने गुड्डन से कहा, कि बिना बर्थ के इतनी लम्बी यात्रा करना, उसके लिए कैसे सम्भव हो सकता है..? क्योंकि गुड्डन को बर्थ पर लिटाना जरुरी था।

तभी वहाँ एक अदभुत बात हुई।

संयोग से, उस समय वे लोग एक सेना द्वारा आरक्षित डब्बे (Coach) के पास खड़े थे। रेल के उसी कोच से, एक सेना अधिकारी बाहर आया और शिष्टाचार के नाते, उन्हें अपने कोच में ले गया। (जबकि सेना द्वारा आरक्षित डब्बे में साधारण यात्री, यात्रा नहीं कर सकता।) उसने एक बर्थ का इन्तज़ाम किया और बड़े प्यार से गुड्डन को उस बर्थ पर लिटा दिया और वे दिल्ली, अपने मामा श्रीवास्तव जी के पास पहुँच गये।

श्रीवास्तव को भी उम्मीद लगने लगी थी क्योंकि एक तो गुड्डन को भी विश्वास हो चला था जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी और दूसरे इस हालत में बिना आरक्षित टिकट के रेल यात्रा करना। उसके प्रार्थना करने पर गुरूजी ने, गुड्डन को श्रीवास्तव के घर जाकर देखा। गुरूजी ने कहा, यह बिलकुल ठीक हो जायेगी बशर्ते यह कोई दवाई न खाये। गुड्डन के लिए बिना दवाई के कुछ घण्टे बिताना भी मुश्किल था लेकिन गुड्डन ने इसके लिये 'हाँ' भर दी।

गुरूजी ने अपने दोनों हाथों से उसके मुड़े हुए पैर को पकड़ा और सीधा कर दिया। यह एक असम्भव कार्य था जो परिवार वालों के लिये अद्‌भुत था। क्योंकि वही गुड्डन, जो अपने पैरों को आराम से भी छूने तक नहीं देती थी, वह अब खड़ी थी। वह किसी प्रकार का दर्द महसूस नहीं कर रही थी उसके पैर सीधे हो गये। गुड्डन ने अविश्वस्नीय राहत महसूस की।

कुछ दिन बाद गुरूजी दुबारा उनके घर आये और गुड्डन से पूछा "बेटा, मैं आज तुम्हें चलाऊँ....??" उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। गुरूजी ने फर्श पर अपना हाथ रखा और गुड्डन

को उस पर खड़ा होने के लिये कहा फिर उन्होंने अपना दूसरा हाथ रखा और गुड्डन का दूसरा पैर भी अपने हाथ पर लिया। इस तरह कुछ मिनटों तक वह गुरूजी के पवित्र हाथों पर चलती रही। वह फर्श पर नहीं गुरूजी के हाथों पर चल रही थी। गुड्डन ने दस सालों के बाद चलना शुरु किया। इस धरती पर एक 'चमत्कार' हो गया। उसके परिवार वालों ने, यह सब पहली बार देखा। गुरूजी ने दुबारा बड़े वीरवार पर आने के लिए कह कर, उन्हें वापिस कानपुर जाने की अनुमति दे दी।

गुड्डन ने इसके बाद कोई दवाई नहीं ली। वह सिर्फ जल तथा लौंग इलायची ही लेती रही।

एक दिन गुरूजी ने उनसे कहा, कि गुड्डन को उल्टी होगी और उसमें से कुछ निकलेगा। छः से आठ दिन के बाद, ऐसा ही हुआ। उसकी उल्टी में बरफी का एक पूरा साबुत पीस बाहर निकल आया। गुड्डन के परिवार वालों को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके मुँह में से साबुत बरफी का पीस, कैसे निकला......!!

फिर उन्हें याद आया कि कुछ वर्ष पहले एक महिला ने गुड्डन को बरफी दी थी। लेकिन वह बरफी उसने चबाकर खाई थी, निगली तो नहीं थी। बरफी के लगभग दो इन्च बड़े साबुत पीस का बाहर आना, समझ से बाहर की बात थी।

गुड्डन अब अपने भाई या परिवार के किसी अन्य सदस्य की सहायता लिये बिना, अपने आप स्वतन्त्र रुप से चलती थी। उसके परिवार में उसके माता-पिता के अलावा तीन बहनें व

एक भाई, अब बहुत खु: श थे और उन्होंने भी गुरूजी का आशीर्वाद लेने, उनके पास गुड़गाँव आना शुरु कर दिया।

गुरूजी ने देखा, कि इस परिवार को दृढ़ विश्वास हो गया है तो उन्होंने कृपा की और कानपुर उनके घर गये। वहाँ उन्होंने स्थान बनाया और सुरेन्द्र को आध्यात्मिक शक्तियाँ देते हुए, सेवा करने का आशीर्वाद और आदेश दिया।

गुरूजी ने कहा कि "सुरेन्द्र, कानपुर में गुरु के नाम से जाना जायेगा और जो कोई उसके पास आयेगा, ठीक हो जायेगा।" आज तक सुरेन्द्र वहाँ सेवा करता है और उसकी बहन गुड्डन भी पूरी तरह से स्वस्थ है और आध्यात्मिक सेवा में उसका साथ देती है।

***एक ऐसा व्यक्ति, जो शौच आदि के लिये भी, किसी की सहायता के बिना न जा सकता हो, वह स्वतन्त्र रुप से चले और दूसरों की सेवा करे*-----**

ये तो सिर्फ गुरूजी के प्रताप से ही सम्भव है।

कोटि-कोटि प्रणाम हैं
साहेब जी......

गुरूजी ने कहा, "वही गुरू स्वयूं, तुम्हें खाने की इजाज़त दे रहा है।" सभी लोग महागुरूजी द्वारा दी गई उनकी इच्छा पूर्ति की आज्ञा पाकर बहुत आनन्दित हुए।

107. जब सोमवार उपवास के दिन, छोले-कुल्चे ख़ाने का मन में विचार आया।

एक बार गुरूजी बहुत से बच्चों, जिनमें इन्द्रा, जो उन्हीं के परिवार की सदस्या है तथा अन्य शिष्यों को लेकर कुल्लू जा रहे थे। सभी लोग करीब सात या आठ कारों में सवार थे। गुरूजी स्वय् सबसे आगे वाली कार में थे। उस दिन सोमवार का दिन था और सभी का उपवास था।

कारों का काफिला एक नदी के किनारे से गुज़र रहा था। रास्ते में एक छोटी सी छोले-कुल्चे की दुकान आई (पंजाब का एक प्रकार का व्यन्जन), इस तरह के व्यन्जन अक़्सर

बड़े शहरों में देखने को कम मिलते हैं। यह केवल पंजाब के छोटे शहरों में ही होते है। इतने में किसी बच्चे के मन में खाने की इच्छा उत्पन्न हुई।

परन्तु उस दिन तो सोमवार का उपवास था। उसने सोचा और आपस में बात करने लगे कि कितना मज़ा आये अगर गुरूजी ये कभी-कभी मिलने वाले कुल्चे-छोले खाने की अनुमति दे दें।

<u>तभी एक चमत्कार हुआ</u>-----------

एक मिनट में गुरूजी ने अपनी गाड़ी रोकी और उनके पीछे-पीछे सभी कारें रुक गईं। गुरूजी अपनी कार से उतरे और पैदल चलकर, पीछे उस कार तक आये जिसमें इन्द्रा बैठी हुई थी और सबको नीचे उतरने के लिये कहा तथा आदेश दिया कि---

"…..जाओ और छोले-कुल्चे खा लो।"

उनमे से एक ने भोलेपन में गुरूजी से कहा-- "गुरूजी आज तो सोमवार का उपवास है-----!!"

गुरूजी बोले--- "उपवास तुम किसके लिए रखते हो..?"

सभी एक साथ बोले--- "आपके लिए गुरूजी"

गुरूजी ने कहा,---"वही गुरु स्वयं, तुम्हें खाने की इजाज़त दे रहा है।"

सभी लोग महागुरूजी द्वारा दी गई उनकी इच्छा पूर्ति की आज्ञा पाकर बहुत आनन्दित हुए।

परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि गुरुजी स्वयं पहली कार में थे और पीछे की किसी कार में किसी बच्चे के मन में क्या आया और उन बच्चों ने आपस में क्या बात की, सुन रहे थे और उनके मन की बात जान गये।

यह एक साधारण व्यक्ति की पहुँच की सीमा की बात नहीं थी। उन्होंने कैसे यह सब जान लिया..?

...आखिर कैसे जाने कि गुरुजी ...हैं **......कौन ?**

...ओ घट-घट वासी .

..ओ ज्ञानियों के ज्ञानी .....

आपको प्रणाम है।

मेरी बुद्धि ने लगभग जवाब दे दिया था और मेरे दिमाग में कुछ भी नहीं आ रहा था। अतः मैंने अपनी आँखें बन्द की और सच्चे दिल से बापू (गुरूजी) को याद किया और उनसे सहायता के लिए प्रार्थना की।

108. गुरूजी सर्वव्यापक हैं। एक बच्चा जो नये स्कूल में गया था उसकी आत्मा की पुकार सुनी।

एक चमत्कार हुआ, जब एक बच्चा, जिसने गुरूजी को दिल से पुकारा और अपनी इच्छा व्यक्त की तो गुरूजी ने बिना समय लगाये उसी समय उसकी इच्छा पूर्ण कर दी। यह घटना मेरी बेटी बिन्दु ने मुझे सुनाई। जब वह सेन्ट थोमस स्कूल में पढ़ती थी और कुछ दिन पहले ही उसने उस स्कूल में प्रवेश लिया था।

"बहुत पुरानी बात है जब मैं किशोरावस्था में थी और हाई स्कूल में पढ़ती थी। मैंने अपना स्कूल बदला था और मेरे

लिये नये स्कूल का वातावरण बिलकुल अलग सा था। पुराने स्कूल में मेरी बहनें तथा चचेरी बहनें, कुल मिलाकर सात बच्चे एक साथ पढ़ते थे। वहाँ के अध्यापक व अध्यापिकाऐं हमें जानते थे कि हम कौन हैं। हमारे सहपाठी भी हमारी जिन्दगी का एक हिस्सा थे, क्योंकि हम साथ ही खेलने भी जाते थे।

नये स्कूल का वातावरण बड़ा अजीब और असमनजस का माहौल सा लग रहा था। मुझे स्वयं् भी समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे नये स्कूल के अध्यापकगण व मेरे नये सहपाठी कैसे होंगे तथा मेरे प्रति उनका व्यवहार किस प्रकार का होगा........!!

नये स्कूल में मेरा यह पहला सप्ताह था। मैंने स्कूल का नया सत्र (Session) शुरु होने के एक महींने बाद दाखिला लिया था।

एक सुबह जब मैं अपनी हिन्दी की क्लास में बैठी थी तभी वहाँ अचानक एक विचित्र घटना घटी। उस दिन हिन्दी की परीक्षा (Test) थी। परीक्षा के प्रश्नपत्र में कबीर का एक दोहा आया था....

धरती सब कागज करुं, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करुं, गुरु गुन लिखा ना जाय।।

मुझे यह विस्तार से लिखना था कि कबीर इसमें क्या संदेश देना चाहते हैं।

तब तक मैंने स्कूल की नई किताबें नहीं खरीदीं थी। क्योंकि वह अभी, बाज़ार में उपलब्ध नहीं थी। अभी तक केवल श्यामपट (Black Board) पर ही देखकर पढ़ा था।

अतः सोचने लगी कि अब मैं क्या करुं। मेरी बुद्धि ने लगभग जवाब दे दिया था और मेरे दिमाग में कुछ भी नहीं आ रहा था। मैं अंदाजा भी नहीं लगा पा रही थी कि कहाँ से शुरु करुं। अतः मैंने अपनी आँखें बन्द की और सच्चे दिल से बापू (गुरुजी) को याद किया और उनसे सहायता के लिए प्रार्थना की।

मैंने उन्हें अपनी बन्द आँखों से देखा.... कि

वे दया से परिपूर्ण, शुभचिन्तक और मन्त्रमुग्ध करने वाले रुप में आँखों में भरपूर प्यार लिए मुझे देखते हुए, लिखने का आदेश दे रहे थे। मैंने अपनी आँखें खोली, कलम (Pen) उठाई और लिखना शुरु कर दिया। शब्द कहाँ से आ रहे थे, मुझे नहीं मालूम और मैंने बिना कुछ सोचे समझे लिखना शुरु कर दिया। जो कुछ उन्होंने मुझे बताया, बस मैं लिखती चली गयी.....।

मैंने गुरु और शिष्य के बीच के शक्तिशाली रिश्ते के बारे में लिखा कि किस तरह एक गुरु, अपनी विलक्षण शक्ति के द्वारा अपने शिष्य को सन्मार्ग दिखलाता है कि वह गड्ढे में गिरने के बजाय, सच्चाई के मार्ग पर चले और जिन्दगी के सार को अपनाये।

मैंने लिखा कि कैसे गुरु अनन्त (Limitless) है, कितना दयावान है, कितना उदार, कितना सहनशील, अपने भक्तों के प्रति कितना प्यार रखने वाला, उनकी दयालुता आकाश की तरह विशाल है। उसका वर्णन करना असम्भव है यदि पूरी पृथ्वी को कागज बना लें और सभी पेड़ो को कलम बना लें और सभी समुद्रो को स्याही (Ink) बना लें तो भी गुरु के गुणों का गुणगान करना सम्भव नहीं है।

मैं लिखती चली गयी और शब्द अपने आप बाहर आते गये। मेरी उत्तर-पत्रिका (Answer Sheet) *के कई पन्ने लिखते-लिखते भर गये।*

आख़िर मैंने अपनी उत्तर-पत्रिका अध्यापिका को दे दी।

<u>अगले दिन,</u>

कठिनाईयों से भरपूर दिन को बिताने के लिए हमेशा की तरह मैं स्कूल पहुँची। मैं किसी को नहीं जानती थी और सोचते हुए कि आज भी हज़ारों की भीड़ में मुझे, एक बार फिर दोपहर का खाना अकेले ही खाना पडेगा।

लेकिन मुझे यह देख बहुत अचम्भा हुआ कि मेरे पास से गुजरने वाला हर एक बच्चा, मेरा अभिवादन करते हुए जा रहा था। मेरी अध्यापिकाओं की मुस्कान और ना ब्यान किये जाने वाला उत्साह, पूरे वातावरण में मौजूद था। अचानक आये इस बदलाव से मैं अचम्भित थी। मैंने घूमकर पीछे देखा तो मेरी उत्तर पत्रिका मेरी कक्षा (Classroom) *के पिन बोर्ड पर लगी हुई थी.......!!*

बस चन्द शब्दों में उनकी महानता और दयालुता का गुणगान करने पर, उपहार स्वरुप गुरूजी ने मुझे इतना कुछ दे दिया। सभी सहपाठियों और अध्यापिकाओं ने मुझे अपना लिया और अब मैं उनका एक हिस्सा बन गई थी। केवल कुछ शब्द ही गुरूजी के बारे में लिखे थे और इतना बड़ा सम्मान मिला, उपहार के रुप में.....!!

मैं नहीं जानती कि पाठक इस घटना को किस तरह से लेंगे...... लेकिन मुझे तो यह घटना ऐसे याद है जैसे कि यह अभी कुछ समय पहले ही घटित हुई हो।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि मैंने अपनी आँखें बन्द की और गुरूजी को दिल से सहायता के लिए पुकारा और बदले में मुझे ढ़ेरों कुछ मिल गया। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि इस अकेलेपन और दम घोटने वाले वातावरण (Lonely and Suffocating Environment) *में, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं किस तरह रह पाऊँगी......? मुझे बिना किसी अतिरिक्त परिश्रम के, सहपाठियों और अध्यापिकाओं के बीच एक नई पहचान मिली।"*

इतने बडे, इतने दयालु, हर समय मानने के लिये तैयार, द्रोपदी की आवाज़ पर प्रकट होने वाले भगवान कृष्ण की तरह....।।

....ऐसे हैं मेरे बडे मालिक।

माथा टिका ही रहे....
...हे गुरूदेव

मैं यह समझता हूँ कि उनकी मुस्कुराहट ही एक महत्वपूर्ण संदेश है, बेवकूफो, तुम अभी तक इस बात से अनभिज्ञ हो, कि कौन हूँ मैं..?

109. गुरूजी नागपुर में थे टेलीफोन पर बात कर रहे थे जबकि दरवाजे पर बाहर से ताला लगा था।

गुरूजी नागपुर में जब अपने ऑफिशियल टूअर पर थे तो उन दिनों दूर संचार के लिए, केवल स्थाई टेलीफोन (Land Line Telephone) *ही उपलब्ध था। तो यह उपकथा वहीं पर घटित एक अनोखे चमत्कार से सम्बन्धित है।*

नागपुर में गुरूजी ने अपने और अपने स्टाफ के ठहरने के लिए जो स्थान लिया था, उसके एक कमरे को ऑफिस के कार्य के लिए इस्तेमाल किया जाता था। वह कमरा उनके ऑफिस रिकार्ड और अतिरिक्त सामान के लिए प्रयोग होता

था। उसी कमरे में टेलीफोन भी लगा हुआ था। वह इमारत पुराने जमाने के हिसाब से बनी थी और उसकी खिड़कियों पर लोहे के सरिये, सुरक्षा के अभिप्राय से लगे हुए थे। लोहे के सरियों के बीच से लकड़ी की खिड़की को खोलकर कमरे के अन्दर देखा जा सकता था।

स्टाफ का एक सदस्य रात को उस कमरे के दरवाजे पर ताला लगाकर जाता था और सुबह-सुबह आकर, वो ही वह ताला खोलता था। यह उसका रोज का कार्य था।

गुरूजी को रोज सुबह दिल्ली व अन्य दूसरी जगहों से शिष्यों के फोन आते थे, उनसे बात करने के बाद ही वे अपने ऑफिस के कार्य, भूमि निरीक्षण हेतु जाते थे। एक दिन वही स्टाफ का सदस्य जिसने रात को ऑफिस बन्द करने के बाद ताला लगाया था, अपनी सुबह की सैर करके जब देर से लौटा और उसने खिड़की से झाँक कर अन्दर देखा तो अचम्भित रह गया। उस समय गुरूजी बन्द कमरे में किसी से टेलीफोन पर बात करने में व्यस्त थे। उसने दरवाजे पर ताले को देखा वह भी ठीक प्रकार से लगा हुआ था और चाबियाँ भी उसी की जेब में थीं। वह आश्चर्य चकित होकर बाहर से ही चिल्लाता हुआ गुरूजी से बोला, "आप अन्दर कैसे गये....? चाबियाँ तो मेरे पास हैं....!!"

गुरूजी ने खिड़की में से ही उसे देखा और कहा "बेटा, टेलीफोन की घन्टी बज रही थी तो मैंने टेलीफोन उठा लिया और बात करने लगा। वह स्टाफ मैम्बर बोला, "पर गुरूजी, बाहर से तो ताला लगा हुआ है, आप अन्दर गये कैसे....?" एक बच्चे जैसे भाव चेहरे पर लाते हुए गुरूजी बोले, "मैंने टेलीफोन की घन्टी सुनी और दरवाजे से टेलीफोन तक आ गया।"

वह स्टाफ मैम्बर दुबारा बोला, "पर दरवाजे पर तो अभी तक ताला लगा हुआ है और चाबियाँ मेरे हाथ में हैं..!" उसे इसका कोई जवाब दिये बिना, गुरुजी ने बात का विषय बदलते हुए कहा, "ठीक है...! ठीक है...!! अब दरवाजा खोल, मुझे बाथरुम जाना है। वहाँ खड़े सभी लोग चकित रह गये किसी को भी अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि गुरुजी कमरे के अन्दर हैं और कमरे के दरवाजे पर बाहर से ताला लगा है। वो अन्दर गये तो गये कैसे.....!! परन्तु गुरुजी ने उनके हर सवाल को टाल दिया।

यह चमत्कार एक रहस्य बन गया, जो आज तक भी एक रहस्य ही है। जब भी कोई उनसे इस रहस्य के बारे में पूछता तो गुरुजी बस मुस्कुरा कर बात का विषय ही बदल देते।

मैं यह समझता हूँ कि उनकी मुस्कुराहट ही एक महत्वपूर्ण संदेश है, "बेवकूफो, तुम अभी तक अनभिज्ञ हो, कि कौन हूँ मैं.... मुझसे बच्चों की तरह, ऐसे सवाल पूछ रहे हो...?"

यदि कोई साधारण व्यक्ति हो तो मेरा सवाल जायज़ है और यदि मैं उन्हें भगवान समझता हूँ तो मेरे इस सवाल का कोई मतलब ही नहीं उठता। क्योंकि भगवान के लिए किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं होता। गुरुजी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि मेरा मार्ग दर्शन कीजिए।

कृप्या गुरुजी, मुझे कसकर पकड़े रहिए। क्योंकि मैं आपके अलावा और किसी को नहीं जानता। अपने आशीर्वादों की भरपूर वर्षा कीजिए ताकि मैं अपने जीवन के हर मोड पर, उन आशीर्वादों में स्नान करता रहूँ और भीगा ही रहूँ।

गुरुजी बोले, "राज्जे, 'हाँ' कर दे...., बाकी मैं कर दूंगा।" डॉक्टर भी आश्चर्य चकित हो गये और बोले, "मरीज़ अब खतरे से बाहर है। हमारे इलाज से भिन्न ये किसी चमत्कारिक शक्ति से ठीक हो रहा है।"

110. जब सतनाम सिंह उर्फ मंगा का एक्सीड़ेन्ट हुआ और डॉक्टर ने कहा बचने की कोई उम्मीद नहीं है।

सतनाम सिंह उर्फ मंगा की दिल्ली में एक वर्कशाप थी। वह अपनी ख़राद मशीन पर भारी-भारी मशीनों के पुर्जे बनाने का काम किया करता था।

एक बार जब वह अपनी मशीन चला रहा था और उसकी मशीन पर बन्धा हुआ एक बड़ा सा पुर्जा, किसी वजह से अचानक खुल गया और उसके माथे पर आ लगा। उसके सिर पर गहरी चोट लगी और वह बेहोश होकर गिर गया। लोग उसे उठाकर अस्पताल ले गये जहाँ पर उसके लिये

डॉक्टरों ने अपने आपको असहाय बताया। जब उसकी पत्नी और माँ को सूचना मिली तो वह स्थान की तरफ दौड़ीं। मैं उनसे मिला और उन्हें आश्वासन दिया। लेकिन उन्हें जो डॉक्टर ने बताया था, वह बहुत गम्भीर था। इसलिए उन दोनों महिलाओं को समझाना, मुझे बहुत मुश्किल प्रतीत हो रहा था। किसी तरह मैं उसकी माँ को जल लेकर अस्पताल भेजने में तो सफल हो गया परन्तु मंगे की पत्नी जिदद् करके स्थान पर ही बैठ गई और कहने लगी, "मैं तब तक यहाँ से नहीं हिलुंगी, जब तक आप मुझे ये नहीं कह दोगे कि जाओ अब तुम्हारा पति सुरक्षित है और वह जीयेगा।"

मुझे उसके पति की हालत, आपे से बाहर लग रही थी। खराद मशीन से उड़ कर आये उस हिस्से के साईज और वज़न को देखते हुए, मैं भी उस चोट का अन्द़ाजा लगा सकता था। अतः मैंने गुरूजी से सम्पर्क किया और उनसे कृपा की प्रार्थना की। गुरूजी बोले, "राज्जे, 'हाँ' कर दे...., बाकी मैं देख लूंगा।" जब मैंने उसे 'हाँ' कहा तो वह सन्तुष्ट होकर एक पूरी उम्मीद के साथ अस्पताल चली गई।

....और चमत्कार हो गया।

एक असम्भव कार्य के लिए गुरूजी की 'हाँ', काम कर गई। डॉक्टर भी आश्चर्य चकित हो गये और बोले, "मरीज़ अब खतरे से बाहर है। वह हमारे इलाज से अधिक किसी चमत्कारिक शक्ति से ठीक हो रहा है।" वे आगे बोले,"कुछ घन्टे पहले हम ना-उम्मीद हो चुके थे। मरीज़ पर जरुर किसी अतिरिक्त शक्ति ने प्रयोग किया है, जो हमारी समझ से बाहर है।"

लेकिन वहाँ पर तीन लोग ऐसे थे जो समझ सकते थे और वे थे, मंगे की माँ, मंगे की पत्नी और मैं।

यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था।
गुरूजी के वे शब्द, "राज्जे 'हाँ' कह दे...., बाकी मैं देख लूंगा...." मेरे दिमाग में बार-बार घूम रहे थे और मैं आत्म-विभोर था। अपने 'सुपर मास्टर' की भक्ति और प्रेम में अपनी सुध-बुध खो बैठा....।।

बार बार प्रणाम है गुरूदेव...।

कुछ दिन अस्पताल में रहने के बाद मंगा अपने घर लौट आया। अब वह ह्यूस्टन, अमेरिका में है और वहाँ अपनी पत्नी, चार बच्चों और अपने दो पोता पोती के साथ अपनी शान्ति भरी जिन्दगी जी रहा है। उसने वहाँ पर एक कमरे में, गुरूजी का स्थान बनाया हुआ है। वहाँ लोग हर महीने बड़े वीरवार के दिन आते हैं, स्थान पर माथा टेक कर अपनी समस्याऐं रखते हैं और सन्तुष्ट होकर जाते हैं। वह उन्हें वहाँ लंगर खिलाता है और जल, लौंग व इलायची वितरित करता है।

जब मैं अमेरिका गया तो ह्यूस्टन भी गया था। मैं उसके घर पर कुछ दिनों तक रुका और गुरूजी के आदेशानुसार, मैंने वहाँ जल बनाया और अधिक मात्रा में लौंग, इलायची व काली मिर्च भी अभिमंत्रित कर, उसे दीं। जिन्हें वह श्रद्धा व विश्वास के साथ, वहाँ आने वाले भक्तों में वितरित करता है।

साष्टाँग प्रणाम है......

हे गुरूदेव....।।

कार में हम तो एक साधारण व्यक्ति की तरह से ही बातें कर रहे थे, लेकिन गुरूजी उस समय भी माँ के साथ हमारे कार्यक्रम के बारे में बातचीत में व्यस्त थे। जिसे उनके साथ बैठे हुए हममें से किसी भी शिष्य ने महसूस नहीं किया। .....लेकिन ऐसा हुआ अवश्य था।

111. *जब गुरूजी चामुण्ड़ा दर्शन के लिये मुझे और अन्य शिष्यों को मैसूर लेकर गये।*

गुरूजी मुझे तथा कुछ अन्य शिष्यों को, कुछ दिनों के लिये बैंगलौर ले गये। कुछ दिन बाद किसी शिष्य ने गुरूजी से मैसूर के चामुण्ड़ा मंदिर के दर्शन करने की प्रार्थना की और गुरूजी ने भी तुरन्त अपनी स्वीकृति दे दी।

एक दिन हम सब कार से मैसूर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर हमने किसी से पूछा कि उक्त चामुण्ड़ा मंदिर कहाँ पर स्थित है? एक गाईड़ बोला कि उस मंदिर के खुलने तथा बन्द होने का एक निश्चित समय है। वह आगे बोला कि मंदिर बन्द होने

में केवल पाँच मिनट का समय ही शेष बचा है जबकि अभी यहाँ से वहाँ तक जाने का रास्ता करीब आधे घण्टे का है। इसलिये आज दर्शन करने की कोशिश करना बेकार है अतः अच्छा होगा कि आप लोग कल आयें। गुरूजी ने हमें आदेश दिया कि उस गाईड़ की बातों पर ध्यान मत दो और गाड़ी चलाओ और हमने ऐसा ही किया।

रास्ते में चलते हुए हम एक और जगह रुके और किसी राहग़ीर से, उचित रास्ते के मार्गदर्शन के लिये पूछा। लेकिन उसने भी हमें वैसा ही बताया जैसा कि पहले गाईड़ ने बताया था कि समय समाप्त हो चुका है और दर्शन होने की कोई सम्भावना नहीं है। क्योंकि पुजारियों ने मंदिर के द्वार बन्द कर दिये होंगे।

यह सुनकर गुरूजी बोले :

“मंदिर बन्द कैसे हो सकता है जब मेरे शिष्य, माँ चामुण्ड़ा के दर्शन के लिये जा रहे है...?” चलो गाड़ी आगे बढ़ाओ...।

हम चुपचाप मंदिर की ओर गाड़ी चलाते रहे और आख़िर मंदिर की पार्किंग में पहुँच गये।

गुरूजी स्वयं् गाड़ी में बैठे रहे और हम सबको आदेश दिया कि जाओ और श्रद्धा पूर्वक दर्शन करके आओ।

हम जैसे ही अन्दर पहुँचे तो देखा, कि कुछ भक्त वहाँ पहले से ही मौजूद थे और पुजारी उन्हें शास्त्रों के अनुसार पूजा-अर्चना करवाने में व्यस्त था। वहाँ पूर्णतयाः शान्ति का वातावरण था। उस पुजारी को भी कोई जल्दी नहीं लग

रही थी। हम सब ने बड़े आराम से पूजा तथा प्रार्थना की और माँ चामुण्डा के दर्शन करके वापिस गुरूजी के पास कार में आ गये। गुरूजी ने हम सबको देखा और मुस्कुरा कर आशीर्वाद दिया। निहाल हो गये हम सब।

एक दूसरा व्यक्ति, जो कि पार्किंग में पहले से ही खड़ा था, बड़ा उत्साहित होकर हमारे पास आया और बोला, "पिछले बीस सालों में मैंने आज पहली बार देखा है कि मंदिर दोपहर दो बजे के बाद भी खुला हुआ है।" ऐसा लगता है कि परम श्रेष्ठा माँ चामुण्डा आज स्वयं, आप लोगों का इन्तजार कर रही थी।

आश्चर्य.............

क्या यह मुमकिन है?

गुरूजी ने मंदिर में पहुँचने से पहले, कार में कहा था। उनके शब्द थे कि "मंदिर बन्द कैसे हो सकता है जब कि मेरे शिष्य माँ चामुण्डा के दर्शन के लिये आ रहे हैं।" मतलब, गुरूजी और माँ ने सबको पहले से ही बता दिया था और वहाँ पर स्वयं माँ, हम सब को आशीर्वाद देने के लिए हमारा इन्तजार कर रहीं थीं......!!

मैं इस विषय स्तर पर और विस्तार से तो नहीं कह सकता, जहाँ कार में बैठे हुए गुरु जी और माँ आपस में वार्तालाप करते रहे होंगे। किन्तु कार में हम तो एक साधारण व्यक्ति की तरह से ही बातें कर रहे थे परन्तु गुरूजी उस समय भी माँ के साथ हमारे कार्यक्रम के बारे में बातचीत में व्यस्त थे। जिसे उनके साथ बैठे हुए हममें से किसी भी शिष्य ने महसूस नहीं किया। .....लेकिन ऐसा हुआ अवश्य था।

आप के समक्ष या साथ होने पर मेरी बुद्धि शून्य हो जाती है। अपनी बुद्धि के अनुसार मैने जो समझा, लिख दिया।

मैं यहाँ कहना चाहूँगा कि ...हे महागुरुदेव, आप जहाँ खड़े हो जाते है वहाँ आपसे पहले और आपके पीछे, सभी आपके आधीन हो जाते है। आपके समक्ष हम सब नत्-मस्तक हैं।

गुरुजी, मेरी आपसे प्रार्थना है कि जो जिज्ञासु हैं और गुरुभक्ति के प्रति, जिनकी रुचि हैं-- आप उन्हें इतनी ज्ञानशक्ति दें ताकि उन्हें आपकी असीम कृपा से वह भक्ति प्राप्त हो सके।

हे...देव-आदि-देव..!

गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, "जा आज से तेरी दर्द्रे खत्म, अब कभी गुरु को लालच मत देना" और उसके बाद उसे फिर कभी दर्द्र नहीं हुई। वह बिलकुल ठीक हो गई।

112. *जब एक महिला दस साल पहले गुरुजी के सामने की गई गलती की माफी माँगने, मेरे पास आई।*

<u>गुड़गाँव स्थान पर</u> मैं सेवा कर रहा था। वहाँ पर बहुत से लोग थे। सबसे अन्त में एक महिला अपनी एक विचित्र सी समस्या लेकर, मेरे पास आई और कहने लगी कि वह अपनी टाँगों के जोड़ों के दर्द्र से पिछले दस साल से परेशान है। हमेशा, जब वह स्थान पर आती है तो उसकी दर्द्र गायब हो जाती है और फिर जैसे ही घर जाने के लिए सड़क पार करती है तो दर्द्र दुबारा वापिस आ जाती है। वह बोली, यह गुरुजी जानते हैं।

मुझे ठीक से यह समझ नहीं आया और मैंने उससे कहा कि इसके बारे में मुझे विस्तार से बताए।

उसने बताना शुरु किया, "कुछ वर्षों पहले मैं ईरान में थी। इंडिया आने पर गुरूजी के दर्शन करने के लिये मैं स्थान पर आई। गुरूजी को प्रणाम करने के बाद मैंने पूजनीय गुरूजी को एक बादामगिरि का डिब्बा भेंट किया। उन्होंने वह अपने माथे से लगाया और मुझसे कहा कि वह लाईन में खड़े हुए लोगों में बाँट दे।"

उसने आगे बताया कि उसने गुरूजी से कहा, "गुरूजी यह तो मैं बच्चों के लिये लाई हूँ।" गुरूजी बोले, "हाँ बेटा, जाओ और बाहर जो मेरे बच्चे लाईन में मुझे मिलने का इन्तजार कर रहे हैं, उनमें बाँट दो।" मैं गुरूजी से दुबारा बोली, "नहीं गुरूजी, यह तो मैं रेनू, बब्बा आदि के लिये लेकर आई हूँ।"

गुरूजी को मेरा यह व्यवहार पंसद नहीं आया और वह बोले, "रेनू व बब्बे को यदि बादामगिरि की जरुरत होगी तो मैं उन्हें स्वयं् बाज़ार से ख़रीद कर ला दूँगा। तुम जाओ और यह प्रसाद बाहर बाँट दो।"

मैंने गुरूजी से दुबारा रेनू व बब्बे को देने के लिये जिद्द की। अब गुरूजी का रुप बदल गया। वे कहने लगे, "तुम यहाँ से कुछ लेने आई हो या देने...? तुम्हारे व्यवहार से तो ऐसा लग रहा है कि जैसे तुम मुझे कुछ देने आई हो।" वह आगे बोले, "तुम अपने गुरू को संसारिक वस्तुओं का प्रलोभन देने की कोशिश कर रही हो।" फिर उन्होंने क्रोध में आकर कहा, "अब तुम यहाँ से जाओ और जब तक तुम स्थान से दूर रहोगी, तुम्हारी टाँगों के जोड़ों में दर्द्र रहेगा।"

इसी वज़ह से इतने वर्षों से मैं इस दद्र से परेशान हूँ। लेकिन जैसे ही मैं स्थान के अन्दर आती हूँ, मेरा दद्र गायब हो जाता है।

तब मुझे उसकी बीमारी का कारण समझ में आया और मैंने महसूस किया कि **कितना भाग्यशाली हूँ मैं, जिसके ऐसे शक्तिशाली गुरूजी हैं और मेरे ऊपर उनकी कितनी अपार कृपा है। जिसके बारे में ना कोई सोच सकता है और ना अन्दाजा ही लगा सकता है।**

उसने आगे विनयपूर्वक प्रार्थना करते हुए कहा, "मेरी आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि कृपया आप मुझे गुरूजी से माफी दिला दो। गुरूजी के कई शिष्यों ने मुझे कई बार ठीक करने की कोशिश की है। लेकिन मेरी समस्या ज्यों कि त्यों है। मुझे अपनी गलती का पूर्ण अहसास हो चुका है।" उसने पुनः प्रार्थना करते हुए मुझसे पूछा, "क्या यह मुमकिन है कि आप मुझे गुरूजी से माफी दिला दो....? क्योंकि अब वैसे भी मुझे सज़ा भुगतते हुए दस साल बीत चुके है।"

तभी मैं वहाँ से उठा और असाधारण उत्साह के साथ सीधा गुरूजी के पास चला गया और उनसे प्रार्थना की, "गुरूजी आज मेरा एक काम कर दो।" गुरूजी बहुत प्रसन्न मुद्रा में बैठे थे, बोले, "माँग क्या माँगता है...?" मैंने कहा, "उस औरत को माफ कर दो, जिसने आपको बादाम की गिरियाँ दी थी दस साल पहले।" गुरूजी मान गये और कहने लगे, "ठीक है..., जा बुला उसे।"

मैं गया और उसे सर्व-शक्तिमान गुरूजी के पास ले आया। गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, "जा आज से

तेरी दर्द्रे खत्म, अब कभी गुरू को लालच मत देना।" और उसके बाद उसे फिर कभी दर्द नहीं हुई। वह बिलकुल ठीक हो गई। ....और

अब मेरी बारी थी मैंने भी इसे ध्यान में रखते हुए, मनन किया कि :

- गुरूजी द्वारा कहे गये शब्द, भगवान का कानून है। दस साल पहले उन्होंने शब्द कहे थे और वह दस सालों तक पीड़ा में रही। जरा सोचो......
- अब दस साल बाद उन्होंने फिर कुछ शब्द कहे और वह आजीवन पीड़ामुक्त हो गई। यह भी सोचकर देखो.......

गुरूजी आप और भगवान दो नहीं अपितु एक ही हैं।

मुझ पर भी अपनी कृपा बनाये रखना
.....साहेब जी।।

जैसे ही मैंने गुरूजी के पवित्र चरणों में माथा टेका तो अचानक मैंने सुना, "देखो, अब एक शिष्य भी अपने गुरू को भी आशीर्वाद देने लगा था..." यह आवाज गुरूजी की थी।

113. *जब गुरूजी ने मुझे गाली देकर छेड़ते हुए कहा "YOU IDIOT" अब तू गुरू को भी आशीर्वाद देगा?*

पंजाबी बाग में सेवा का दिन था। बहुत से लोग एकत्र हुए थे और वह एक-एक करके आशीर्वाद लेने के लिये मेरे पास आ रहे थे। लोगों को इस तरह आशीर्वाद लेने के लिए हमेशा, घन्टों इन्तजार करना पड़ता था।

मैं पूर्ण एकाग्रता के साथ, अपनी सेवाकार्य में लीन था। जैसे कि अपनी बारी से मेरे पास आये व्यक्ति की तरफ देखना और उसे आशीर्वाद देने के लिये उसके सिर पर हाथ रखना आदि।

इसी तरह दो लोग मेरे पास आये, लेकिन उन्होंने मेरे पैर नहीं छुए। जैसा और लोग कर रहे थे। (पहले कुछ सालों तक अक़्सर लोग ऐसा ही करते थे।)

मैंने इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और इसे लापरवाही से लेते हुए अपना हाथ ऊपर उठाया और आशीर्वाद देने के लिये उनमे से एक के सिर पर रखने लगा तो उसने मुझे अपने सिर पर हाथ नहीं रखने दिया और अचानक वह तेज़ी से पीछे हो गया तथा उसने मेरा हाथ धीरे से पीछे कर दिया। मैंने इस बात पर भी कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया। वे बिना मुझसे कुछ कहे, वहाँ से चले गये और इसी तरह शाम तक सेवा चलती रही।

<u>अगले दिन</u>

मैं गुरूजी के दर्शन के लिये गुड़गाँव गया। जैसे ही मैंने गुरूजी के पवित्र चरणों में माथा टेका तो अचानक मैंने सुना, "क्यों राज्जे, अब अपने गुरू को भी आशीर्वाद देगा....?" यह आवाज़ गुरूजी की थी।

मैंने ऊपर की तरफ देखा, तो गुरूजी ताना देने की मुद्रा में मुस्कुरा रहे थे और दूसरे लोगों से बात करते हुए कह रहे थे, "देखो अब एक शिष्य भी अपने गुरू को आशीर्वाद देने लगा था।"

मुझे यह समझ नहीं आया और मैंने गुरूजी से पूछा कि उनके ऐसा कहने के पीछे क्या मतलब है....? क्योंकि ऐसा करने के बारे में तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था।

गुरूजी बोले, "मैं कल आया था और तेरे सामने बैठा था। तुमने अपना हाथ आगे किया तो मैं पीछे हट गया।"

"...हे भगवान, गुरूजी, वो आप थे...??"

मैंने सोचा तो था कि ये कौन लोग हैं जो आशीर्वाद लेने से पीछे हट गये....!!" मैंने दुबारा पूछा, "साहेब जी, दूसरा कौन था आपके साथ...?" गुरूजी ने बताया, "वह तुम्हारा बड़ा भाई औघड़ था, उसी ने बनाया था तुम्हारे पास जाने का प्रोग्राम। कहता था ...चल गुरू, देखें, क्या कर रहा है तुम्हारा चेला...?"

यह गुरूजी का ही तरीका था कि वह अपने आपको छुपा कर अपने शिष्यों के पास जाते थे, जिसका किसी को बिलकुल भी पता नहीं चलता था और न ही कोई उन्हें पहचान पाता था।

अब मैं क्या करुं...?
कैसे मैं उन परम-श्रेष्ठ गुरूजी की महिमा का
गुणगान करुं, जो स्वयं् भगवान हैं और
मनुष्यों की तरह, सब कार्य करते हैं।

जिस दिन लंगर शुरु होता था, उस दिन बरसात जरुर आती थी और जिस दिन लंगर समाप्त होता था, उस दिन भी बरसात आती थी। यह गुरूजी का नियम था।

114. जब गुरूजी ने 'महाशिवरात्रि' और 'गुरुपूर्णिमा' पर आने वाले भक्तजनों के लिए लंगर सेवा शुरु की।

सत्तर के दशक के अन्त में गुरूजी ने गुड़गाँव स्थान पर लंगर सेवा शुरु की।

बहुत से लोग, जो दूर दराज़ के गाँव अथवा शहरों में रहते थे, जिन्हें गुरूजी ने ठीक किया या बचाया था, उन लोगों को गुरूजी की अनुपस्थिति खलती थी। किन्तु गुरूजी के दर्शन करने हेतु, उनका हर उत्सव पर गुड़गाँव आना भी सम्भव नहीं हो पाता था। इसलिये वे, 'गुरु-पूर्णिमा' और 'महा-शिवरात्रि' पर आते, गुरूजी से मिलते और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते थे।

धीरे-धीरे श्रधालुओं की संख्या सैंकड़ों से बढ़कर हज़ारों में पहुँच गयी। जो लोग बाहर से आते थे, वे उत्सव से कुछ दिन पहले ही आ जाते थे।

उनमे से कुछ तो एक से दो दिन तक रुकते थे लेकिन कुछ अथक प्रेमी दो से लेकर पन्द्रह दिनों तक रहकर आनन्द लेते थे। उनकी बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए गुरूजी ने उनके लिये स-ुव्यवस्थित ढ़ंग से खाने और गुड़गाँव में रहने का इन्तज़ाम करने का निर्णय लिया।

गुरूजी ने कुछ लोगों को एकत्र किया और उन्हें सामर्थ्य तथा ज़िम्मेदारी दी कि वे इस ज़रुरी काम के इन्तज़ाम को संभालें। इसके लिये गुरूजी ने कुछ नवयुवकों जिनमें बिट्टू, पप्पू सरदार, निक्कू तथा गग्गु शामिल थे, को इसकी ज़िम्मेदारी सौंपी। उन्होंने गुरूजी द्वारा दी गई इस जिम्मेदारी को पूर्ण रुप से निभाया और पिछले कई सालों से आज भी निभा रहे हैं।

गुरूजी ने आश्चर्यजनक ढ़ंग से लंगर हेतु सामान जिसमें गेंहू का आटा, चावल, दालें तथा अन्य खाद्य सामग्री एकत्र करने की योजना बनायी। इसके लिये उन्होंने शिष्यों के साथ एक गुप्त मीटिंग रखी तथा लंगर के कार्यक्रम के बारे में बात की।

उन्होंने, कुछ शिष्यों को चुना और उन्हें आदेश दिया कि वे अपनी कमाई में से कुछ हिस्सा लंगर में दें ताकि आने वाले भक्तों के लिये मुफ़्त लंगर सेवा चलाई जा सके।

वे लोग जिन्हें गुरूजी ने इसमें अंशदान की भागीदारी सौंपी

थी, वे सभी भी बहुत उत्साहित थे। कोई भी इस शुभ कार्य में शामिल होने में देर नहीं करना चाहता था। यदि कोई इस पूर्व निधारित उत्सव के कार्य में देरी करता था तो गुरूजी उसे गुस्सा करते और चेतावनी देते कि दुबारा यदि यह गलती की तो तुम्हारा नाम इस लिस्ट से निकाल दिया जायेगा।

इसी प्रकार, लोगों के लिये ठहरने की व्यवस्था का इन्तज़ाम किया गया। जिसे गुरूजी द्वारा निर्मित चार सदस्यों के समूह (Group) ने उचित ढ़ंग से किया। इसके लिये उन्होंने धर्मशालायें, कम्यूनिटी हॉल तथा कॉलोनी के लोगों की भी मदद् ली। यहाँ तक कि उन्होंने अपने घर के दरवाजे भी, बाहर से आये लोगों के लिये खोल दिये और अपने आपको इसके लिये धन्य समझा। इसके लिये इस टीम ने करीब दर्ज़न भर अन्य सेवादार भी नियुक्त किये। जो बिट्टू तथा बाकी तीनों सेवादारों के निर्देशानुसार कार्य करते थे। इस तरह सारा कार्य सु-व्यवस्थित ढ़ंग से चल रहा था।

गुरूजी ने एक तीसरी टीम का गठन किया, जिसे उन्होंने लंगर बनाने का कार्यभार सम्भालने का अवसर प्रदान किया। जिसके लिये उन्होंने जालन्धर के मामाजी का चयन किया और उनका साथ देने के लिये डॉक्टर शंकर नारायण तथा बेली राम तक्खी को चुना। इन लोगों ने करीब दो सौ सेवादारों की टीम बनाई जिसमे अधिकतर पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश के भक्तजन थे। सभी सेवादार विभिन्न खण्ड़ों में बटे हुए थे लेकिन पूरी श्रद्धा के साथ अपनी सेवा कर रहे थे। इस कारण गुरूजी बहुत प्रसन्न थे।

गुरूजी रोज़ाना जब अपने कमरे (Chamber) में जाते, जो

उन्होंने स्थान के पीछे शामियाना लगा कर बनाया हुआ था तो सभी सेवादार उनके अभिवादन के लिये मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर खड़े हो जाते थे। गुरूजी के वापिस जाने के बाद उनकी सेवा करने की गति और बढ़ जाती और उनके आशीर्वाद से, वे सब अपने आपको दुबारा उर्जा से तरोताज़ा महसूस करते। उनका सेवाकाल रोज़ाना कम से कम अट्ठारह से बीस घण्टे का होता था। जो निम्न प्रकार से बंटा हुआ था।

- आटा गूंधना।
- गूंधे हुए आटे के पेड़े बनाना।
- आटे के पेड़े से पूरी बेलना।
- पूरी को घी में डीप फ्राई करना अर्थात तलना।
- बनी हुई पूरियों को बाँटने के लिये, एक बड़े बक्से में सम्भालकर रखना।
- सब्जियों को धोना तथा काटना।
- सब्जियों को बनाना।
- दालों को साफ करना तथा धोना।
- बड़े बर्तनों में दाल बनाना।
- दही रायता बनाना।
- पंडाल में दरी कारपेट बिछाना।
- लंगर परोसने के लिये पंक्तियाँ लगवाना।
- लंगर परोसने के लिये पत्तल डोने देना।
- जूठे पत्तल एकत्र करना। तथा
- चाय व पानी आदि की व्यवस्था करना।

सेवा करने का यह तरीका इतना अच्छा था कि इसमें करीब 1500 लोग, एक साथ लंगर खा सकते थे।

एक अद्‌भुत इतिहास रचा गया। गुरूजी ने इसे सर्वोच्च

प्राथमिकता तथा व्यक्तिगत रुचि लेते हुए, लंगर का भोजन-पत्र (Menu) तैयार किया। गुरूजी ने लंगर बनाने की विधि से सम्बन्धित, सारी बातें मामा जी से की और कहा कि लंगर ऐसे बनाया जाये जैसे अति-विशिष्ट व्यक्तियों अर्थात (VIP's) के लिये बनाया गया हो।

अनगिनत लोगों के लिये रोज़ाना अलग दालें व सब्जियाँ बनाई जाती थी। स्वयं गुरूजी को भी बूंदी का रायता बहुत पंसद था। गुरूजी ने मामाजी को विशेष आदेश दिया कि वह चने की दाल के बेसन से ही पिकोड़ी बनायें और उसे दही में मिला कर रायता बनाया जाये। यदि उस दिन सोमवार का दिन आ जाता तो दही में उबले हुए आलू मिला कर रायता बनाया जाता था।

दिल्ली से अरूण कुमार जो गुरूजी का भक्त है उसने मुझसे कहा, "मैं गुरूजी के लंगर खिलाने के अंदाज को याद कर के कई बार रो चुका हूँ।"

लेकिन गुरूजी स्वयं लंगर में से नहीं खाते थे। वे तथा माता जी, सिर्फ मातारानी जी के हाथ से बनी खिचड़ी ही खाते थे जो वे अपने घर की रसोई से बना कर लाती थी। मातारानी जी हमेशा गुरूजी के खाने के बाद ही खाना खाती थी।

सन् 1990 में, एक दिन में करीब 50,000 (पचास हजार) लोगों ने लंगर किया और उसके बाद महा-शिवरात्रि तथा गुरू-पूर्णिमा के दिनों में करीब पन्द्रह दिनों तक लगातार लंगर चलता रहा।

जिस दिन लंगर शुरु होता था, उस दिन बरसात जरुर आती

थी और जिस दिन लंगर समाप्त होता था, उस दिन भी बरसात आती थी। यह गुरुजी का नियम था। एक बार मैंने गुरुजी से पूछा, "गुरुजी अगर बरसात नहीं आई तो क्या लंगर अनिश्चित दिनों तक ऐसे ही चलता रहेगा...?" तो गुरुजी ने कहा, "बेटा, यह कैसे हो सकता है.....?

....मैं गुरु हूँ बेटा।"

और उसके बाद भी...

सभी सालों में लंगर का प्रारम्भ और अन्त बरसात के साथ ही हुआ। इसमे कोई बदलाव नहीं आया।

आज भी लंगर सीधे माताजी के नियन्त्रण में चलता है। हजारों लोग आज भी लंगर करते हैं लेकिन दिन कम कर दिये गये हैं। पहले पन्द्रह से सोलह दिनों तक जो सेवा होती थी, आज पाँच से छः दिन ही लंगर सेवा होती है।

बेलीराम जी अपना शरीर त्याग कर गुरुजी के चरणों में चले गये हैं लेकिन मामाजी तथा डॉक्टर शंकर नारायण जी, आज भी अपनी टीम की अगुवाई करते हुए लंगर सेवा करते हैं। उन्होंने आज अपनी टीम में कुछ नये सेवादार जैसे देवराज, काकू और पप्पू पहाड़िया आदि को अपने साथ शामिल कर लिया है तथा लंगर सेवा उसी सुन्दर तरीके से आज भी जारी है। माताजी लंगर के लिये सामान और उसे बनवाने का कार्य स्वयं देखती हैं।

सन् 1990 के बाद शिवरात्रि और गुरुपूर्णिमा के अलावा दो अतिरिक्त दिन भी, लंगर सेवा के लिए जोड़ दिये गये हैं। यह सेवा नीलकण्ठ धाम, जो नई दिल्ली में स्थित है, वहाँ पर होती है।

नीलकण्ठ धाम

गुरूजी का समाधि स्थल है। यह आध्यात्मिक स्थान, बहुत महत्वपूर्ण है। इस स्थान पर गुरूजी के शरीर का अग्नि संस्कार किया गया था। यहाँ पर हजारों भक्तजन आते हैं और दो विशेष उत्सव जिन्हें हम 'निर्वाण दिवस' और 'बंसत पंचमी' के रुप में मनाते हैं, गुरू भक्त यहाँ आकर समाधि स्थल पर पुष्प अपर्ण करते हैं। इन महत्वपूर्ण दिनों के अलावा भी, सैकड़ो भक्तजन रोज़ाना आकर यहाँ माथा टेकते हैं और गुरूजी से अपनी इच्छाऐं पूर्ण करने की प्रार्थना करते हैं। यह स्थान पॉवर सब स्टेशन के पीछे, नजफ़गढ़ रोड पर साँई बाबा के मंदिर से थोड़ा सा आगे है तथा राजौरी गॉर्डन से करीब दस किलोमीटर की दूरी पर है।

निर्वाण दिवस

इस दिन हलवा और तले हुए काले चने का प्रसाद जो सुबह 11 बजे से शुरु होकर शाम के छः बजे तक आये भक्तजनों में बाँटा जाता है। इस दिन का पूरा कार्य स्वयं् मातारानी जी सम्भालती हैं।

बंसत पंचमी

इस दिन पूर्ण लंगर सेवा होती है जो सुबह 11 बजे से शुरु होकर शाम के छः बजे तक होती है। स्वयं् मातारानी जी के पूर्ण नियन्त्रण में यह सेवा होती है। इसमें पीले चावल का मीठा पुलाव अति-विशिष्ट है। इसके अलावा और दूसरे व्यंजन भी बनाये जाते हैं।

समाधि स्थल

इस स्थान पर 9' x 9' का सफेद मारबल से बना, गुरूजी

का समाधि स्थल है। यह उस स्थान पर बनाया गया है, जहाँ गुरुजी के पवित्र शरीर का अग्नि संस्कार किया गया था। इसे समाधि कहते हैं और इस पूरे परांगण को नीलकण्ठ धाम के नाम से जाना जाता है।

एक सफेद मार्बल की गुरुजी की मूर्ति के अलावा यहाँ शिव मन्दिर भी है। एक बहुत बड़ा हॉल कमरा जिसमें हजारों लोग बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं, इसी धाम का एक हिस्सा है। हजारों भक्तजन यहाँ पुष्प अर्पण करते हैं और माथा टेकते हैं और अपनी इच्छाऐं गुरुजी के समक्ष रखते हैं। उनकी सभी इच्छाऐं और जरुरतें पूर्ण होती हैं।

यह भी एक चमत्कार ही है कि लोग जब समाधि या गुरुजी की मूर्ति के सामने मन ही मन में अपनी कोई जरुरत या इच्छा रखते हैं तो गुरुजी उनकी इच्छा पूर्ण कर देते है। भक्तजन सुबह व शाम रोज़ाना प्रार्थना के लिए यहाँ आते हैं। यहाँ शान्ति और आध्यात्म का निवास है। यहाँ गुरुजी की दिव्य-आत्मा निवास करती है। ऐसा हजारों गुरु भक्त, जो श्रद्धा और विश्वास के साथ अपने अदृश्य भगवान 'गुरुजी' के दर्शन करने आते हैं और अपना अनुभव सुनाते हैं। यह उनका व्यक्तिगत अनुभव है।

मैं पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि वे भी इस महा पवित्र और आध्यात्मिक स्थल पर जायें और गुरुजी की उपस्थिति का अनुभव करें।

गुरूजी बोले : "राज्जे, उस समय का इन्तजार कर, जब वह हाथ भर भर कर नमक दाल के पतीलों में डाल कर दाल बनायेगी।"

115. *जब माताजी ने एक पतीला दाल बनाई और उसमें एक बड़ा चम्मच नमक डाला।*

सत्तर के दशक के अन्त की बात है। जब मैं रविवार के दिन गुरूजी का आशीर्वाद लेने गुडगाँव जाता था और शाम तक उस नये अविश्वस्नीय माहौल में, वहाँ रहता था।

गुरूजी स्थान के कमरे में बैठते थे और लोग आते रहते थे। एक..., दो..... दस.... सौ.... और... उससे भी ज्यादा। गुरूजी हमेशा आनन्दित मुद्रा में बैठते थे और बड़े आराम से लोगों के दुः ख दद्र, बुख़ार और दूसरी परेशानियाँ, फिर चाहे वे शारीरिक हों या मानसिक ....और फिर चाहे आध्यात्मिक

क्यों न हों, उनका निवारण करते थे। उन्हें ऐसा करते देख, मैं इतना मग्न हो जाता था कि मेरे दिल और दिमाग में उस दिन के लिए और कोई काम नहीं आता था। दिन की समाप्ति पर जब सेवा सम्पन्न होती थी तब गुरुजी हमें वापिस घर जाने की अनुमति देते थे और साथ ही यह आदेश भी देते थे कि जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके मंत्र का जाप करो।

हमेशा ऐसा ही होता था। जब मैं सुबह घर से आता था तो मालूम नहीं होता था कि मैं कब वापिस आऊँगा। इसलिए खाना मैं अपने साथ अपने घर से ले जाता था। जो दोपहर को मैं खा लेता था।

एक बार जब मैं कार में बैठा खाना खा रहा था कि अचानक गुरुजी ने मुझे देखा और आदेश दिया कि तुम अपने लिए खाना, घर से साथ नहीं लाओगे और खाने के लिये माताजी से कहोगे। उसके बाद जब मुझे भूख़ लगती, मैं मातारानी जी को कहता और वह मुझे खाना दे देती जैसे बब्बा, रेनू तथा और बच्चों को देती थी।

एक बार जब मैं खाना खा रहा था तो मेरे एक दूसरे गुरु भाई ने मुझसे पूछा कि यह खाना तुमने कहाँ से लिया है.....!! मेरे बताने पर वह भी माताजी के पास चला गया और माताजी से खाना ले आया। हमें देखा-देखी और लोगों ने भी ऐसा ही करना शुरु कर दिया और वह समय भी आ गया जब दर्जनों लोग माताजी से खाना लेने पहुँचने लगे। सबसे खूबसूरत और दिल छू लेने वाली बात तो यह थी कि मातारानी जी, माँ की तरह बड़े प्यार से हम सब बच्चों को खिलाकर बहुत खुः श होती थीं।

मुझ जैसे साधारण व्यक्ति ने यह सोचा कि गुरूजी व माताजी दोनों काम करते हैं और बब्बा, रेनू, इला, नीटू व छुटकी उनके अपने भी बच्चे हैं। हम अच्छी तरह से जानते थे कि गुरूजी किसी से कुछ भी नहीं लेते थे। इसलिए हमें माताजी से खाना माँगना बड़ा अजीब लगता था। हो सकता है कि इस बारे में वे भी सोचते हों। वे भी गृहस्थी हैं, हमें समझना चाहिए कि जैसा हम कर रहे हैं, ऐसा ना करें।

मैं गुरूजी के पास गया और अपने अलग अंदाज में बोला, "गुरूजी देखो, आज मातारानी जी ने नमक का इतना बड़ा चम्मच, दाल के पतीले में डाला है यानि इतना बड़ा पतीला दाल का बनाया है।"

गुरूजी मेरी आँखों में देखते हुए बोले, "राज्जे, उस समय का इन्तजार कर जब तेरी माँ हाथ भर-भर के नमक, दाल के पतीलों में डाल कर इतनी सारी दाल बनायेगी।"

आज ऐसा ही होता है नमक की थैलियों की थैलियाँ डाल कर खाना बनाया जाता है और हजारों लोग खाना खाते हैं। इस बड़ी मात्रा में जो खाना बनता है उसे लंगर का नाम दिया गया है। जैसा कि आज से तीस साल पहले, गुरूजी ने कहा था।

वह हर दृष्टि से भविष्य को जानते थे।
वे अपने आप में इस तरह से पूर्ण थे
..... जैसे स्वयं भगवान ।।

प्रणाम।

.....हे गुरूदेव, हे घट-घट वासी ईश्वर,
मैं आपको पूर्णरुप से समर्पित हूँ।

*"तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुमने गुरूजी से बात की? जानते हो कौन हैं ये...? साक्षात **'शिव'** हैं। ...सिर्फ माथा टेको, कोई सवाल नहीं।"*

116. हम सब शिष्यों के बीच में से जब गुरूजी को एक महात्मा ने एक नज़र में ही पहचान लिया।

गुरूजी के पास लोग, अक़्सर अपनी समस्याओं तथा दुः ख एवम् पीड़ा निवृति के लिये आते थे। किन्तु कभी-कभी कोई सन्त महात्मा लोग भी गुरूजी से आशीर्वाद लेने आ जाते थे।

मुझे एक अद्‌भुत अनुभव हुआ। वैसे तो ऐसा अक़्सर होता रहता था किन्तु एक बार ऐसा हुआ कि कुछ महात्मा आये और अपने शिष्यों के साथ सीधा गुरूजी के पास चले गये। ऐसा कभी नहीं हुआ कि गुरूजी खड़े हों या फिर शिष्यों के बीच बैठे हों तो उन्होंने शिष्यों के बीच कभी गुरूजी को ढूंढा

हो। मैं नहीं जानता कि इसकी व्याख़्या कैसे करुं। लेकिन ऐसा ही एक उद्हारण सामने आया है जो मैं नीचे लिख रहा हूँ :-

गुड़गाँव स्थान पर सेवा चल रही थी। आये हुए लोगों को गुरूजी आशीर्वाद दे रहे थे और उन्हें अपने शिष्यों के पास लौंग व इलायची बनवाने के लिए भेज रहे थे। संयोगवश ऐसा हुआ कि स्थान के सामने वाला छोटा कमरा खाली था और वहाँ गुरूजी अपने पाँच-छः शिष्यों को कुछ महत्वपूर्ण बातें बता रहे थे। तभी वहाँ महात्माओं का एक समूह जिन्होंने भगवे रंग का लबादा (साफा) औढ़ा हुआ था और आगे-आगे उनके गुरू जो काली वेशभूषा में थे, अन्दर आये।

उनका गुरू हम सब के बीच में से होते हुए सीधा गुरूजी के पास पहुँचा और अपने शिष्यों के साथ गुरूजी को साष्टाँग प्रणाम किया। चौंकाने वाली अन्दर की बात तो यह थी कि कैसे उसने गुरूजी को पहचाना...!! किसी दूसरे को क्यों नहीं। जबकि हम सबने एक जैसा ही लिबास (पेन्ट-कमीज) पहना हुआ था। जो सांसारिक तौर पर एक जैसा लगता था। हो सकता है उसकी अन्तर दृष्टि उसे बता रही थी और या फिर गुरूजी के चेहरे का नूर, उसे अपनी ओर आकर्षित कर रहा था कि वह उनकी तरफ खिंचा हुआ सीधा चला गया। लेकिन यह एक महसूस करने वाली आश्चर्यजनक बात थी कि उन्होंने हममें से किसी की तरफ भी नहीं देखा और केवल गुरूजी की तरफ आनन्दित भाव से देखता रहा।

इसी बीच उसके किसी शिष्य ने गुरूजी से कुछ पूछा। इससे पहले कि गुरूजी उसकी बात का जवाब देते, उसके गुरू ने उसे गुस्से से देखा और डाँटते हुए कहा, “तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुमने इनसे बात की?”

वह आगे बोले, "जानते हो कौन हैं ये.....?

ये साक्षात ***'शिव'*** *हैं।*

और उसने अपना सिर गुरूजी के पवित्र चरणों में झुका दिया और अपने शिष्यों से भी कहा, "सिर्फ माथा टेको, कोई सवाल नहीं।"

वह शिष्य जिसने सवाल पूछा था और उसके साथ-साथ उसके अन्य सभी शिष्य भी घबरा गये और उन सबने भी सिर झुका कर गुरूजी के पवित्र चरणों में प्रणाम किया। कुछ देर वहाँ रुकने के बाद वे उठे और बिना कुछ कहे वहाँ से चले गये। लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे वहाँ से जाना नहीं चाहते थे।

जब मैं अपनी आँखें बन्द कर अपने दिमाग में उस दृश्य की कल्पना करता हूँ और उसे अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ जोड़कर देखता हूँ तो यह मुझे विचारहीन बना देता है। तब मैं यह सोचता हूँ कि इस स्थिति तक पहुँचने के लिए गुरूजी के प्रति पूर्णतयाः समर्पित और शरणागत होना अति आवश्यक है।

आशीर्वाद दीजिए..

हे गुरूदेव....।।

गुरूजी बोले, "बेटा, आज मैं 'शिव-शक्ति' के रुप में हूँ। मेरा बायाँ शरीर शक्ति का है और दाहिना शिव का।"

117. जब मैं गुरूजी के कमरे में उनके चरणों की सेवा कर रहा था, तो महसूस हुआ कि उनकी बाँयी टाँग अति नरम थी।

मेरी जिन्दगी का यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था जो 101% मेरी समझ से परे था।

वास्तव में हमारे धर्मग्रन्थ, जैसे **'शिवपुराण'** का अध्ययन करें तो उसमें इस तरह का वृतान्त आता है जिसमें भगवान शिव देवऋषि नारद को शिव व शक्ति के एक रुप होने के बारे में बताते हैं। सिर्फ नारद जी के अलावा और किसी दूसरे को इस दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो, मैं कह नहीं सकता...।

गुरुजी अपने बिस्तर पर लेटे थे और मैंने सेवा शुरु कर दी। मेरे कहने का मतलब है कि मैं उनकी टाँगें दबाने लगा। इस तरह की विशेष सेवा करने का सौभाग्य, मुझे पिछले कई सालों में कई बार मिल चुका था। जब मैं उनकी टाँगें दबा रहा था तो अचानक मेरा ध्यान गया कि उनकी दाँयी टाँग तो चट्टान के समान सख़्त है लेकिन बाँयी टाँग बहुत ही मुलायम है। मैंने अपने सिर को झटक कर फिर दुबारा महसूस किया तो देखा कि दोनों टाँगें गुरुजी की ही हैं। लेकिन दाँयीं और बाँयी टाँग में इतना अधिक अन्तर कैसे हो सकता है......!!

मुझे अपने अन्दर से इसका जवाब नहीं मिला तो मैंने गुरुजी से ही पूछा, "गुरुजी ये मैं क्या देख रहा हूँ कि आपकी दाँयीं टाँग तो चट्टान की तरह सख़्त है और बाँयी टाँग मक्खन के समान बिलकुल नरम है। ऐसा कैसे हो सकता है गुरुजी...? पहले तो कभी ऐसा नहीं देखा।" गुरुजी मेरी तरफ मुड़े और उन्होंने मुझे कुछ संजीदा होकर देखा।

*गुरुजी बोले, "बेटा, आज मैं **'शिव-शक्ति'** के रुप में हूँ। मेरा बायाँ शरीर शक्ति का है और दाहिना शिव का। ये बाँयी टाँग तेरी माँ की है। इसीलिये नरम है।"*

*मैं अपनी पुरानी यादों में चला गया, जब मैं आध्यात्म सम्बन्धी किताबें पढ़ता था। सोचने लगा कि यह सच्चाई मैंने पहले किताबों में पढ़ी तो थी कि भगवान शिव कुछ समय के लिये अपनी इच्छा से **'शिव-शक्ति'** के रुप में आये थे लेकिन उन्होंने यह रहस्य सिर्फ देवऋषि नारद को उनकी विशेष प्रार्थना पर ही बताया था। मैं यह समझता हूँ कि इस संसार में वह शायद दूसरा व्यक्ति मैं हूँ जो इस सच्चाई के*

रू-ब-रू हो सका। कितना भाग्यशाली और खुः श किस्मत हूँ मैं, कि आज मैंने वास्तव में भगवान ***'शिव'*** *(गुरूजी) के साक्षात रुप में दर्शन कर लिये।*

मैं गुरूदेव से प्रार्थना करता हूँ कि वे पाठकों पर भी कृपा करें। उन्हें इतनी शक्ति दें कि वे इस सच्चाई को समझकर अंतर्ग्रहण कर सकें और आत्म-बोध कर, आपके नजदीक आ सकें।

शत्-शत् प्रणाम है,
गुरूवर.....

हे भगवान...!!

गुरुजी आपका कोई मुकाबला नहीं। आप सब कुछ पहले से ही जानते थे। किस तरह से आपने लॉस-एजेंलिस आने का प्रोग्राम बनाया और किस तरह से सारा प्रबन्ध किया, इसका कोई जवाब नहीं।

118. *जब गुरुजी के साथ लॉस-ऐंजलिस एअरपोर्ट पहुँचे और कृष्ण कुमार हमें लेने आया।*

सैन-फ्रांसिसको एअरपोर्ट पर गुरुजी तथा माताजी के साथ संतलाल जी, बतरा बक्शी, मैं तथा कुछ अन्य गुरुशिष्य थे। हमें लॉस-एजेंलिस के लिये फ़्लाईट लेनी थी। संयोगवश मैं वहाँ रखे हुए एक साईनेज (Signage) *पर होटलों के नाम पढ़ने लगा। गुरुजी ने देख लिया और मुझे बुला कर हल्की डाँट के साथ कहा, "बेटा, गुरु होटलों में नहीं रहते।" मैंने गुरुजी से पूछा, "गुरुजी, तो फिर हम लॉस-एजेंलिस में रहेंगे कहाँ.....!!" सुनकर गुरुजी बस मुस्कुरा दिये, परन्तु कोई जवाब नहीं दिया।*

हमने फ़्लाईट ली और लॉस-एजेंलिस एअरपोर्ट पहुँच गये। हम सब अपना-अपना सामान लेने के लिये बैगेज क्लेम की बैल्ट पर चले गये और अपने सामान के आने का इन्तजार करने लगे। गुरूजी एकदम शान्त थे और उनके चेहरे पर किसी प्रकार के कोई भी कौतूहल के भाव नहीं थे। हमने अपना-अपना सामान लिया और एक साथ एक ही जगह पर इक्कट्ठा कर दिया।

तभी अचानक एक नवयुवक सीधा गुरूजी के पास आया और आकर उसने उनके चरण स्पर्श किये। गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया और हम सभी से यह कह कर परिचित कराया कि हम सब उनके शिष्य हैं। तब उसने माताजी तथा हम सब के भी चरण छुए।

उसके साथ एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति भी आये थे। उसने बिना हमसे कुछ पूछे, हमारा सामान उठाया और आगे-आगे चल दिये। हम एअरपोर्ट के बाहर पहुँचे जहाँ पर दो बड़ी कारें खड़ी थी। लगभग एक घण्टे की सड़क यात्रा करके हम रात्रि करीब़ 10 बजे उसके घर पहुँचे।

वहाँ उसकी पत्नी उमा ने हमारा स्वागत किया। हम सब के लिये खाना टेबल पर लगा हुआ था। गुरूजी ने, माताजी और हम सब को इक्कट्ठा बैठकर खाने का आदेश दिया लेकिन स्वयं् नहीं खाया तथा हमेशा की तरह सिर्फ चाय ही ली।

खाना समाप्त करने के बाद हम लोग बैठक (Living Room) में आकर सौफे पर आराम करने के लिये बैठ गये। इतने में वह नवयुवक वैसे ही मेरे पास बातचीत करने के लिये आकर बैठ गया। बातचीत के दौरान मैंने उससे पूछा कि वह गुड़गाँव कब गया था...? तो उसने जवाब दिया, "नहीं, मैंने गुड़गाँव कभी नहीं देखा।"

कमाल है.........!!

मैंने उससे दुबारा पूछा, "तो फिर आप गुरूजी से पहले कहाँ मिले थे...?" उसने जवाब दिया, "मैंने तो गुरूजी को आज पहली बार देखा है।"

विस्मित होकर मैंने फिर पूछा, "तो फिर तुम एअरपोर्ट पहुँचकर सीधा गुरूजी के पास कैसे आ गये...!! उनके चरण कैसे स्पर्श कर लिये और हम सब को लेकर यहाँ कैसे आ गये...!! ...और तो और, तुम्हारी पत्नी ने भी हम सब के लिये ऐसे खाना टेबल पर सजा कर रखा था, जैसे वह पहले से ही जानती हो कि इतने लोग आ रहे हैं....!!"

उसने बड़ी शान्ति से बताया मेरा नाम कृष्ण कुमार है और मैं यहाँ जज हूँ। उसने आगे बताया कि आज से दस साल पहले जब में भारत गया तो अपने किसी रिश्तेदार के घर रुका था। मुझे नाक से सम्बन्धित कोई बीमारी थी। जिसे अमेरिका का कोई भी डॉक्टर ठीक नहीं कर सका था। जिससे मैं बहुत परेशान था। अतः एक दिन मेरे रिश्तेदार, मुझे अपने गुरू श्री आर.सी. मल्हौत्रा जी के घर, शालीमार बाग ले गये। उन्होंने मुझे पीने के लिये एक गिलास में पानी दिया और कुछ इलायचियाँ दी।

चमत्कार हो गया-----

इलायचियाँ खाने के बाद, मेरी बीमारी हमेशा के लिये चली गयी और उसके बाद वह बीमारी कभी नहीं आयी।

पिछली रात मुझे एक सपना आया कि गुरूजी अपने साथ कुछ और लोगों को लेकर भारत से यहाँ आ रहे हैं और मुझे उन्हें लेने के लिये एअरपोर्ट जाना है।

मैंने अपने ससुर जी से प्रार्थना की, कि वे भी मेरे साथ चलें। क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि सबके लिये एक कार पर्याप्त

नहीं होगी। इसलिये हम दोनों आपको तथा आपका सामान लेने के लिए एअरपोर्ट पहुँचे थे।

मेरे पैर अपने आप मुझे रास्ता दिखा रहे थे और मैं नहीं जानता कि मुझे क्या हुआ था। मैं तो अपने आप ही गुरुजी की तरफ खिंचता चला जा रहा था। सच्चाई तो यह है कि मैं यह सोच रहा था कि मल्होत्रा गुरुजी कुछ लोगों के साथ आ रहे हैं। मुझे तो बाद में पता चला कि मल्होत्रा जी के गुरुजी, अपने शिष्यों के साथ आये हैं।

कितना भाग्यशाली हूँ मैं, कि मुझे आर.सी. मल्होत्रा जी को गुरु बनाने वाले महागुरुजी का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं बहुत खुःशनसीब हूँ। लेकिन सच्चाई यह है कि गुरुजी से आज यह मेरी पहली मुलाकात है।

मैंने अपनी पत्नी को अपने सपने के बारे में बताया तो उसने अपने आप सबके लिये खाना स्वयं् तैयार किया है। मैंने उसे नहीं कहा था।

हे भगवान.........!!

गुरुजी आपका कोई मुकाबला नहीं। आप सब कुछ पहले से ही जानते थे। किस तरह से आपने लॉस-एजेंलिस आने का प्रोग्राम बनाया और किस तरह से सारा प्रबन्ध किया, इसका कोई जवाब नहीं।

कभी-कभी मैं यह सोचता हूँ कि गुरुजी और भगवान का बहुत नज़दीकी का रिश्ता है। या फिर ...वे दो नहीं अपितु एक ही हैं।

बहुत जरुरत है,

हे गुरुदेव..! आपकी बहुत कृपा चाहिए।

प्रणाम जी।

उसने अरुण कुमार के कहने पर जब एक के बाद एक अल्मारी खोली तो आश्चर्य से दंग रह गया.....!! उनमें से एक में भी, दीमक नहीं थी।

119. जब गुरूजी ने कहा कि अरुण कुमार ने ग्राहक को जो फर्नीचर दिया है उसमें दीमक नहीं है।

सन् 1990 की बात है। गुरूजी ने एक अद्‌भुत रचना रची।

अरुण कुमार की कीर्तिनगर में फर्नीचर की फैक्ट्री है। वह पंजाबी बाग में बैठा, स्थान की बैठक और सोने के कमरों (Drawing Room & Bed Rooms) को सुव्यवस्थित करने का कार्य करवा रहा था।

वह मुझसे पलंग (Bed) के डिज़ाईन की बारे में बात कर

रहा था कि तभी अचानक उसे, उसकी फैक्ट्री के फोरमैन का फोन, किसी दूसरे ग्राहक के घर से आया।

फोरमैन ने अरुण कुमार को एक बुरी ख़बर सुनाते हुए कहा कि जो अल्मारियाँ हमारी कम्पनी ने उस ग्राहक को भेजी हैं, उनमें दीमक लगी हुई है। उसका मैनेजर बहुत नाराज़ है तथा उसने अपने मालिक को भी कह दिया है कि हमारे सामान के बिल का भुगतान ना करे। इस ख़बर से अरुण कुमार भी बहुत परेशान हो गया, जो मैंने महसूस किया।

मैं अन्दर गया और कुछ हजार रुपये लाकर अरुण कुमार को दे दिये। जो भुगतान का एक हिस्सा था उस काम का, जो कार्य वह हमारे घर करवा रहा था।

जब मैं उसे पैसे दे रहा था तभी मुझे गुरूजी से एक संदेश मिला कि वह अल्मारियाँ, जो इसने दूसरे ग्राहक को भेजी हैं उनमे दीमक नहीं है। मैंने अरुण कुमार को आदेश दिया कि वह उस ग्राहक के पास जाये और अल्मारियों में दीमक दिखाने के लिये कहे। क्योंकि उसमें अब दीमक नहीं है। मेरे आदेशानुसार अरुण कुमार तुरन्त उस मैनेजर से मिलने चला गया।

वह मैनेजर बहुत गुस्से में लग रहा था। उसने अरुण कुमार के कहने पर जब एक के बाद एक अल्मारी खोली तो आश्चर्य से दंग रह गया.....!! उनमें से एक में भी दीमक नहीं थी। वह ऐसा लग रहा था कि मानों उसे काटो तो खून नहीं।

उसने अपने मालिक को फोन किया और बताया कि सारी अल्मारियाँ ठीक हैं। उसने अरुण कुमार से माफी माँगी

और प्रार्थना की, कि वह मालिक से मिलकर अपने बिल के भुगतान का चैक ले लें। अरुण कुमार ने अपने बिल के पूरे भुगतान का चैक लिया और वापिस आ गया।

वापिस आकर उसने अपने फोरमैन को बुलाया और उससे पूछा-------

- क्या मैनेजर ने तुम्हारी मौजूदगी में सब अल्मारियाँ चैक की थी ? ...और
- क्या उस समय उसमें दीमक मौजूद थी ?

उसने बताया कि वह मैनेजर 100% सही कह रहा था। लेकिन बाद में क्या हुआ ...यह तो भगवान ही जाने!!

हे गुरूदेव...... !!

- आप हम बच्चों की हर समय रक्षा करते हैं जब हम मुश्किल में होते हैं।
- आप यहाँ तक कि दीमकों को भी जाने का आदेश दे देते हैं ताकि हम खुः श और सुरक्षित रह सकें।
- आप हमें, हमारे पैसे के होने वाले नुकसान से भी बचा लेते हैं। जिससे हमारा आपके पवित्र चरणों के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत होता है।

साहेब जी,

........प्रणाम।।

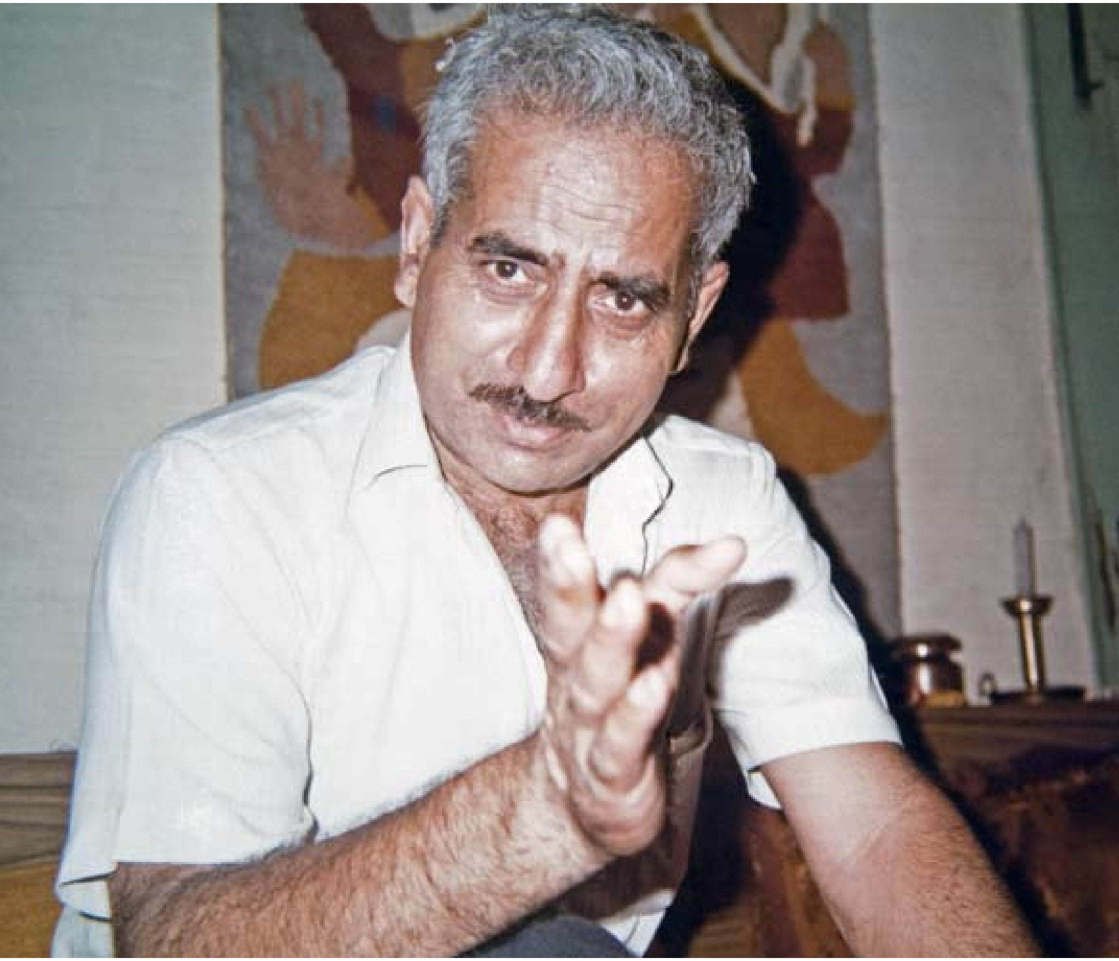

.....वाह, हे गुरूजी....... ....वाह। कमाल है.... बच्चे को हाथों में लिया उसे देखा और कह दिया कि नहीं इसकी किड़नियाँ तो ठीक हैं....!!

120. *जब गुरूजी ने कहा कि उसकी दोनों किड़नियाँ ठीक हैं*

सन् 2005 की बात है। मैं पंजाबी बाग स्थान पर बैठा, सेवा कर रहा था। एक दम्पति अपने दो व्यस्क बेटों को लेकर मेरे पास आये। उन्होंने मुझसे उन्हें आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। मैंने उनसे वैसे ही पूछा कि क्या तुम पहली बार आये हो...? उस महिला ने मुस्कुराते हुए जबाब दिया, "नहीं गुरूजी, हम तो तभी से स्थान पर आते हैं, जब बड़े गुरूजी शरीर में थे।"
उसने अपने एक बेटे की तरफ ईशारा करते हुए कहा, "यह जब पैदा हुआ था तो इसकी दोनों किड़नियाँ खराब थी।" उस समय हमारे किसी दोस्त ने हमें इसे गुरूजी के पास

गुड़गाँव ले जाने की सलाह दी थी। हम उसकी बात से सहमत हो गये क्योंकि डॉक्टरों ने उम्मीद छोड़ दी थी। हमारे पास और कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। इसलिए हम लोग बड़े वीरवार के दिन इसे गुरूजी के पास, गुड़गाँव ले जाने के लिए तैयार हो गये।

हमें अपने जीवन में पहली बार ऐसा अद्भुत नज़ारा वहाँ देखने को मिला। बहुत अधिक संख्या में भीड़ जो करीब दो किलोमीटर लम्बी लाईन में खड़ी, गुरूजी के दर्शन करने पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ शान्ति से, उनके दर्शनों का इन्तजार कर रही थी। मैं भी उन्हीं लोगों की तरह अपने बच्चे को गोद में लिए हुए खड़ी हो, गुरूजी का इन्तजार करने लगी।

अचानक मैंने सुना "....गुरूजी आ गये"
"....गुरूजी आ गये" तो मैं क्या देखती हूँ कि सामने से एक अद्भुत व्यक्तित्व, प्रसन्न मुद्रा में गुरूजी, आगे से लाईन में हमारी तरफ आ रहे हैं। वे सबके सिर पर अपना हाथ रखकर, उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। बहुत लम्बी-लम्बी लाईनें लगी हुई थी और सभी स्त्री-पुरूष चाहे वे बूढ़े हों या जवान, गुरूजी उन्हें एक अनोखी मुस्कान के साथ मिल रहे थे। गोद में उठाये हुए बच्चे भी उनके आशीर्वाद से अछूते नहीं थे। अर्थात वे उन्हें भी आशीर्वाद देना नहीं भूलते थे। वे हर किसी के पास खड़े होते और उनसे बात करते थे। ....और मैं, यह सब बड़ी लगन के साथ देख रही थी।

जिस तरह से वे लोगों से मिल रहे थे और बात कर रहे थे ऐसा लगता था मानो उन्हें हर किसी के बारे में पूर्ण जानकारी हो। मेरे हिसाब से उस समय लाईन में लोगों की गिनती हज़ारों में थी।
जब गुरूजी से मिलने की मेरी बारी आई तो मैंने अपनी गोद में उठाये हुए बच्चे का चेहरा गुरूजी की तरफ करते हुए

कहा, "गुरुजी, इसकी दोनों किड़नियाँ खराब हैं।" इस पर गुरुजी ने इस बच्चे को अपने हाथों में उठा लिया और कहा, "नहीं, इसकी दोनों किडनियाँ बिलकुल ठीक हैं।" ....ऐसा कहकर गुरुजी आगे चले गये। उस दिन मैं गुरुजी के शब्दों से इतनी प्रभावित हुई कि उसके बाद मैंने किसी डॉक्टर या इलाज के बारे में कभी नहीं सोचा और न ही कभी किसी डॉक्टर के पास गई।

यही मेरा वो बेटा है जो अब बड़ा हो गया है और अपनी शैक्षिक समस्या तथा काम में तरक्की प्राप्त करने के लिए, आपका आशीर्वाद लेने, आपके सामने बैठा है। इसे आज तक किसी प्रकार का, कोई शारीरिक कष्ट नहीं हुआ है। यह गुरुजी का वरदान ही है कि यह पूर्ण सुः ख के साथ अपना स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहा है। डॉक्टरों ने तो इसके जन्म के समय ही 'ना' कहते हुए अपने हाथ खड़े कर दिये थे।

वाह..... हे गुरुजी....... ....वाह

कमाल है बच्चे को हाथों में लिया देखा और कह दिया कि नहीं इसकी किड़नियाँ तो ठीक हैं।

मैं इसे क्या कहूँगा...?

....चमत्कार!!

.... चमत्कार नहीं।

माफ करना, यह चमत्कार नहीं उससे कुछ अलग है। चमत्कार तो मनुष्य करते हैं लेकिन गुरुजी ने क्या कहा... क्या उनके शब्द थे..!! जिन्होंने भगवान की तरह काम किया। ये तो वही बता सकते हैं उन्होंने उस महिला से क्या कहा था....!!

हजारों लाखों प्रणाम हैं...।
हे सम्पूर्ण सृष्टि के मालिक।

“गुरूजी, हरियाणा सरकार इसकी इजाज़त नहीं देगी।” इस पर गुरूजी ने कहा था---“इजाज़त सरकार ने नहीं, मैंने देनी है।”

121. *जब मैं अपनी फैक्ट्री, हरियाणा से दिल्ली, स्थानांत्रित कराना चाहता था।*

गुरूजी अपने कुछ शिष्यों के साथ, ईस्ट पटेल नगर की सड़क के किनारे खड़े होकर उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान दे रहे थे। वह रात का समय था। मेरे ‘सुपर मॉस्टर’ गुरूजी का यही तरीका था। वे अक्सर इसी तरह अपने शिष्यों पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करते थे। बिलकुल सड़क के किनारे खड़े होने के कारण वातावरण में वाहनों का शोर बहुत अधिक था और ये भी ज़रुरी था कि सबका ध्यान गुरूजी पर और उनके द्वारा दिये जा रहे ज्ञान की तरफ केन्द्रित होना चाहिए था।

साधारणतयाः गुरु लोग, ऐसे कार्य के लिए किसी शाँत वातावरण का चुनाव करते हैं ताकि आध्यात्मिक ज्ञान में किसी प्रकार का अवरोध न आये। लेकिन गुरुजी यह कार्य अपने हिसाब से करते थे। वे शोर तथा भीड़ भरे माहौल में भी पूर्ण एकाग्रता चाहते थे। गुरुजी को जानना और समझ पाना हमारी समझ से परे है।

जब वे अपना काम कर चुके तो मैंने उनसे अपने लिए अगले दिन चड़ीगढ़ जाने की इजाज़त माँगी जो उन्होंने खुः शी-खुः शी दे दी। परन्तु मैं उनके द्वारा कही गई तुरन्त 'हाँ' से सन्तुष्ट नहीं था।

मैंने फिर कहा, "गुरुजी, आपने पूछा ही नहीं कि मैं क्यों जा रहा हूँ...?"

गुरुजी ने कहा, "हाँ बेटा, मैं जानता हूँ कि तू हरियाणा से फैक्ट्री स्थानांत्रित (Shift) कराने की इजाज़त (Permission) लेने के लिए चड़ीगढ़ जा रहा है।

मैंने पूछा, "गुरुजी, ...काम हो जायेगा?"

गुरुजी बोले, "नहीं बेटा" मैंने कहा, "...तो फिर मैं नहीं जाता।"

गुरुजी ने कहा,
"......जाना है बेटा और इसके बाद भी दो बार और जाना है।"

और फिर ऐसा ही हुआ जैसा गुरूजी ने कहा था। मैं तीन बार चंड़ीगढ़ गया। आख़िर तीसरी बार हरियाणा सरकार ने मुझे स्वीकृति पत्र दे दिया ताकि मैं, अपनी फैक्ट्री को हरियाणा से दिल्ली स्थानांत्रित (Shift) *कर सकूं।*

जब डिस्क्ट्रीक इन्ड़स्ट्रीज ऑफिसर ने मुझे वह स्वीकृति-पत्र दिया, उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। वह बोला, "मैं अपनी ज़िन्दगी में पहली बार देख रहा हूँ कि किसी राज्य सरकार ने अपने राज्य से दूसरे राज्य में, किसी उधोग को इस तरह स्थानांत्रित (Shift) *किया हो।" वह विस्मित होकर मुझसे बोला,*

".......आप हैं कौन ...सेखरी साहब?"

जब मैंने पुरानी बातों का स्मरण किया और सोचा, जब गुरूजी ने मुझे विधिवत् रुप से रोज़ाना गुड़गाँव न आने के लिए डाँटा था और मैंने अपना पक्ष रखते हुए कहा था कि गुरूजी मेरा अधिकतर समय तो सड़क पर ही बीत जाता है। मुझे रोज़ाना पंजाबी बाग से हरियाणा और हरियाणा से दरियागंज और फिर दारियागंज से वापिस पंजाबी बाग जाना पड़ता है। इस पर गुरूजी ने कहा था, "तुम हरियाणा से फैक्ट्री दिल्ली ले आओ।" तब मैंने कहा था, "गुरूजी, हरियाणा सरकार इसकी इजाज़त नहीं देगी।" इस पर गुरूजी ने कहा था---

"इजाज़त सरकार ने नहीं, मैंने देनी है।"

...और ऐसा सिर्फ मेरे केस में ही हुआ। आजतक कोई ऐसा दूसरा उद्हारण नहीं मिलता कि किसी

उद्योग को, एक राज्य से किसी दूसरे राज्य में स्थानांत्रित (Shift) *करने की इजाज़त मिली हो।*

गुरूजी का एक बहुत अधिक प्रिय शब्द था, 'हीला'। 'हीला' का मतलब होता है अप्रयोगिक व अप्रसंगिक तरीके से समस्या का समाधान करना। अर्थात यदि कोई व्यक्ति या गुरु शिष्य, गुरूजी के समक्ष अपनी कोई समस्या रखता था तो गुरूजी स्वयं् इस अद्भुत तरीके से उसकी समस्या का समाधान कर देते थे। गुरूजी अक्सर कहते थे "बेटा, मैं तो 'हीला' तैयार कर देता हूँ और उसके बाद काम तो अपने आप ही हो जाते हैं।" मेरे इस शिफ्टिंग के केस में भी, गुरूजी ने 'हीला' तैयार किया जिसने एक अद्भुत भूमिका निभाई।

<u>विस्तार...</u>

जब गुरूजी ने मुझसे कहा कि अपनी फैक्ट्री दिल्ली ले आओ, उसके कुछ दिनों बाद ही क्लब, जिसमे मैं सुबह टेनिस खेलता हूँ एक आश्चर्य जनक घटना घटी। उस दिन खेल समाप्त करने के बाद मैं थोड़ा आराम करने के लिए बैठा ही था कि मेरा एक मित्र खिलाड़ी मेरे पास आया। वह मुझसे पूछने लगा कि क्या मुझे हरियाणा राज्य में किसी प्रकार की कोई दिक्कत तो नहीं आ रही...? उसने आगे बताया कि हरियाणा सरकार में उसका एक बहुत प्रभावशाली दोस्त है और एक अच्छे दोस्त की तरह वह मेरे लिए कुछ करने को उत्सुक है। मैंने कहा कि मैं अपनी फैक्ट्री हरियाणा से दिल्ली शिफ्ट करना चाहता हूँ और इसके लिए हरियाणा सरकार की अनुमति की आवश्यकता है।

वह मुझे अपने एक दोस्त के पास लेकर गया और उसे मेरा पक्ष लेने को कहा। उसने उसकी बात मानकर हमें हरियाणा की राजधानी 'चंडीगढ़' बुलाया। उसने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से ये काम करवा दिया और इस तरह उसने इस काम में मेरी मद्द की। लोग यह कहते थे कि यह काम तो 'असम्भव' है, लेकिन वो हुआ।

यही था वो 'हीला', जो उस रात सड़क के किनारे खड़े हुए गुरूजी ने मेरे लिये बनाया था, जब मैंने उनसे चड़ीगढ़ जाने की इजाज़त माँगी थी।

मैंने यह कभी सोचा भी नहीं था कि मेरा दोस्त मुझसे कभी आकर यह पूछेगा कि हरियाणा में मुझे कोई परेशानी तो नहीं है और मुझे अपने दोस्त से मिलवायेगा और वह अपने व्यक्तिगत प्रभाव से मेरा यह कार्य करवा देगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि गुरूजी द्वारा रचित इस 'हीले' ने इस असम्भव कार्य को अन्जाम दे दिया।

संक्षेप में मैं यदि कहूँ तो जो कोई भी गुरूजी के सामने अपनी समस्या रखे और गुरूजी 'हाँ' करते हुए कह दें, 'हो जायेगा' तो समस्या अपने आप सुलझ जाती थी। काम कितना भी कठिन क्यों ना हो, हो जाता था।

जब लोग गुरूजी के पास उनका धन्यवाद और आभार प्रकट करने के लिए आते, तो गुरूजी बिलकुल सामान्य होते थे किसी प्रकार की कोई उत्तेजना उनके चेहरे पर नहीं होती थी। जैसे उन्होंने कोई छोटा-मोटा काम ही किया हो।

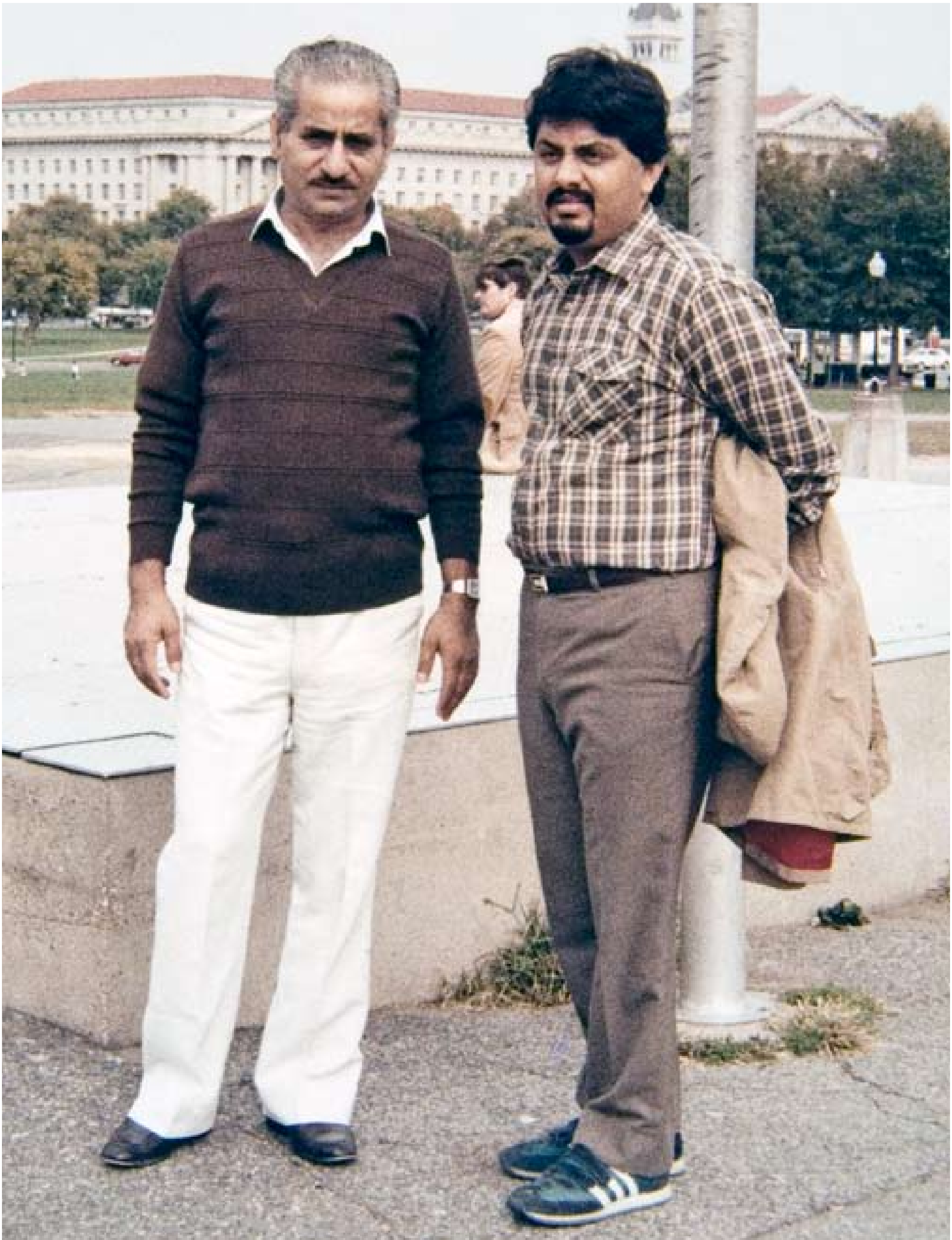

गुरूजी के साथ देवेन्द्र जैन, लंदन एअरपोर्ट पर

गुरुजी ने कहा, "बेटा, ये तो खेल तमाशा है जो मैं अपने बच्चों को खुः श करने के लिए करता हूँ, ...कभी-कभी।

122. देवेन्द्र जैन ने लंदन एयरपोर्ट पर गुरुजी से कैमी साबुन अपने सामान में साथ ले जाने की प्रार्थना की।

गुरुजी ने अपना अमेरिका और यूरोप का टुअर, श्री आर. पी. शर्मा, डी. एस. जैन, बक्शी बतरा और देवेन्द्र जैन तथा कई अन्य शिष्यों के साथ पूर्ण किया।

एयरपोर्ट की बात है, वहाँ चेक-इन पर सभी यात्री अपना-अपना सामान का वज़न कराने के लिए दे रहे थे। चैकिंग ऑफिसर सामान का वज़न करने के बाद, कानून के मुताबिक सामान का स्वीकृत मुफ्त वज़न घटाकर, बाकी अतिरिक्त वज़न के लिए अतिरिक्त भुगतान चार्ज रहा था।

इतने में देवेन्द्र जैन गुरूजी के पास आया और प्रार्थना करने लगा कि गुरूजी, जो चैकिंग ऑफिसर है वह बहुत सख़्ती से चैकिंग कर रहा है और मेरे सामान का वज़न ज़रुरत से करीब दुगना है। मैंने सामान में कुछ दर्जन कैमी साबुन डाला है, वह मुझे बहुत पसन्द है। वह ऑफिसर सामान के अतिरिक्त वज़न के लिए अतिरिक्त चार्ज लगायेगा। उसके लिए मेरे पास और विदेशी मुद्रा भी नहीं है। अतः मजबूरन वह साबुन मुझे यहीं छोड़ना पड़ेगा।

उसने आगे प्रार्थना की, कि गुरूजी कुछ कीजिए ताकि ये साबुन बिना किसी अतिरिक्त चार्ज के, मैं अपने साथ भारत ले जा सकूं।

गुरूजी ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुरा दिये...।।

<u>तभी चमत्कार हुआ</u>...

देवेन्द्र ने अपना सामान वज़न करने की मशीन पर रखा। उसके सामान का वज़न सामान्य से लगभग तीन गुणा था। चैकिंग ऑफिसर ने बिना कोई प्रश्न किये उसे बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लिया और वह दूसरे यात्री का सामान चैक करने में लग गया।

सभी लोग उस ऑफिसर के व्यवहार में अचानक आये इस बदलाव से आश्चर्य चकित थे। क्योंकि वह ऑफिसर, किसी भी यात्री के सामान में यदि 10% भी अतिरिक्त वज़न होता था तो भी उसके उस वज़न पर अतिरिक्त चार्ज लगा रहा था। तो यह कैसे सम्भव हुआ कि देवेन्द्र का सामान जो कि 300% था, बिना किसी अतिरिक्त चार्ज के पास हो गया...?

...उसके बाद गुरूजी भारत लौट आये।

उनके लौटने पर मैंने गुरूजी से पूछा, "गुरूजी, उन्होंने देवेन्द्र के 300% सामान को कैसे जाने दिया...?" गुरूजी ने मेरी तरफ देखा और कहा, "बेटा, वो बहुत भोला हैं" जब देवेन्द्र की बारी आयी, तो मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा और मुझे उस पर दया आ गई। मैंने उस ऑफिसर के दिमाग को अपने नियन्त्रण में ले लिया और उसे सामान में उतना ही वज़न नज़र आया, जितना भेजा जा सकता था। अतिरिक्त वज़न उसे दिखाई ही नहीं दिया।

ऐसा मैंने देवेन्द्र के लिए इसलिए किया क्योंकि साबुन उसकी पसन्द का था और वह उसे अपने साथ लाने के लिए बहुत उत्सुक भी था।

गुरूजी ने कहा, "बेटा, ये तो खेल तमाशा है, जो मैं अपने बच्चों को खुः श करने के लिए करता हूँ, कभी-कभी।"

आपकी माया अपरम्पार है......
......हे गुरूदेव!!

गुरुजी ने किसी मन्त्र का उच्चारण किया तो वह बड़ा पत्थर खिसक कर दूसरी ओर हो गया और सामने एक गुफ़ा का बड़ा सा द्वार दिखाई दे रहा था।

123. संतलाल जी की गुरुजी के साथ, मनीकरण से ऊपर की अविस्मरणीय यात्रा।

एक बार गुरुजी संतलाल जी को लेकर मनीकरण गये। मनीकरण हिमाचल प्रदेश का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। यहाँ पार्वती नदी, अपने अत्याधिक ठण्ड़े पानी के साथ बहती है और वहीं खौलते पानी के बहुत से झरने व तालाब भी हैं।

यह एक अद्‌भुत स्थान है। ऋषि लोग पूर्ण विश्वास के साथ बताते हैं कि माँ पार्वती के कानों का आभूषण (सुन्दर बालियाँ) नीचे पानी में गिर गईं थीं। भगवान शिव, माँ पार्वती को प्रसन्न करने के लिए वहाँ आये थे। उन्होंने

माँ के आभूषण गहरे पानी से निकाल कर माँ को दिये और माँ बहुत प्रसन्न हुई। भगवान शिव ने इस जगह का नाम माँ के आभूषणों पर, मनी कर्ण रखा।

गुरूजी अक़्सर अपने शिष्यों को इस पवित्र स्थान पर माँ और भगवान शिव के आशीर्वाद के लिये लेकर आते रहते थे। ऐसे ही एक बार अपने कुछ शिष्यों को लेकर गुरूजी मनीकरण तीर्थ स्थल पर गये। अगले दिन गुरूजी, अपने शिष्य संतलाल जी को लेकर मनीकरण से करीब 20 किलोमीटर ऊपर, एक निर्जन स्थान पर पहुँचे। वहाँ एक विशाल झरना, ऊंचाई से नीचे गिर रहा था। जिसका फैलाव (Span) काफी चौड़ा था। झरने के सामने रुक कर गुरूजी ने संतलाल जी को अपने पीछे आने का आदेश दिया।

झरने के पीछे पहाड़ और झरने के बीच में एक जगह खड़े होकर गुरूजी ने जैसे ही कुछ उच्चारण किया, पहाड़ की एक शिला दूसरी तरफ सरक गई। सामने गुफा का एक द्वार नज़र आया और द्वार पर जटाऔं से सुसज्जित एक महात्मा खड़ा था। उसकी अवस्था को देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा था। उसकी उम्र का अनुमान लगाना कठिन था क्योंकि जटाओं के अलावा उसकी भौंहों के बाल इतने लम्बे थे कि आँखों को ढकते हुए गालों तक लटक रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों वह गुरूजी की इन्तजार कर रहा हो।

उसने गुरूजी का अभिनन्दन किया और उन्हें लेकर गुफा के अन्दर चला गया। संतलाल जी कहते हैं कि वो एक गुफा में एक स्थान पर खड़े होकर बड़े आश्चर्य से उन दोनों को बातें करते हुए देख रहे थे। कुछ समय रुकने के उपरान्त गुरूजी द्वार की तरफ बढ़े। महात्मा ने किसी मन्त्र का उच्चारण किया तो शिला फिर एक तरफ सरक गई और बाहर जाने के लिए द्वार बन गया। गुरूजी संतलाल जी को लेकर बाहर

आ गये। बाहर निकलते समय उस महात्मा ने गुरूजी को प्रणाम किया और गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया।

बाहर आकर गुरूजी ने संतलाल जी से पूछा----
"तुमने उसे प्रणाम क्यों नहीं किया....?

संत लाल जी ने विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया,
"जनाब, आपका ही हुक्म था कि कोई भी शिष्य, आपके अलावा किसी दूसरे के पाँव ना छुए। इसीलिए मैंने उनके पाँव छुए बिना ही प्रणाम कर लिया था।

गुरूजी ने कहा, ***" बेटा, वह तुम्हारा बड़ा भाई है। 500 साल पहले मेरा शिष्य बना था। उसने 'हठ-योग' अपनाया और आज तक उसी शरीर में तपस्या कर रहा है। क्योंकि वह गुफ़ा के बाहर नहीं आ सकता, इसीलिए पाँच साल में एक बार मुझे ही उससे मिलने कि लिए गुफ़ा में जाना पड़ता है...।"***

परन्तु जो कुछ देखा, वह इतना अविश्वस्नीय था कि संतलाल जी को हज़म करना मुश्किल हो रहा थाः -

- *एक तो कई मील की ऊपर की यात्रा।*
- *फिर एक बड़े झरने के सामने अचानक रुकना।*
- *फिर झरने के पीछे जाना और मन्त्र का उच्चारण करना और शिला का खिसक जाना, जैसा कि हमने बचपन में कहॉनियों में सुना था।*
- *पत्थर के पीछे गुफा के द्वार का होना।*
- *गुफ़ा में महात्मा का उनका इन्तजार और स्वागत करना।*

यह सब सिर्फ गुरुजी का स्मरण करके ही लिखा और पढ़ा जा सकता हैं अन्यथा यह बहुत अधिक अविश्वस्नीय सा लगता है। क्योंकि उपरोक्त, संतलाल जी के मुख से सुना है इसलिए संशय की कोई सम्भावना उत्पन्न ही नहीं होती।

हे महानतम् गुरुदेव,
मैं आपके दिव्य रुप की प्रशंसा करते हुए
बिना किसी थकान के आपके चरणों में लीन हो जाऊँ
.....ये मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए।

“ये ही भगवान की सच्ची भक्ति है। इस लड़की में जो भगवान बसता है आज वह उसके घुटने की समस्या से मुक्त हो गया और आप पर बहुत खुः श है।”

...जाओ, जो मर्जी में आये करो।

124. जब गुरूजी ने मुम्बई में एक पारसी लड़की को ठीक किया।

दुबारा, एक बार फिर मुम्बई में..,
शाम को सेवा शुरु हुई। दिन में गुरूजी अपने शिष्यों को साथ लेकर कुछ परिवारों के घर गये थे क्योंकि उनके घरों में उनकी शारीरिक उपस्थिति जरुरी थी। सूर्यास्त के बाद ‘वीरजी’ के घर पर सैंकड़ो भक्त एकत्रित हो गये और गुरूजी ने सेवा प्रारम्भ कर दी।

गुरूजी ने एक-एक करके लोगों से मिलना शुरु किया और उन्हें ठीक करने लगे। कुछ लोगों को वे अपने शिष्यों के पास

भेज रहे थे। वे शिष्य गुरूजी के निर्देशानुसार दूसरे कमरे में बैठकर सेवा कर रहे थे। सन्दीप सेठी और मैं, एक साथ एक कमरे में लोगों से मिल रहे थे।

एक जवान पारसी दम्पति हमारे पास आये और बोले कि हमें गुरूजी ने आपके पास भेजा है। संदीप सेठी ने उस लड़के से उसकी समस्या के बारे में पूछा तो वह अपनी पत्नी की तरफ इशारा करते हुए बोला, "गुरूजी, यह मेरी पत्नी है और पिछले छः साल से इसकी बाँयी टाँग कुछ डिग्री तक मुड़ी हुई हैं। यह सीधी नहीं हो पा रही है। इस कारण यह लंगड़ा कर चलती है। इसकी टाँग को कोई भी डॉक्टर ठीक नहीं कर पाया। पिछले छः सालों से इसका इलाज चल रहा है फिर भी इसकी टाँग सीधी नहीं हो पा रही। सारे इलाज फेल हो गये हैं। इसके इस दुःख के कारण हम बहुत परेशान है।"

सुनने के बाद संदीप सेठी ने उस लड़की को कुर्सी पर बिठाया और उससे कहा, "अपनी टाँग सीधी करो" वह बोली कि उसके लिए ऐसा करना सम्भव नहीं। यदि इस पर ज़रा सा भी ज़ोर देती हूँ तो असहनीय दर्द होती है। यह सुनते ही संदीप को गुस्सा आ गया और उसने अपने पैर से उसकी टाँग को नीचे से जोर से हिट किया और कमाल हो गया। उसकी टाँग सीधी हो गयी।

अविश्वस्नीय......!!

वह लड़की और उसका पति आश्चर्य चकित रह गये...!! संदीप और मैं भी अकल्पनीय उच्च विमान में उड़ रहे थे। हम एक दूसरे को देखकर इतने खुःश थे कि खुःशी हज़म ही नहीं हो रही थी। पिछले छः वर्षों से टेढ़ी टाँग, केवल एक

पैर मारने से चमत्कारिक रुप से सीधी हो गई....!! अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। हम गुरूजी को बताने के लिए उनके पास गये तो......

वे मुस्कुराये और बोले-----
"ये ही भगवान की सच्ची भक्ति है। इस लड़की में जो भगवान बसता है आज वह उसके घुटने की समस्या से मुक्त हो गया और आप पर बहुत खःुश है।" ...जाओ, जो मर्जी में आये करो।

क्या अधिकार दिया उन्होंने....!!
...सबको ठीक कर दो।

पूरे संसार में जहाँ तक मैंने देखा और समझा है यह एक ऐसी अनोखी और अतुल्नीय सक्षमता है, जिसकी किसी के साथ तुलना करना सम्भव नहीं है। लेकिन जहाँ तक मै जानता हूँ गुरूजी सब कुछ देने वाले और करने वाले हैं। इसका कोई जवाब या हिसाब नहीं है मेरे पास....।।

वाह गुरूजी...!!
...बस आप ही आप हो...!!
सिर्फ आप।

आपको हजारों लाखों प्रणाम
....साहेब जी।

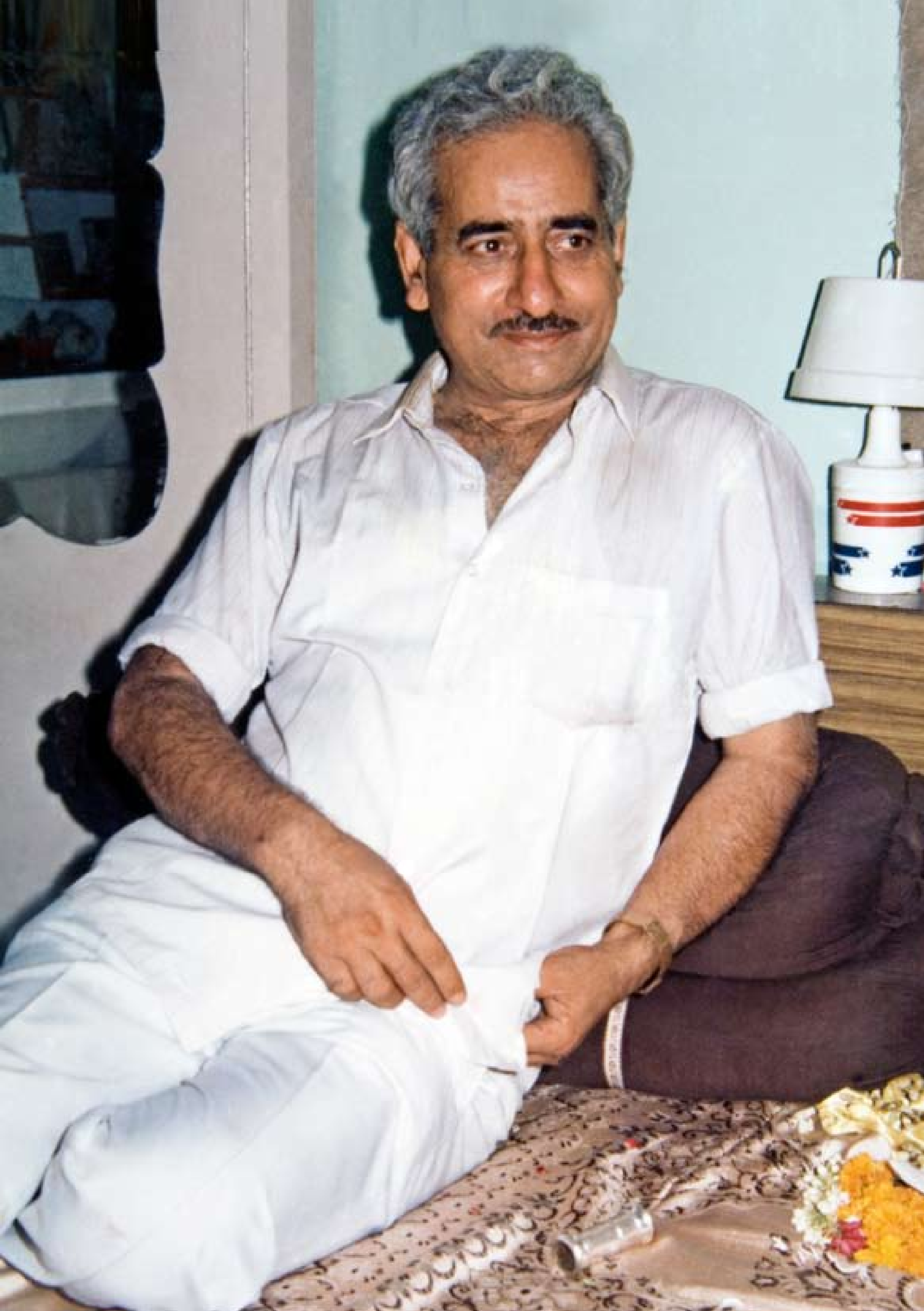

मैं उठा और लाईट बन्द करने के लिए हाथ ऊपर उठाया क्योंकि लाईट का स्विच मेरे सिर के ऊपर ही था। फिर जैसे ही लेटने लगा कि.....

125. जब गुरूजी लेटते ही, सैकिण्डज़ में सो गये।

<u>गुरूजी मुम्बई में थे</u> और सेवा ज़ोर-शोर से चल रही थी। 'वीरजी' के मुम्बई, खार स्थित घर में लोगों की भीड़ उमड़ी चली आ रही थी और उनका घर एक मंदिर सा प्रतीत हो रहा था। श्रद्धालुगण गलियारे के रास्ते (Passage) *में ही क्या, उनके घर के ड्राईंगरुम के अलावा बाहर मुख्य सड़क पर भी कतार-बद्ध खड़े थे।*

गुरूजी पहले माले (First Floor) *पर सबको आशीर्वाद दे रहे थे। घर के अन्दर की सीढ़ियाँ भी लोगों से खचाखच भरी*

हुई थी। सभी लोग गुरुजी की एक झलक पाने के लिए अपनी बारी का बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे।

सभी लोगों का उत्साह देखने लायक था। लगातार घण्टों इन्तजार करने के बाद भी कोई नाखुः श या थका हुआ नहीं लग रहा था। विभिन्न प्रकार के लोग, विभिन्न प्रकार की समस्यायें लेकर गुरुजी के कमरे में जा रहे थे। लेकिन जब वे वहाँ से वापिस निकलते थे तो उनके चेहरे खिले हुए नज़र आते थे। एक नहीं, सैकड़ों लोगों के चेहरों पर पूर्ण सन्तोष का भाव नज़र आता था। हर कोई जब गुरुजी के कमरे से बाहर आता तो उसका चेहरा खिला हुआ और मुस्कुराहट से भरा हुआ नज़र आता था। लगता था जैसे वो मंजिल मिल गई हो उसे, जिसके लिए वह आया था और घण्टों से इन्तजार कर रहा था।

वहाँ के वातावरण में एक उत्सव का सा माहौल था। लोगों को ऐसा लग रहा था कि गुरुजी उन लोगों की रक्षा के लिए ही मुम्बई आये हैं। लोग यही कह रहे थे कि हम बहुत खुः शनसीब हैं। शिष्य जो दिल्ली से गये थे और नये शिष्य जो मुम्बई के थे, गुरुजी के आदेशानुसार सेवा कर रहे थे। बिलकुल खुदाई जलवा था वहाँ पर। (वहाँ लेने वालों की तो गिनती ही नहीं थी, परन्तु देने वाले सिर्फ एक 'गुरुजी' ही थे।)

रात के करीब़ एक बजे सेवा सम्पन्न हुई। तब गुरुजी मुझे सोने के कमरे में ले गये। गुरुजी पलंग पर बैठे और मैं नीचे जमीन पर। मुझे कुछ आध्यात्मिक ज्ञान देने के बाद उन्होंने मुझसे कहा, "राज्जे उठ..., बत्ती बुझा दे।"

उस दिन एक अभूतपूर्व अनुभव मुझे हुआ, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

आदेशानुसार मैं उठा और लाईट बन्द करने के लिए हाथ ऊपर उठाया। क्योंकि लाईट का स्विच मेरे सिर के ऊपर ही था और जैसे ही मैं लेटने के लिए बैठा कि आश्चर्य..... !! गुरूजी खर्राटे ले रहे थे।

ये कैसे हो सकता है..? मुझे लाईट ऑफ करने में, मुश्किल से पाँच सैकिण्ड़ का समय भी नहीं लगा होगा।
पर हे भगवान...
ये सो भी गये.....!!

एक आम व्यक्ति को सोने के लिए कोशिश ही करनी होती है। परन्तु नींद तो भगवान की मर्जी से ही आती है। वही नींद देता है और वही नींद से जगाता भी है। यह क्रिया किसी व्यक्ति के बस की बात नहीं है। उपरोक्त घटना इस बात की गवाह है कि नींद पर भी गुरूजी का पूर्ण नियन्त्रण है।

आपको कोटि-कोटि प्रणाम।
...हे गुरूदेव!!

मैंने अपना काम किया लेकिन मैं कमरे का ताला लगाना और लाईट बन्द करना भूल गया। परन्तु चाबियाँ दुबारा मैंने तुम्हारे तकिये के नीचे रख दी।

126. *गुरु जी टुअर पर गये थे और माताजी कमरों में ताले लगाकर बच्चों के साथ छत पर सोने चली गई थी।*

<u>हमेशा की तरह</u> गुरुजी अपने ऑफिशियल टुअर पर बाहर गये हुए थे। रात हुई और सभी कमरों के ताले लगाकर माताजी बच्चों को लेकर स्थान की छत पर सोने चली गईं। करीब आधी रात के समय तेज हवाऐं चलने लगी और माताजी ने सोचा कि शायद बारिश आने वाली है। अतः वे सभी को लेकर नीचे आ गईं।

जब नीचे आईं तो वह चौंक गईं क्योंकि स्थान वाला कमरा खुला हुआ था और वहाँ लाईट भी जल रही थी। उन्होंने

ताले को देखा तो वह टूटा हुआ नहीं था, वह तो खोला गया था। फिर उन्होंने घर का सामान देखा, वह भी बिलकुल सु-व्यवस्थित था। बाकी सभी कमरों पर ताले लगे थे केवल स्थान का कमरा ही खुला हुआ था।

माताजी को यह देखकर तसल्ली हुई कि सभी सामान अपनी जगह पर सुरक्षित है और कुछ भी चोरी नहीं हुआ है। जैसा कि अक़्सर होता है।

जब गुरूजी 'शारीरिक रुप में' स्थान पर नहीं होते थे तो उस समय उनके शिष्य श्री एस. के. जैन और राजी शर्मा, दोनों गुड़गाँव स्थान पर आ जाते और सेवा करते थे। माताजी ने उन्हें रात की घटना के बारे में बताया और यह भी बताया कि कोई नुकसान नहीं हुआ है। लेकिन उन्होंने इसे कोई गम्भीरता से नहीं लिया।

परन्तु उन्हें आश्चर्य तो तब हुआ कि जब गुरूजी अपने टुअर से वापिस आये और दुबारा इस विषय पर बात हुई। गुरूजी माताजी से कहने लगे, "ओ मॉस्टर, (गुरूजी माता जी को इसी तरह सम्बोधित करते थे और खुः शी महसूस करते थे।) कैसे बेहोशों की तरह सोती हो, जरा तो चौंकन्ना रहना चाहिए....!!"

उन्होंने कहा, "कुछ दिन पहले मैं, कुछ आध्यात्मिक कार्य के लिए स्थान पर आया था। मैंने तुम्हारे सिरहाने के नीचे से कमरे की चाबियाँ निकाली और अपना काम किया। लेकिन मैं वापिस कमरे का ताला लगाना और लाईट बन्द करना भूल गया और चाबियाँ दुबारा तुम्हारे तकिये के नीचे रख दी।"

कितनी आसानी और सरलता कह दिया गुरुजी ने।
पर बात तो बहुत ही बड़ी थी।

साधारण मनुष्य की सोच बहुत सीमित है। अगर उसकी तरह से सोचा जाये तो गुरुजी को कैम्प से गुड़गाँव स्थान तक आने के लिए किसी टैक्सी, ट्रेन या किसी अन्य वाहन की ज़रुरत रही होगी। लेकिन गुरुजी ने ऐसे किसी भी साधन का प्रयोग नहीं किया।

गुरुजी आये,
चाबियाँ उठाई....,
दरवाजे खोले....,
लाईट जलाई....,
साधारण तरीके से अपना काम किया ...
और चले गये।

लेकिन वे कैसे आये और कैसे वापिस गये, यह बात हज़म नहीं हो रही।

हे गुरुदेव, ये तो सिर्फ आप ही बता सकते हैं
कि आप कैसे आये और कैसे गये।

अपनी कृपा करें ....हे गुरुदेव।
........प्रणाम गुरुजी।

उस समय उसके पास चलाने के लिए एक स्कूटर ही था। तुम्हारे आशीर्वाद की बदौलत ही आज वो मर्सिडीज के लायक हुआ है। अब बताओ कि ये तुम्हारी कार है या नहीं..?"

127. *हरियाणा आटो के मि. गुप्ता, जब अपनी फैक्ट्री को दुबारा शुरु करने के लिए मेरे पास मायापुरी आये।*

मायापुरी इण्डस्ट्रीयल ऐरिया में मेरी फैक्ट्री है। इस इण्डस्ट्रीयल ऐरिया में और भी बहुत सी फैक्ट्रियाँ हैं जो विभिन्न प्रकार के प्रोडक्टस का निर्माण करती हैं।

मेरी फैक्ट्री के ठीक सामने सड़क के उस पार एक फैक्ट्री है। उसका नाम हरियाणा आटो है, जहाँ प्लास्टिक का सामान बनता है।

एक दिन सुबह-सुबह उस फैक्ट्री के मालिक मि. गुप्ता मेरे

पास आये और कहने लगे, "राजपॉल जी, मैंने सुना है कि आप बहुत महान गुरूजी के शिष्य हो और उन्होंने आपको भी बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियाँ दी हैं। मुझे विश्वास है कि आप मेरे लिए भी कुछ कर सकते हैं।

मेरे पूछने पर उसने मुझे बताया कि उसकी फैक्ट्री में कुछ अजीब सी समस्या चल रही है। जिसके कारण फैक्ट्री बन्द करने की नौबत आ गई है। समस्या समझ में नहीं आ रही। उसने बताया कि यदि कोई भी कारीगर काम करने के लिए मशीन को हाथ लगाता है तो उसे झटका लगता है तथा वह काँपने लगता है और फिर उसे तेज़ बुख़ार आ जाता है। ऐसा कितनी बार हो चुका है और अब सभी कारीगर मशीन के पास जाने से घबराते हैं। मेरा कारोबार अब बन्द होने के कगार पर है। उसने विनती करते हुए कहा कि मुझे बचा लीजिए।

मैंने कहा कि मुझे खुः शी है कि तुमने मेरे गुरूजी के बारे में जाना। मैं गुड़गाँव जाऊँगा और गुरूजी से आज्ञा लेकर जैसा वे कहेंगे, वैसा करुंगा।

गुड़गाँव जाकर मैंने गुरूजी से प्रार्थना की और उन्होंने 'हाँ' कर दी। इसके लिए उन्होंने मुझे कुछ ख़ास हिदायतें दी। गुरूजी के आदेशानुसार अगली सुबह मैं उसकी फैक्ट्री में गया। उसकी फैक्ट्री की मशीनों का पूरा चक्कर लगाने के बाद मैंने एक गिलास जल का बनाया और मशीनों पर, दीवारों पर, फैक्ट्री की छत पर अर्थातः सभी जगह छिड़क दिया।

तब मैंने उसके एक कारीगर को बुलाया और उसे मशीन चलाने का आदेश दिया। कारीगर ने जैसे ही मशीन को छुआ, उसे ज़ोर से झटका लगा और वो पागलों की तरह काँपने लगा। फिर जैसा गुरूजी ने मुझे आदेश दिया था मैंने उस कारीगर को पकड़ा और पीटना शुरु कर दिया। उसके बाद उसे जल पिलाया और मशीन को दुबारा चलाने का आदेश दिया। उसने ऐसा ही किया। परन्तु इस बार उसे, मशीन चलाने पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मैंने उसे काम जारी रखने का आदेश दिया और कहा कि वे सामान का उत्पादन ना रोके। मैंने गुप्ताजी को आदेश दिया कि वे ध्यान रखें तथा चौकसी बरतें। यदि उन्हें फैक्ट्री में कुछ असाधारण या संदिग्ध वस्तु दिखाई दे तो वे तुरन्त लाकर मुझे दिखाए।

अगले दिन सुबह गुप्ता जी मेरी फैक्ट्री में आये और कुछ ताँबे के छोटे-छोटे ताबीज जो एक मोटे धागे से बंधे हुए थे, लाकर मुझे दिखाये और बताया कि वे उसे फैक्ट्री के फर्श पर पड़े हुए मिले हैं। मैंने सब कुछ जानने के बाद जैसा पहले मुझे गुरूजी ने कहा था उसे स्मरण करते हुए आगे के लिए आदेश दिया। उसके बाद फिर किसी को भी ऐसा झटका नहीं लगा और ना ही उसे उत्पादन में कोई दिक्कत आयी। उसका व्यापार पहले से कई गुना बढ़ गया।

कुछ महीनों के बाद,

गुरूजी मेरी फैक्ट्री के गेट में खड़े थे और उन्होंने सड़क पर एक सफेद मर्सिड़ीज कार को जाते देखा। गुरूजी बोले--

"राज्जे, ये तेरी मर्सिड़ीज है..!!

मैंने खुः श होकर मुस्कुराते हुए कहा,

"सो कैसे गुरूजी...?"

गुरुजी बोले----
"जो इस कार का मालिक है उसकी फैक्ट्री बन्द हो चुकी थी। कुछ महीने पहले तुमने ही उसे बचाया था। मुझे पता है उस समय उसके पास चलाने के लिए एक स्कूटर ही था। तुम्हारे आशीर्वाद की बदौलत ही आज वो मर्सिड़ीज के लायक हुआ है। अब बताओ कि ये तुम्हारी कार है या नहीं...?"

यह शब्द थे सर्वव्यापी ईश्वर, सम्पूर्ण प्रभुत्व के मालिक मेरे गुरुजी के। क्या आनन्द पूर्ण कृपा थी मेरे पूज्यनीय गुरुजी की। यह नई सी कृपा उस दिन मेरी समझ में आई.... "जैसे किसी को किसी महात्मा की दुआ के बाद पुत्र की प्राप्ति हो और उसे लेकर वह महात्मा के पास आये और कहे, ये आपका है...।।"

ठीक इसी तरह,
इतने ही स्पष्ट और उदार,
मेरे सर्वव्यापी ईश्वर के भी
...शब्द थे।

मैं कुरबान,
...हे गुरुदेव। आप ही आप हैं...

भगवान अपने प्रोग्राम के हिसाब से आयु निर्धारित करता है और गुरूजी उसके द्वारा निर्धारित आयु को बढ़ा देते हैं, जो हर किसी की समझ से परे है।

128. *जब अपने शिष्य के. सी. कपूर को श्रीमति ऑबराय को आशीर्वाद देने इर्विन अस्पताल भेजा।*

जून 1984 की बात है। गुरूजी का गाजियाबाद, ऑबराय की फैक्ट्री में जाने का प्रोग्राम था परन्तु अंतिम समय पर अचानक गुरूजी ने वहाँ जाने का प्रोग्राम स्थगित कर दिया। इसी बीच ऑबराय के बेटे अनूप ने सूचना दी कि उसकी माँ, चलती कार से नीचे गिर गई है तथा उसके सिर में गम्भीर चोट आई है और उसको इर्विन अस्पताल में भर्ती कर दिया गया है।

जैसे ही यह सूचना गुरूजी को मिली उन्होंने तुरन्त अपने एक

शिष्य के. सी. कपूर को, कुछ विशेष हिदायत देकर अस्पताल भेज दिया। मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार खोपड़ी की हड्डी टूट गई थी और पीछे एक गहरा घाव भी हो गया था।

जब तक के. सी. कपूर अस्पताल पहुँचते, श्रीमति ऑबराय के घाव और सिर पर अच्छी तरह से पट्टियाँ बाँध दी गईं थी। के.सी. कपूर ने उसके सिर पर दोनों हाथ रखे और गुरूजी द्वारा दिया गया आदेश उनके परिवार को बताया कि उन्हें राना नर्सिंग होम, राजौरी गार्डन में शिफ्ट कर दिया जाये।

नर्सिंग होम पहुँचने पर उसका दुबारा एक्सरे लिया गया और वह देखकर वे सभी दंग रह गये कि उसमें खोपड़ी की कोई भी हड्डी, टूटी हुई नहीं दिख रही थी। कुछ दिन नर्सिंग होम में रुकने के बाद, वहाँ से उन्हें छुट्टी दे दी गई और वे लोग अपने घर आ गये।

गुरूजी ने कहा, "आप लोगों को चिन्ता करने की कोई ज़रुरत नहीं है ...मैंने इसे बीस साल की अतिरिक्त ज़िन्दगी दे दी है। जहाँ तक उसके चेहरे और सिर पर घाव का सवाल है, वह कोई मायने नहीं रखता।"

सन् 1992 में अचानक एक दिन मैंने अनूप (जिसका प्यार का नाम काकू है) से वैसे ही पूछा कि उसकी माँ का एक्सीडेन्ट कौन से सन् में हुआ था। जब मुझे पता लगा तो सोचने लगा कि इस घटना को तो बीस साल 2004 होने वाले हैं।

ठीक बीस साल बाद, सन् 2004 में काकू की माँ, इस संसार को छोड़कर गुरूजी के चरणों में चली गई।

हर प्राणी को आयु केवल भगवान ही देता है और निश्चित समय पर ही उसकी मौत भी निश्चित है। यदि भगवान से भी ये प्रार्थना की जाए, तो वेदान्त के हिसाब से भी वह अपने इस निर्णय में कोई बदलाव नहीं करता है। निश्चित है कि भगवान अपने प्रोग्राम नहीं बदलता।

भगवान अपने प्रोग्राम के हिसाब से आयु निर्धारित करता है और गुरूजी उसके द्वारा निर्धारित आयु को बढ़ा देते हैं, जो हर किसी की समझ से परे है।

ऐसा ही हुआ था। वो महिला जिसके सिर पर गम्भीर चोट लगी थी और मृत्यु निश्चित थी, उसे महागुरूदेव ने 20 वर्ष की अतिरिक्त आयु दी और सन् 2004 तक अर्थात वह ठीक 20 साल तक जीवित रही।

गुरुजी ने बताया कि जल का वितरण हमेशा 'महागायत्री' के पाठ के साथ करना चाहिए।

129. *जब गुरुजी ने अपने बेटे बब्बे को बेसमेन्ट में 108 बाल्टियाँ जल की पहुँचाने का आदेश दिया।*

गुरुजी का बेटा बब्बा, उस समय किशोरावस्था में था और बड़े वीरवार के दिन अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने मे मस्त था। वह पूजनीय गुरुजी का बड़ा बेटा है और उसका पूरा नाम प्रवेश चानन है।

अचानक उसे एक सन्देश मिला कि गुरुजी उसे बुला रहे हैं। वह थोड़ा घबरा गया और गुरुजी के कमरे में पहुँचा। गुरुजी कुछ अलग सी मुद्रा में बैठे थे। उन्होंने उसे आदेश दिया कि वह 108 बाल्टी जल बेसमेन्ट में पहुँचाए, जहाँ सैंकड़ों

भक्तजन बैठे थे और शिष्य सेवा कर रहे थे।

उन दिनों जल की सेवा, गुड़गाँव के सैक्टर-7 में होती थी। बब्बे के मन को शान्ति मिली और उसने बाल्टियों द्वारा ग्राण्उड फ्लोर से बेसमेन्ट में जल पहुँचाना शुरु कर दिया। 108 बाल्टी जल पहुँचाने में उसे लगभग चार घन्टे का समय लग गया। वह गुरूजी के पास यह बताने पहुँचा कि उसने वह कार्य कर दिया है तो गुरूजी ने उसे अपने पास बिठाया और जल की सेवा का महत्व का समझाया ।

गुरूजी ने बताया कि जल का वितरण हमेशा 'महागायत्री' के पाठ के साथ करना चाहिए। जिसकी आत्मा पवित्र है वही इस जल की सेवा कर सकता है। आध्यात्मिक शक्तियाँ एक उसे, जो यह जल बनाता है और दूसरा उसे, जो यह जल लोगों या अनुयायीयों में वितरित करता है। उन दोनों को ही आध्यात्मिक शक्तियाँ दी जाती हैं। इस तरह महागायत्री मंत्र के द्वारा सेवा करते समय उसकी आत्मा में, वे स्वयं् निवास करते हैं। यह दैविक शक्तियाँ उसकी आत्मा में निवास करती हैं जो साधु और तपस्वियों के लिए एक सपना है।

लेकिन ऐसा सीधा 'गुरू' या उनके समकक्ष के नियन्त्रण में रह कर ही करना चाहिए। जैसे हमारे गुरूजी...।।

पूर्ण विश्वास है कि थोड़े समय में ही वे तुम्हें, तुम्हारे लक्ष्य तक पहुँचा देंगे। मुझे गुरूजी से पता चला कि जल, पानी की उच्चतम् अवस्था है। यह आध्यात्म के साथ सम्बन्ध रखती है। ऐसा मैंने और कहीं नहीं देखा, जैसा कि गुरूजी ने प्रेक्टीकल रुप में दिखाया। यह मेरे लगातार सालों साल का अनुभव है कि पानी गुरूजी के हाथ में आया और जल बन गया। गुरूजी इसमें क्या डालते थे, ये मैं यहाँ विस्तार

से नहीं लिख सकता। हाँ, यह ज्ञान दिया जा सकता है यदि कोई जिज्ञासु स्वयं चलकर आये और इस ज्ञान को जानने का इच्छुक हो। मैं स्पष्ट रुप से यहाँ बताना चाहूँगा कि सुबह सेवा शुरु करने से पहले, पहला काम जो गुरूजी करते थे, वह था जल बनाना।

जैसा कि मैं जानता हूँ, कि जिस तरह के कठोर नियम गुरूजी ने शिष्यों और सेवादारों के लिए बनाये हैं ठीक उसी तरह के ही कठोर नियम उन्होंने अपने बच्चों बब्बा, रेनू, नीटू, इला व छुटकी के लिए भी बनाये है। मैं समझता हूँ कि वे पिता से अधिक गुरू हैं। मैं पिछले 30-35 वर्षों से गुरूजी के बच्चों को बड़े भाई की तरह उनके प्यार के नामों से ही पुकारता हूँ।

जो कुछ भी मैंने कहा, वह कहने की क्षमता और ज्ञान दोनों मुझ में नहीं, क्योंकि यह दोनों एक शिष्य के बस में है ही नहीं। यह जो सब ज्ञान जैसा दिखता है, वास्तव में एक सन्देश है जो शिष्य की सम्पूर्ण रचना में एक स्थाई चैनल द्वारा गुरूजी ने स्थापित कर रखा है।

सो.....!! जो कुछ भी मैं दिखता हूँ, वह मैं नहीं, अपितु वह स्वयं मेरे मालिक ही हैं।

सब कुछ आप ही आप हैं।
ऐ मेरे मालिक....!!

यह चिकित्सा सम्बन्धी परिभाषा (Medical Terminology) के लिए एक चुनौती (Challenge) का विषय है।

130. जब श्री आर. पी. शर्मा बुख़ार पर तो सहमत थे लेकिन घर और ऑफिस में नहीं।

गुरुजी अपने शिष्य आर.पी. शर्मा जी को बहुत प्यार करते थे। एक बार की बात है कि एक बुख़ार और जोड़ों के दर्द से ग्रसित एक गम्भीर मरीज़ गुरुजी के पास आया और गुरुजी ने उसे आर.पी शर्मा जी के पास भेज दिया। शर्मा जी ने उसे बिलकुल ठीक कर दिया अर्थात वह पूर्ण रुप से सन्तुष्ट हो गया। मरीज़ के साथ उसके इस तरह के व्यवहार को देखकर गुरुजी बहुत खुः श हुए।

एक दिन गुरुजी ने उन्हें अपने कमरे में बुलाकर कहा कि मैं

तुम्हें दो-तीन महीने के लिए बुख़ार देना चाहता हूँ। आर.पी. शर्मा जी यह जानते थे कि गुरूजी जो कुछ कह देते हैं वह होकर रहता है। उससे भगवान भी बचाने नहीं आता।

शर्माजी गुरूजी के चहेते बच्चे थे और यह वह भी जानते थे। अतः उन्होंने गुरूजी से प्रार्थना की, "....तो ठीक है गुरूजी, लेकिन प्रार्थना है कि मुझे घर पर और ऑफिस में बुख़ार नहीं आना चाहिए।"

बहुत सुन्दर.......

गुरूजी सहमत हो गये।

शर्माजी अपने ऑफिस जाने के लिये घर से निकले तो घर से निकलते ही उन्हे तेज़ बुख़ार आ गया। ऑफिस पहुँचते ही उनका बुख़ार गायब हो गया। यही सिलसिला लगभग दो महीने तक रोज़ाना ऐसे ही चलता रहा। जब वे घर होते या ऑफिस में तो बुख़ार उन्हें छू भी नहीं सकता था।

एक बार क्या हुआ कि कुछ भक्तजन शर्माजी के घर आये और उनसे, उनके घर पारिवारिक समारोह में शामिल होकर आशीर्वाद देने की प्रार्थना करने लगे। शर्माजी उनके प्यार व गुरूभक्ति से परिचित थे अतः शर्माजी उनके घर जाने के लिए सहमत हो गये।

बहरहाल, वे गुरूजी से किया गया अपना वादा भूल गये और वहाँ आये लोगों को आशीर्वाद देने में लग गये।

बुख़ार चढ़ना आरम्भ हो गया। कुछ समय तो उन्होंने उसे नजरअन्दाज किया। लेकिन जैसे-जैसे समय व्यतीत होता

गया, वह बढ़ता ही चला गया। बुख़ार इतना अधिक तेज़ हुआ कि उनका कुर्सी पर बैठना, किसी से बात करना और लोगों को आशीर्वाद तक देना मुश्किल हो गया। वे इतना परेशान हो गये और सोचने लगे, कि कब समारोह से निकलें और किसी तरह घर पहुँचें।

अगले दिन सुबह वह गुरूजी के पास गये और अपनी बाँहे फैलाकर गुरूजी से प्रार्थना करने लगे, "गुरूजी अब मैं और बरदाश्त नही कर सकता। कल जो इस बुख़ार ने मेरी हालत की, वह मैं बयान नहीं कर सकता।"

गुरूजी बोले, "ठीक है, आज के बाद बुख़ार नही होगा।"
और शर्माजी को उसके बाद कभी बुख़ार नहीं आया।

गुरूजी से मैं प्रार्थना करता हूँ कि कृपया हमें समझायें कि उनके पास वे कौन से ऐसे दैविक तीर हैं जिनके चलते ही बुख़ार आ भी जाता है और चला भी जाता है। यह चिकित्सा सम्बन्धी परिभाषा (Medical Terminology) के लिए एक चुनौती (Challenge) का विषय है।

जब यह आता है तो कोई नहीं जानता कि यह कब तक रहेगा। लोग इससे आराम पाने के लिए दवाईयाँ लेते है और इन्तजार करते हैं कि यह कब ठीक होगा...! यहाँ तक कि जाने माने डॉक्टर भी (Clinical Test) जाँच पर निर्भर रहते हैं कि आख़िर इस बुख़ार के पीछे कारण क्या है...!!

लेकिन गुरूजी के तो अपने ही विशेष दैविक तरीके हैं जिनसे वे अपने शिष्यों को भी मालामाल करते हैं।

STRIKES

इसी को कहते हैं गुरू कृपा और इसके कृपा निधान हैं गुरूजी स्वयं। शत्-शत् प्रणाम है गुरू महाराज। कृपा बनाये रखना,...साहेब जी।

131. *जब गुरूजी, शाम के समय गुड़गाँव स्थान की छत पर खड़े, आकाश की तरफ देख रहे थे।*

एक दिन शाम को मैं गुड़गाँव पहुँचा तो पता चला कि गुरूजी छत पर हैं। मैं भी छत पर चला गया और गुरूजी के दर्शन पाकर आनन्दित हो गया। उन्होंने आशीर्वाद देने के बाद मुझे नीचे चटाई पर बैठने को कहा तथा खुद़ चुपचाप आकाश की ओर देखने लगे। कुछ समय बाद उन्होंने मेरी तरफ देखा। मैं लगातार उन्हें देखे चला जा रहा था लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि वे आकाश में क्या देख रहे हैं।

अचानक मेरी नज़र गुरूजी से हटी और मैं भी आकाश की ओर देखने लगा। यह जानने के लिये कि गुरूजी ऊपर क्या देख रहे हैं। तभी मैंने देखा कि आकाश में कोई तिकोनी सी वस्तु जिसके तीनों तरफ मन्द-मन्द पीली लाईट जल रही थी, बहुत शान्ति से चली जा रही है। वह पीली लाईट छोटे-छोटे बल्बों के समान एक कतार में लगी थी, जो आँखों को आनन्द प्रदान कर रही थी।

पहले मुझे लगा कि शायद यह कोई हवाई जहाज़ है। लेकिन उसमें किसी प्रकार की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। मैंने उसे और ध्यान से देखा तो लगा कि उस वस्तु का आकार हवाई जहाज़ जैसा नहीं है। वह तिकोने आकार का था जिसकी नाक छोटी थी। जैसा कि हम बचपन में कागज़ का हवाई जहाज बनाकर उड़ाते थे। एक और अजीब बात मैंने वहाँ देखी कि वह एक स्थिर गति से उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर धीरे-धीरे चली जा रही है। मुझे लगा कि ऐसा मैंने पहले कभी नहीं देखा। मैंने उत्साहित होकर गुरूजी से कहा, "गुरूजी देखिए, वो ऊपर क्या जा रहा है?" गुरूजी एकदम संजीदा व शान्त थे। उन्होंने मुझे इसका तब तक कोई जवाब नहीं दिया, जब तक कि वह वस्तु आँखों से औझल नहीं हो गई।

बजाय इसके कि गुरूजी मेरी बात का जवाब देते, वे मेरी ओर एक-टक देखने लगे। उस समय उनके चेहरे पर आनन्द पूर्ण आभा, सम्पूर्ण प्यार और भाव, बहुत कोमलता से भरपूर मधुर मुस्कान, देखने लायक थी। गुरूजी का यह रुप मैंने शायद ही पहले कभी देखा हो। मैं थोड़ा सहम सा गया और पूछा, "गुरूजी, कोई ख़ास बात है...?"

गुरूजी कुछ देर तक चुप रहे और उसके बाद बोले.......

"राज्जे, बेटा तू बड़ा खुःशनसीब है। तूने आज वो देखा है जो कभी किसी ने नहीं देखा।"

गुरूजी ने आगे बताया.......

"किसी ख़ास दिन भगवान शिव, अपने वाहन पर यहाँ स्थान के ऊपर से गुज़रते हैं। मेरे अलावा किसी को इसकी जानकारी नहीं है। तू पहला शख़्स है जिसने इनके दर्शन किये हैं और वो भी अपने गुरू के साथ।"

मैं गुरूजी के तेजपूर्ण चेहरे की तरफ देखता ही रह गया। उनकी दिव्य आवाज़, मेरे कानों और दिमाग में आज तक गूंज रही है। मुझे शून्यता का अहसास हो रहा था। यह एक अनोखा अनुभव था जिसका अनुमान लगाना असम्भव सा है।

इसी को कहते हैं गुरू कृपा और ....इसके कृपा निधान हैं गुरूजी स्वयं्।

शत्-शत् प्रणाम है गुरू महाराज।

.....कृपा बनाये रखना,
साहेब जी।

पिछली रात मैंने खाना नहीं खाया तो गुरूजी ने भी खाना नहीं खाया और जाहिर है माता जी ने भी नहीं खाया। ...यह है मेरे गुरूजी का संसार। बाहर के बाकी संसार से बिलकुल अलग।

132. जब मैं गुरूजी के दर्शन करने के लिए गुड़गाँव गया तो सेवादार पूरन ने मुझे गुरूजी को मिलने से रोक दिया।

अस्सी के दशक के अन्त की बात है एक शाम हमेशा की तरह मैं गुरूजी के दर्शन करने हेतु गुड़गाँव गया।

इससे पहले कि मैं गुरूजी के कमरे की तरफ अपने कदम बढ़ाऊँ, गुरूजी का एक प्रिय सेवादार पूरन मेरे पास आया और आकर उसने मुझे प्रणाम किया तथा कहा, "गुरूजी ने कहा है कि कोई भी शिष्य मुझसे ना मिले, जब तक मैं उसे बुलाऊँ नहीं।"

मैंने उससे पूछा कि यह आदेश सबके लिये है या फिर सिर्फ मेरे लिए....? उसने जवाब दिया, "गुरूजी ने किसी का नाम

तो नहीं लिया।" मैंने पूरन को कहा कि जाओ और गुरूजी से कहो कि मैं आया हूँ। हो सकता है कि वे मुझे दर्शन की अनुमति दे दें..? इतना सुनने पर पूरन बोला, "उनका यह भी आदेश है कि मैं किसी का संदेश लेकर भी उनके पास न आऊँ।"

मैं समझ गया कि यह आदेश सभी के साथ-साथ मेरे लिए भी है। मैं छोटे कमरे में सैटी पर बैठ गया और उनके आदेश का इन्तजार करने लगा। उस समय शाम के छः बजे थे। छः बजे से रात के नौ बज गये और फिर बारह भी बज गये। लेकिन कोई संदेश नहीं आया। आख़िर मैं सो गया।

करीब एक घण्टे के बाद, कमरे के साथ लगी रसोई में से कुछ शोर सुनकर मैं जाग गया और सोचने लगा कि शायद अब गुरूजी मुझे बुलायेंगे। लेकिन दरवाजा अन्दर से बन्द था। अन्दर कोई बातें कर रहा था, जो मुझे स्पष्ट रुप से सुनाई नहीं दे रहा था। मैंने दरवाजा खटखटाने के लिए सोचा फिर पता नहीं क्या सोच कर मैंने ऐसा नहीं किया। कुछ देर बाद मैं वापिस आकर बिस्तर पर सो गया।

सुबह छः बजे पूरन ने आकर मुझे जगाया और कहा कि गुरूजी ने बुलाया है। मैं तुरन्त उठा और गुरूजी के कमरे में चला गया। वहाँ गुरूजी कुछ सेवादारों से बातें कर रहे थे। मैं जमीन पर बैठ गया और कुछ देर तक इन्तजार करता रहा।

जब वे उन सेवादारों से बात कर चुके तो मैंने कहा, "गुरूजी, आपने मुझे दर्शन नहीं दिये, मैं सारी रात इन्तजार करता रहा। मगर गुरूजी, खाना तो दे देते, मैं भूखा ही रहा रात भर।" गुरूजी ने मुझे इसका कोई जवाब नहीं दिया।

कुछ देर रुकने के बाद गुरूजी से दिल्ली वापिस आने की

इजाज़त लेकर, मैं उनके कमरे से बाहर आ गया। जब मैं रसोई के सामने से गुज़रा तो मैंने देखा कि रात के खाने की खाने से भरी हुई दो थालियाँ, रसोई के स्लैब पर पड़ी हुई थीं। मेरे पूछने पर बिट्टू ने मुझे बताया कि कल रात गुरूजी और माता जी ने खाना नहीं खाया।

सुनकर मैं चकित रह गया और मुझे अपने आप पर बहुत शर्म महसूस हुई कि मैंने गुरूजी से क्यों कहा कि मैं रात भर भूखा पड़ा रहा। मैंने इतना भी नहीं सोचा कि गुरूजी तो खाना तब खाते हैं, जब सबको खिला लेते हैं।

माताजी हमेशा गुरूजी के खाने के बाद ही खाना खाती थी और गुरूजी अपने शिष्यों को खिलाने के बाद।

मुझे केवल अपनी और अपने खाने की ही चिन्ता थी..? पिछली रात मैंने खाना नहीं खाया तो गुरूजी ने भी खाना नहीं खाया और ज़ाहिर है माता जी ने भी नहीं खाया। यह है मेरे गुरूजी का संसार। बाहर के बाकी संसार से बिलकुल अलग।

मुझे विश्वास है कि इस तरह का उदाहरण कहीं और मिलना मुमकिन नहीं है। हमारे साहिब जी को देखिए.... क्या उन्हें कोई देखता है कि वे खाना खा रहे हैं....?

....हे गुरूदेव। आप सभी को चाहे वे कितनी भी दूरी पर क्यों न हों, देख सकते हैं और समझ में ना आने वाले तरीके से जान भी सकते हैं।

मेरी भूल को क्षमा करें मेरे मालिक....
.....बार-बार प्रणाम गुरूजी।।

उन दिनों मोबाईल फोन नहीं होते थे। इसीलिए गुरुजी ने उसे अपना संदेश देने का यह अद्भुत तरीका तो नहीं अपनाया...?

133. *गुरुजी ने अपने अनूठे अन्दाज़ में संदेश देकर, बब्बू को सड़क पर रोका।*

मनुष्यों में यह एक आम स्वाभाविक प्रवृति है कि वे चमत्कार देखकर उससे बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं।

एक बार बब्बू अपने स्कूटर पर तेज़ी से फैक्ट्री जा रहा था कि अचानक वह किसी दूसरे स्कूटर वाले से टकरा गया। दोनों स्वयं व उनके स्कूटर, सड़क पर गिर गये। बब्बू जल्दी से उठा तथा दूसरे स्कूटर चालक को पकड़ लिया और इस एक्सीड़ेन्ट के लिए उसे दोषी करार देने लगा। वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा। वह उसे पीटने ही वाला था कि अचानक उसे लगा कि उसके कन्धे को किसी ने छुआ है और कोई

पीछे खड़ा उससे बात करना चाहता है। उसने मुड़कर पीछे देखा तो पाया कि गुरूजी का ड्राईवर सीताराम, उससे कह रहा था कि गुरूजी उसे बुला रहे हैं। उसे देखकर बब्बू हैरान हो गया और उस स्कूटर सवार को भूल, वह गुरूजी के पास सड़क के दूसरी तरफ दौड़ा।

गुरूजी अपनी कार में बैठे हुए थे। गुरूजी ने कहा..... **"बब्बू, ...तुम गुरू को बुला कर फैक्ट्री के दरवाजे बन्द रखते हो?"**

बब्बू ने प्रार्थना की और बताया कि वह किसी को आवश्यक कार्य हेतु छोड़ने गया था और लेट हो गया। उसने आगे कहा, "गुरूजी, मैं आपका गुप्त निर्देश भूला नहीं हूँ कि मुझे आपका फैक्ट्री के गेट पर स्वागत करना है। देर हो जाने के कारण ही मैं स्कूटर तेज़ चला रहा था।"

गुरूजी मुस्कुराये और कहने लगे,

"....ठीक है। मैं फैक्ट्री के बाहर खड़े सभी कर्मचारियों को पचास-पचास रुपये दे आया हूँ।"

उन्होंने कुछ और पैसे बब्बू को दिये और कहा,

"जो कर्मचारी वहाँ उपस्थित नहीं थे उनको भी दे देना।"

उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और चले गये।

इस काम में करीब एक मिनट का ही समय लगा होगा। गुरूजी के जाने के बाद जैसे ही वह पीछे मुड़ा, तो देखकर दंग रह गया कि वहाँ सड़क पर कोई भी नहीं है। ना ही वह व्यक्ति, जिससे एक्सीडेन्ट हुआ था और ना ही उसका स्कूटर। वहाँ कोई भी व्यक्ति नहीं था। उसे और भी आश्चर्य तब हुआ जब उसने देखा कि उसका अपना स्कूटर भी गिरा

हुआ नहीं था जैसा कि वह वहाँ छोड़कर गया था बल्कि अपने स्टैंड पर खड़ा है।

- *यह किसने किया..!!*
- *गिरा हुआ स्कूटर अपने आप तो खड़ा हो नहीं सकता...!!*
- *जिसने यह कार्य किया, वह व्यक्ति कहाँ चला गया...!!*
- *क्या वास्तव में इस रचना के रचनाकार गुरूजी स्वयं तो नहीं थे, एक्सीडेन्ट हुआ भी था या नही..?*

बार-बार पूछने पर बब्बू ने बताया कि वास्तव में ही उसका स्कूटर किसी दूसरे स्कूटर से टकराया था और उसके चालक को वह पीटने ही लगा था कि अचानक गुरूजी का ड्राईवर सीताराम आ गया। गुरूजी ने उसे डाँटा और निर्देश दिये। सब-कुछ वास्तव में हुआ था लेकिन किसी बात का वहाँ कोई निशान तक बाकी नहीं मिला।

- *...कहीं यह सब गुरूजी की माया तो नहीं थी..?*
- *....क्या इस दृश्य की रचना गुरूजी ने, सिर्फ बब्बू को रोकने के लिए ही तो नहीं की थी...?*

क्योंकि उस समय वह सड़क की दूसरी तरफ था और उन दिनों मोबाईल फोन नहीं होते थे। इसीलिए गुरूजी ने उसे अपना संदेश देने का यह अद्भुत तरीका तो नहीं अपनाया...? लेकिन पूर्णतयाः मैं कुछ कह नहीं सकता। क्योंकि जो हुआ, ऐसा तो भगवान ही कर सकते है।

बब्बू अपने स्कूटर से आगे चला गया और उस दिन के बाद काफी अनुशासन बद्ध तरीके से जीवन जीने लगा। वेदों के अनुसार, भगवान विष्णु ने देवऋषि नारद को अपनी माया से अवगत कराने के लिए, इसी प्रकार की रचना की थी। इसलिए....

वाह.....! ....हे गुरूदेव...!!

हमें भी अपनी इस माया से

...अवगत करा दीजिए।

परन्तु महत्वपूर्ण और जानने योग्य बात यह है कि वह लड़का बिलकुल ठीक है। वह ठीक से खाता है और एक स्वस्थ सामान्य जीवन बिता रहा है।

134. *जब एक बैंक कर्मचारी को, उल्टी में हरी मिर्च निकली।*

सत्तर के दशक के उत्तरार्ध से लगातार, पंजाबी बाग स्थान पर गुरूजी के आदेश व आध्यात्मिक नियन्त्रण में सेवा होती चली आ रही है। लोग अपने दुः ख व समस्यायें लेकर आते और उन्हें दूर करवा कर सन्तुष्ट होकर गुरूजी की प्रशंसा करते हुए, खुः शी-खुः शी वापिस जाते हैं।

स्थान के इस पवित्र कार्य की चर्चा सुनकर, एक सिख युवक आया और उसने अपने छोटे भाई के स्वास्थ्य के बारे में बताया। उसका भाई एक बैंक कर्मचारी था और पिछले चार

महीने से कुछ भी ठोस खाना नही खा पा रहा था और ना ही अपने काम पर जा सकता था। वह कुछ चबाता और उसे निगलने की कोशिश करता तो बुरी तरह से काँपने लगता तथा जो कुछ भी खाया हो, उल्टी कर देता था।

कोई दवाई काम नहीं कर रही थी और डॉक्टर भी अपने आपको इस परिस्थिति में लाचार महसूस कर रहे थे। इतनी लम्बी बीमारी का अभी तक पता नहीं लग पा रहा था। हम उसकी जिन्दगी और नौकरी के बारे में बहुत चिन्तित हैं। उसने कहा, "हमने लोगों से यहाँ की बहुत तारीफ़ सुनी है और पूरे विश्वास के साथ आपके पास आये हैं गुरूजी, कृप्या उसकी रक्षा कीजिए।"

मैंने उस लड़के को बुलाया और गुरूजी के आदेशानुसार उससे सख़्ती से पेश आया। मैंने गिलास में से एक घूंट पीकर, बाकी का जल उसे पिला दिया। उसने एकदम अव्यवहारिक रुप से बर्ताव करना शुरु कर दिया। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसे आग पिला दी गई हो।

इस तरह के मरीज़ो के माथे पर स्ट्रोक्स (Strokes) लगाकर जूठा जल पिलाने का गुरूजी का आदेश है। उसके बाद उसे लौंग, इलायची व जल दिया जाता है।

अगले दिन, उसका भाई स्थान पर आया और कहने लगा कि वह बड़ी अजीब सी परेशानी महसूस कर रहा है। ऐसा लगता है कि उसे उल्टी आयेगी। उसी समय मैंने गुरूजी से प्रार्थना की और तुरन्त मुझे उनका आदेश मिला। मैंने उसे, उसकी उल्टी को किसी भी दवाई की मदद से रोकने के लिए मना कर दिया। मैंने उससे कहा कि उसे उल्टी आने दो।

उसने बात मान ली और उसके परिवार पर कृपा हो गई।

वे उस लड़के को लेकर स्थान पर आये और अपने साथ तीन इन्च लम्बी और करीब आधा इन्च मोटी, एक हरी मिर्च अपने साथ लाये जो उसकी उल्टी में निकली थी और वह अविश्वस्नीय रुप से बिलकुल ताज़ी थी।

लड़के ने उत्सुकतावश पूछा, "मैंने पिछले कई महीनों से हरी मिर्च ना ही खाई है और ना ही निगली है। लेकिन यह साबुत हरी मिर्च मेरे पेट में कहाँ से आ गई।" कृप्या इस पर प्रकाश डालिए.......।।

.....इसका जवाब सिर्फ गुरूजी के पास है।

परन्तु महत्वपूर्ण और जानने योग्य बात यह है कि वह लड़का बिलकुल ठीक है। वह ठीक से खाता है और एक स्वस्थ सामान्य जीवन बिता रहा है।

...धन्य हैं गुरूदेव आप। लोग कैसी कैसी अजीब तरह की बीमारियाँ लेकर आते हैं और आप बिना किसी दवाई के उसे ठीक कर देते हो। ना तो मरीज़ को और ना ही डॉक्टर को समझ आती है कि बीमारी क्या है और इलाज क्या हुआ है।

यदि इस ज्ञान की प्राप्ति करना चाहे और पूर्ण समर्पण करे तो मुझे विश्वास है कि गुरूजी अवश्य कृपा करेंगे उस पर।

.....हर कोई उनका, "कृपा-पात्र' बन सकता है।

कृपा बनाये रखना गुरूजी..।।

गुरु की बात को ना मानना ऐसा ही है जैसे बाहर बर्फ-बारी हो रही हो और इन्सान बिना कपड़ों के उसमें जाये।

135. *जब गुरुजी ने लाजपत नगर की नीलम जो ब्लड कैंसर से पीड़ित थी को प्रसाद की फुल्लियाँ दी।*

लाजपत नगर में रहने वाली नीलम, एक आर्किटेक्ट की पत्नी जिसे ब्लड़ कैंसर था, बड़े वीरवार के दिन गुड़गाँव पहुँची। उसने गुरुजी से इस बीमारी को ठीक करने के लिये आशीर्वाद देने की प्रार्थना की तो गुरुजी ने उसे स्थान पर 'मीठी फुल्लियों का प्रसाद' चढ़ाने का आदेश दिया। गुरुजी ने उसे लौंग, इलायची तथा जल दिया।

कुछ दिन बाद वह फिर आशीर्वाद लेने आयी। उस दिन गुरुजी अपनी एक विशेष अलग मुद्रा (Different Mood)

में बैठे हुए थे। आशीर्वाद देने के बाद उन्होंने कुछ फुल्लियाँ स्थान से उठाकर उसे इस आदेश के साथ दी कि वह उसमें से एक-एक दाना रोज़ खाये।

कुछ दिनों के बाद उसने अपनी जाँच कराई तो डॉक्टर लोग आश्चर्य चकित होकर बोले कि अब वह ब्लड़ कैंसर की मरीज़ नहीं है। वह और उसका पूरा परिवार खुःशी से झूम उठा। अब वह एक स्वस्थ महिला थी और उसमें इस बीमारी का नामों निशान भी नहीं था।

गुरूजी ने नीलम को आदेश दिया कि वह एक साल तक दूसरे बच्चे को जन्म न दे।

उसकी जिन्दगी खूबसूरत और खुःशहाल चल रही थी। उसका पति भी एक अच्छा इन्सान था और गुरूजी का भक्त भी था और अपनी पत्नी के साथ गुरूजी के दर्शन करने आता रहता था। चमत्कारिक रुप से उसकी बीमारी ठीक होने के कारण, उसका मुझसे तथा अन्य शिष्यों जैसे आर. पी. शर्मा और पटेल नगर के ए. पी. चौधरी के साथ मेलजोल बढ़ गया।

एक बार बड़े वीरवार के दिन स्थान पर फुल्लियाँ चढ़ाने के बाद वह मेरे पास आयी और आँखों में आँसू भर तथा अपने पति की तरफ इशारा करते हुए बोली, "गुरूजी, ये मुझे प्यार नहीं करते और मुझसे दूर-दूर रहते हैं। मुझे ऐसी जिन्दगी नहीं चाहिए इसलिये मैं मौत माँगती हूँ।" उसकी यह बात सुनते ही मैं काँप उठा और उसे डाँटते हुए बोला, "आज वो दिन है कि गुरूजी किसी की भी किसी इच्छा के लिये 'ना' नहीं करते।" मैंने उसे आदेश देते हुए कहा कि जाओ और

तुमने मौत के लिये जो शब्द अभी-अभी बोले हैं, वापिस ले लो और माफी माँगो।

इसी तरह बहुत से महीने निकल गये। एक बार वह गुड़गाँव आई और उसने गुरूजी को प्रणाम किया। गुरूजी कुछ संजीदा हो गये। गुरूजी के प्रारम्भिक शिष्य, ए. पी. चौधरी ने गुरूजी से उनकी संजीदगी का कारण पूछा।

गुरूजी ने जवाब दिया, "मैंने इसे बच्चा पैदा करने से मना किया था पर ये तो गर्भवती है।" गुरूजी बोले, ***"अब मैं "बुढ्ढ़े बाबा' को कैसे मनाऊँ...? यह उन्हीं का आदेश था कि एक साल तक बच्चा न हो। परन्तु इसके पेट में तो बच्चा है।"***

चौधरी ने पूछा, "गुरूजी अब क्या होगा..?" गुरूजी बोले, ".....अब मुश्किल लग रहा है बेटा, बुढ्ढ़े बाबा को मनाना पड़ेगा। गुरू की बात को ना मानना ऐसा ही है जैसे बाहर बर्फ-बारी हो रही हो और इन्सान बिना कपड़ों के उसमें जाये।" अब चौधरी जी परेशान हो गये।

अब क्या हो सकता था, वह दुबारा बीमार हो गई और अन्ततः ईश्वर के पास चली गई।

पंजाबी में गुरू-शिष्य से सम्बन्धित एक कहावत है

'धर जा, ते मर जा'

अर्थात

गुरू के प्रति समर्पण, बिना किसी शर्त के ज़रुरी है ।

बहुत लोग लस्सी पीते हैं लेकिन जो लस्सी मैंने पी उसका कोई जवाब नहीं। वह मेरे गुरुजी की कड़ी मेहनत की कमाई की लस्सी थी।

136. जब गुरुजी ने मुझे मोहन सिंह पैलेस में लस्सी पिलाई।

एक दिन सुबह अपने शोरुम जाने से पहले उनके दर्शन करने के लिए मैंने गाड़ी गुरुजी के ऑफिस की तरफ मोड दी। गुरुजी को वहाँ पाकर मेरा मन गद्‌गद्‌ हो गया। उस दिन महीने की पहली तारीख़ थी और ये दिन सभी सरकारी ऑफिसरों के वेतन का दिन होता है।

गुरुजी ने मुझे दर्शन दिये और मैं बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ देर रुकने के उपरान्त, मैंने गुरुजी से दरियागंज शोरुम चलने की प्रार्थना की और वे चलने के लिए राज़ी हो गये।

जब हम कनॉट प्लेस से गुज़र रहे थे तो रास्ते में मोहन सिंह पैलेस आया।

गुरूजी ने मुझसे पूछा, "राज्जे .....की पियेंगा पुत? अज तनख्वाह मिली ऐ।" (राज्जे......तुम क्या पिओगे, बेटा? आज मुझे वेतन मिला है।)

मैंने कहा, "......गुरूजी, यहाँ लस्सी बड़ी अच्छी मिलती है।"

गुरूजी मुझे अपने साथ लेकर, वहाँ की मशहूर दुकान पर गये जो सिर्फ दूध से बना सामान ही बेचता था। उसे दो गिलास दही की लस्सी बनाने का ऑडर दिया।

गुरूजी ने अपनी पेन्ट की पिछली जेब से पर्स निकाला और उसमें से एक नोट निकालकर दुकानदार को दिया। वो भी क्या नज़ारा था। जो ना तो भुलाया जा सकता है और ना ही दोहराया जा सकता है।

पर्स से नोट निकालने का यह गुरूजी का एक असाधारण सलीका था। वह इसी तरह से पर्स निकालते थे और उसमें से नोट निकाल-निकाल कर उन लोगों को देते थे जो उनसे आशीर्वाद स्वरुप 'बरकत' के लिए पैसे माँगते थे और उसे अपने व्यापार में बढ़ोतरी के लिए लगाना चाहते थे। मैं इसका गवाह हूँ, जो मैंने महसूस किया और मैं कह सकता हूँ, उनके इस तरीके और आम लोगों के तरीकों में बहुत अन्तर है। हो सकता है मैं अपना नज़रिया ठीक तरह से ना रख पाया हूँ, लेकिन उस तरीके में बहुत अंतर था।

बहुत लोग लस्सी पीते हैं लेकिन जो लस्सी मैंने पी उसका कोई जवाब नहीं। वह मेरे गुरूजी की मेहनत की कमाई की लस्सी थी। वो गुरूजी, जिन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी कोई भी उपहार या एक अन्न का दाना तक भी किसी से ना लिया हो। यहाँ तक कि अमेरिका और यूरोप के टुअर पर भी उन्होंने हमें, अपनी मेहनत की कमाई से ही खिलाया।

करीब एक ड़ेढ महीने के लम्बे टुअर पर भी वे केवल ब्रेड-मक्ख़न या ब्रेड-जैम और चाय पर ही रहते थे। हालाँकि लंदन, ब्लैकपूल, पैरिस, शिकागो, वॉशिंगटन, न्यूयार्क, लेक ताहो और लॉस ऐंजलिस इत्यादि में बहुत से परिवार हैं। वहाँ हम सब रुकते तो थे लेकिन खाना गुरूजी की कमाई से ही आता था।

.......हे भगवान, कितना अनुशासन और कितने सख़्त नियम बनाये थे उन्होंने अपने लिए.....। एक सूई के नक्के की भी गुंजाईश नहीं थी इधर या उधर होने की।

वाह ....हे गुरूदेव

*.........ऐसे पैसों की **'लस्सी'** पी हुई है मैंने...।*

धर्म व शास्त्रों के नियमों में पूर्ण परिवर्तन और उन्हें सरल करने वाले सिर्फ आप। आप ही आप हैं गुरूजी, आपकी बराबरी सिर्फ आप ही कर सकते हैं...

........ऐ मालिक

137. *'गुरूपूर्णिमा'* *जब शिष्य अपने गुरू की पूजा करते हैं।*

इस दिन का अपना एक अलग ही महत्व है उन लोगों के लिए, जिन्हें अपने इस जीवन में अपने गुरू का आशीर्वाद मिल गया हो।

इस दिन एक शिष्य अपने गुरू की पूजा करता है फूलों से, उनके चरण धोता है केसर के जल से, एक नारियल और नौ वस्त्र अपर्ण करता है उन्हें मिठाईयाँ भी अपर्ण करता है और कभी-कभी उन्हें, अपने हाथ से खिलाता भी है।

इस दिन 'गुरू' उन्हें ना नहीं कह सकता। इस दिन गुरू बहुत खु़श होता है और शिष्य को आशीर्वाद देता है और मीठे केसर युक्त चावल का प्रसाद देता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में गुरू शिष्य के बीच वस्त्र, गुरू को अर्पित करने की परम्परा प्रचलित है।

लेकिन हमारे गुरूजी ने वस्त्रों के बदले सिर्फ एक रुमाल पर 9 वस्त्र लिखकर एक नई प्रथा को जन्म दिया ताकि कुछ लोग अपनी आर्थिक स्थिति के कारण खर्च नहीं कर सकते, वे अपने को दूसरों से हीन ना समझें। वाह....गुरूजी ....वाह!! कितना ध्यान रखते हैं आप अपने भक्तों की भावनाओं का।

गुरूजी ने अपने शिष्यों को यह आदेश दिया कि केवल एक नारियल को एक रुमाल में लपेट कर, उसी पर नौ वस्त्र लिखकर अपर्ण करें। पूछने पर उन्होंने एक ईश्वरीय अन्दा़ज के साथ उत्तर दिया......

ये मैं हूँ, जो नौ वस्त्रों के रुप में इसे स्वीकार करता हूँ।

धर्म व शास्त्रों के नियमों में पूर्ण परिवर्तन और उन्हें सरल करने वाले सिर्फ आप। आप ही आप हैं गुरूजी, आपकी बराबरी सिर्फ आप ही कर सकते हैं

........ऐ मालिक

हजारों... लाखों प्रणाम... हे गुरूदेव.....।।

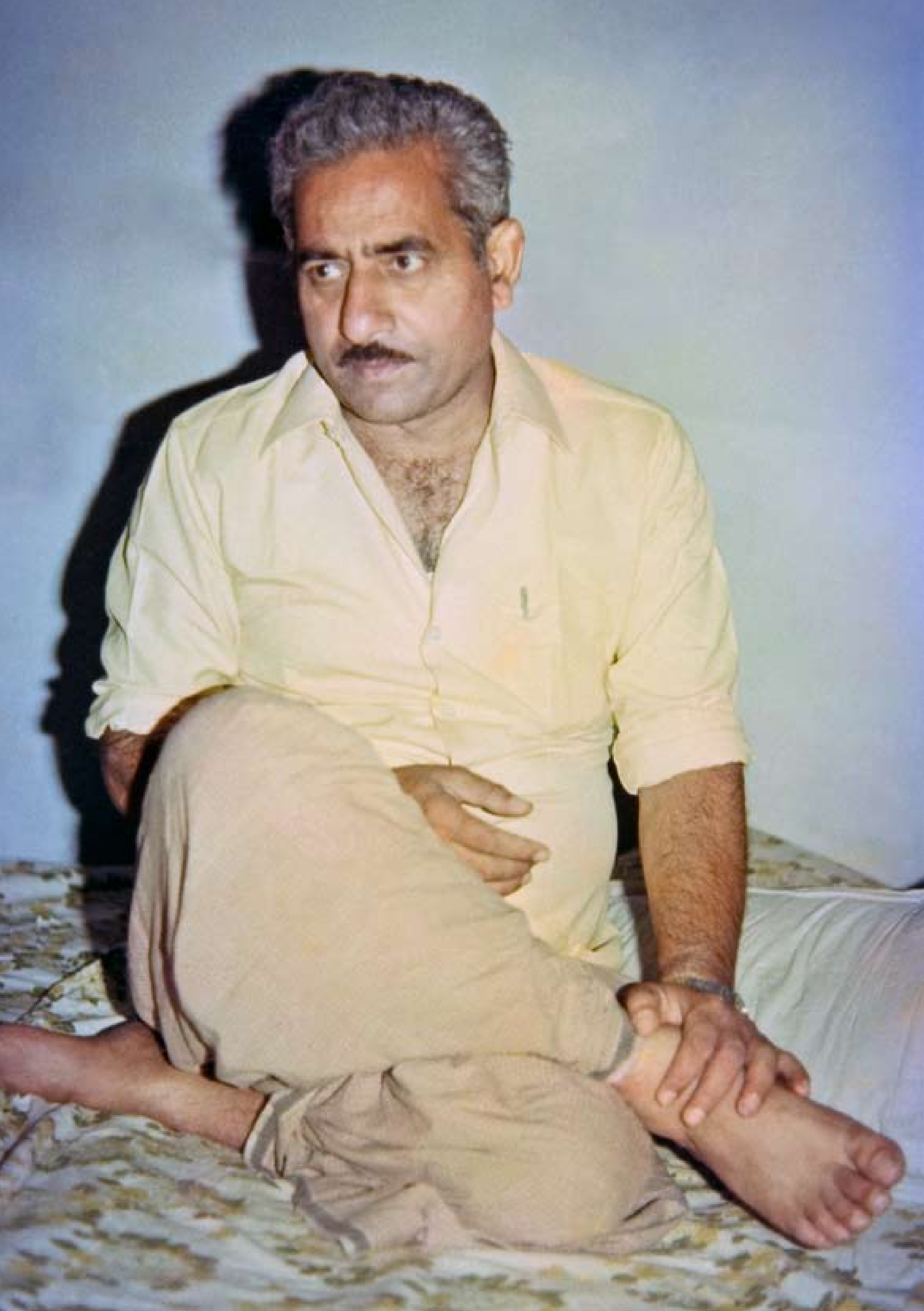

"मैं इसे मार तो देता पर मैं मजबूर हूँ क्योंकि इसने गुरूजी का कड़ा पहना हुआ है। इसके हाथ से आप यह कड़ा उतरवा दो, उसके बाद यह एक से दस तक की गिनती भी नहीं गिन सकेगा और मर जायेगा।"

138. जब एक आत्मा ने, गुरूजी की महिमा का गुणगान किया।

डी. एस. जैन एक भक्ति परायण गुरूशिष्य और जगदीश सैंगर एक भक्त है। एक बार डी. एस. जैन को सैंगर का धमकी भरा, फोन आया कि कौन महारथी है मैं सबको उठाकर फैंक दूंगा। यह कहकर उसने टेलीफोन रख दिया।

जैन साहब जगदीश सैंगर के घर गये। वहाँ उन्होंने देखा कि उसकी जीभ उसके मुँह से बाहर आ रही है और अपने आकार से दुगनी बड़ी हो गई है। जैन साहब समझ गये कि यह किसी प्रेत आत्मा से ग्रसित है। उन्होंने उसे गद्रन से

पकड़ा और उसकी जीभ उसके मुँह के अन्दर कर दी।

जैन साहब ने सैंगर के अन्दर स्थित शक्ति से उसकी पहचान तथा उसके शरीर में आने का कारण पूछा। तो उस शक्ति ने जवाब दिया.....

"मेरा नाम सूरज देव है और मैं पटना के पास भयाना गाँव का रहने वाला हूँ। मेरे गुरु का नाम बाबा मलंग दास है और उन्होंने ही मुझे इसे लेने के लिये भेजा है" (अर्थात इसे मारकर इसकी आत्मा को ले जाऊं)

जैन साहब ने उससे पूछा, "....फिर तुमने इसे मारा क्यों नहीं ?"

वह बोला,

"मैं इसे मार तो देता पर मैं मजबूर हूँ क्योंकि इसने गुरुजी का कड़ा पहना हुआ है। इसके हाथ से आप यह कड़ा उतरवा दो, उसके बाद यह एक से दस तक की गिनती भी नहीं गिन सकेगा और मर जायेगा। यह मेरी गॉरन्टी है।"

तब जैन साहब ने उससे उसके गुरु के बारे में पूछा तो उसने अपने गुरु में अपनी पूर्ण श्रद्धा प्रकट की। तब जैन साहब ने दीवार पर लगे गुरुजी के रुप की तरफ इशारा करते हुए उनके बारे में पूछा।

जैसे ही उसने गुरुजी के रुप की तरफ देखा, वह जोर से उछला और अपना सन्तुलन खो बैठा और उसने कहना शुरु किया,

"इनकी क्या बात करें इनके तो सहस्त्रों नेत्र हैं और इनका एक-एक नेत्र ब्रह्माण के पार देख सकता है। इनकी

तो क्या कहूँ, इनके तो शिष्य भी जब कहीं से निकलते हैं तो उनके पीछे लाखों आत्माऐं घूमती हैं कि कहीं वे कुछ खा रहे हों तो गलती से भी कहीं उनकी जूठन नीचे गिर जाये तो वे उठाकर खा लें ताकि उनका भी कल्याण हो जाये।"

गुरूजी की ऐसी व्याख्या तो कोई सिद्ध पुरुष ही कर सकता है, जैसी सैंगर के शरीर में स्थित आत्मा ने की।

आपकी महानता का जिक्र कैसे करूं.....?

हे गुरूदेव......

उन्होंने अपने शिष्य की आँखों में देखा और कहना शुरु किया, "मैंने तुम्हें इन्सान से भगवान बना दिया और तुम वही संसारी इच्छाओं से घिरे हुए हो।"

139. जब गुरुजी ने अपने शिष्य आर. सी. मल्होत्रा जी के अन्दर छिपी धन की चाहत को समाप्त कर दिया।

स्वयं की भावनाओं पर नियन्त्रण और अपनी इच्छाओं को सदैव सम्पूर्णतयाः वश में रखने वाले गुरुजी, अपने शिष्यों को बहुत प्यार करते थे। वे उन्हें भी अपने जैसा बनाना चाहते थे। यह एक अनूठा कार्य था लेकिन आसान नहीं था। वे रोज़ाना उनके व्यवहार और आदतों और उनकी कमियों को देखते और उन्हें दूर करने का कार्यक्रम बनाते थे। उनका तरीका बिलकुल अनोखा था। उसके लिए वे किसी एक शिष्य को चुनते, उसकी कमज़ोरी को निशाना बनाते और ठीक उस पर वार करते, जिसमें गलती होने की कोई सम्भावना नहीं होती थी।

इसी तरह की एक घटना सन् 1980 में हुई जो इससे पहले कभी नहीं सुनी होगी। इस बार गुरूजी ने अपने प्रारम्भिक शिष्य आर. सी. मल्होत्रा जी को चुना। उन्होने उनकी कमज़ोरी देखी कि उन्हें धन से बहुत लगाव था।

एक दिन गुरूजी ने उन्हें अपने कमरे में बुलाया और उन्हें लॉटरी का टिकट ख़रीद कर लाने के लिए कहा। इसके लिए उन्होंने टिकट के आख़िरी दो अंक भी बताये। अतः मल्होत्रा जी तुरन्त केरल राज्य लॉटरी के आफिस में गये और बताये गये अन्तिम दो अंको वाली टिकट के लिए डीलर से कहा। डीलर ने उन्हें एक नई किताब में से उन दो अन्तिम अंको वाली टिकट निकाल कर दे दी। मल्होत्रा जी ने टिकट देखी, जो एक रुपये की थी, ख़रीदी और गुरूजी को बता दिया।

कुछ दिनों के बाद गुरूजी ने उन्हें बुलाया और कहा कि मुझे वह टिकट दिखाओ। आज उस लॉटरी का नतीज़ा आया है। गुरूजी ने अख़बार उठाया और मल्होत्रा जी को टिकट पकड़ने तथा उसका नम्बर मिलाने को कहा। मल्होत्रा जी खुःशी से उछले और बोले, "गुरूजी, हम लॉटरी का 50,000/- रुपये का दूसरा इनाम जीत गये हैं।" गुरूजी ने भी खुःशी का इज़हार किया और उनके हाथ से टिकट ले ली, देखने के लिए।

टिकट अपने हाथ में लेने के बाद फाड़कर उसके दो हिस्से किये और एक हिस्सा मल्होत्रा जी को देते हुए बोले, "लो बेटा, यह आधी टिकट तुम्हारी है और आधी मेरी। क्योंकि इसे ख़रीदने के लिए, पचास-पचास पैसे हम दोनों ने दिये थे।"

मल्हौत्रा जी को गुरूजी से ये उम्मीद नहीं थी। अतः वह ज़ोर से चिल्लाये, "गुरूजी, ये आपने क्या किया...?" वे परेशान होकर दुबारा बोले, "आपने 50,000/- रुपये पर पानी फेर दिया, गुरूजी। इतनी बड़ी रकम और आपने उसे कूड़ेदान में फैंक दिया।"

अब गुरूजी की बारी थी। वे एकदम गम्भीर व शान्त थे। उन्होंने अपने शिष्य की आँखों में देखा और कहना शुरु किया, "मैंने तुम्हें इन्सान से भगवान बना दिया और तुम अभी तक वही संसारी इच्छाओं से घिरे हुए हो...?"

मल्हौत्रा जी को अहसास हुआ और समझ में आ गया कि गुरूजी क्या चाहते हैं।

यह है एक अनकहा तरीका, जो सिर्फ गुरूजी का है और वो ही इस तरह से कर सकते हैं। ऐसा प्रेक्टीकल उदहारण कि इतनी बड़ी रकम को क्षण भर में काट कर ज़ीरो कर देना सिर्फ अपने शिष्य को उसकी इच्छाओं से ऊपर उठाने के लिए.....!!

आफरीन गुरूदेव.... आफरीन....!!

मैं समझ सकता हूँ कि 1980 में वह 50,000/- रुपये की राशि तीस सालों में, अब तक कई गुना होकर उसकी कीमत कई लाखों में होती।

यही रुप है संसार के सर्वोच्च गुरू
...मेरे गुरूजी का।।

असंख्य साष्टाँग प्रणाम हैं

....हे मेरे महागुरूदेव

गुरुजी को सोचने की ज़रुरत नहीं थी। वह तो स्वयं विचारों के स्वामी हैं। गुरुजी, आप इस वर्तमान युग में 'प्रभुता के प्रभु' हैं।

140. जब मेरे ड्राईवर ने कहा कि कार में जिन्दा साँप है तो गुरुजी ने बिना समय लगाये सच्चाई का पता लगा लिया।

शायद सन् 1980 की बात है। मैं नहा रहा था कि अचानक मेरी पत्नी ने दरवाज़ा खटखटाया। असल में वह डर गई थी और यह जानकर सन्तुष्ट होना चाहती थी कि मैं ठीक तो हूँ ना। मेरे जवाब देने पर वह निश्चिंत होकर बोली, "पता चला है कि जो कार आप कल्ब लेकर गये थे, उसमें साँप था।"

मुझे याद नहीं कि मैं डर गया था या फिर मैंने इस घटना को साधारण रुप से लिया। लेकिन मैंने अपने ड्राईवर को उसे बाहर फैंकने के लिये कह दिया।

अपने शोरुम जाते समय मैं साँप के बारे में सोचता जा रहा था। रास्ते में मैंने ड्राईवर से कहा कि वह कार कर्ज़न रोड पर स्थित, गुरूजी के ऑफिस की तरफ मोड़ ले। जैसे ही मैंने गुरूजी को साँप के बारे में बताया तो वे तुरन्त बोले,

"नहीं बेटा, इन दिनों में साँप तो
तेरे सामने आ ही नहीं सकता।"

फिर उन्होंने ड्राईवर से पूछा तो उसने पुराने तौलिये में लिपटा हुआ साँप दिखाया। गुरूजी ने उसकी तरफ देखा और आदेश दिया कि वह उसे नज़दीक की सूखी नाली में फैंक दे।

करीब एक हफ्ते के बाद गुरूजी कनॉट प्लैस में सीताराम जी के ऑफिस के सामने खड़े थे। देर शाम का समय था और उनके साथ उनके कुछ अन्य शिष्य, जिनमें सीताराम जी, आर. सी. मल्हौत्रा जी और आर. पी. शर्मा जी तथा कुछ और शिष्य भी सड़क के किनारे खड़े हुए थे। वहाँ का माहौल कुछ ऐसा था कि गुरूजी, मल्हौत्रा जी को किसी गलती के कारण डाँट रहे थे (क्या हुआ था, मालूम नहीं) परन्तु हम सब गुरूजी के इस मूड को देखकर सहमे से खड़े, गुरूजी के तरफ देख रहे थे।

एक सैकिण्ड़ से भी कम समय में वे उत्तेजित होकर मेरे ड्राईवर की तरफ मुड़े और कहने लगे---

"इधर आ ओय, कितने का खरीदा था साँप...?"

वह भी भौंच्चका सा रह गया। उसे कुछ नहीं सूझा और वह सच्चाई बताते हुए बोला, "...तीन रुपये का बापू।"

गुरूजी ने पूछा---- "क्यों किया तुमने ऐसा... ?"

वह बोला,"मज़ाक किया था बापू।"

गुरूजी बोले---

"अगर पुन्चु या कोई दूसरा बच्चा कार चला रहा होता और उसके सामने अचानक वो साँप आ जाता, तो वह डर कर अपना सन्तुलन खो देता और एक्सीडेन्ट हो जाता...! तो....?"

वे आगे बोले,----

"तूने समझा था कि मुझे पता नहीं..? तुम मेरे शिष्य की सेवा करते हो इसलिए तुम्हें बक्श दिया मैंने। नहीं तो, उसी साँप से तेरे को डसवा सकता था। हालाँकि उसके दाँत नहीं थे।"

ड्राईवर और हम सब दंग रह गये और आश्चर्यचकित होकर समझने की कोशिश करने लगे कि गुरूजी ने एक सैकिंड में उस छुपी हुई सच्चाई को कैसे बाहर निकलवा लिया।

गुरूजी को सोचने की ज़रुरत नहीं थी।
वह तो स्वयं् विचारों के स्वामी हैं।

गुरूजी, आप इस वर्तमान युग में
प्रभुता के प्रभु हैं।
साष्टाँग प्रणाम गुरूजी ।

गुरूजी सन्नी के चेहरे की तरफ देखे जा रहे थे। फिर उसमें से थोड़ी सी मात्रा उन्होंने उठाकर सन्नी को दी और उसे खाने का आदेश दिया.....

141. जब सन्नी कत्याल की पुरानी सिरदर्द गुरूजी के एक अद्‌भुत क्रिया से बिलकुल ठीक हो गई।

गुड़गाँव का सन्नी कत्याल, जो बिट्टू कत्याल का छोटा भाई है, बहुत लम्बे समय से सिरदर्द से परेशान था। उसे जल्दी-जल्दी सिरदर्द होती थी और गुरूजी उसको ठीक कर देते थे। लेकिन उसे सिरदर्द की समस्या बार-बार होती थी। यह उसके लिए एक गम्भीर समस्या बन गयी थी जोकि लम्बे समय से चली आ रही थी। करीब-करीब हर पन्द्रह दिनों में वह गुरूजी के पास आता और अपने सिरदर्द को ठीक करने की प्रार्थना करता था।

एक दिन गुरूजी ने सभी बच्चों को बुलाया और उन्हें एक फिल्म देख कर आने के लिये कहा। सन्नी भी उन्ही बच्चों में से एक था। जब वह भी और बच्चों के साथ फिल्म देखने के लिए निकला और गुरूजी के साथ वाले छोटे कमरे तक पहुँचा ही था कि वहाँ से वापिस गुरूजी के पास आ गया। सन्नी विनय पूर्वक प्रार्थना करने लगा-- "गुरूजी, आप मेरी सिरदर्द खत्म कर दो ना.. हमेशा के लिए। मैं बहुत परेशान हो गया हूँ।"

उस समय गुरूजी, अपनी प्रिय मुद्रा में खड़े थे। (अपने शरीर का सम्पूर्ण भार अपनी बाँयी टाँग पर और बाँया हाथ अपनी कमर पर रखे हुए तथा अपने सुन्दर चेहरे पर दिल छू लेने वाली मुस्कान लिए हुए) उन्होंने अपने जेब से घुग्गी निकाली, थोड़ी सी अपनी बाँयी हथेली पर रखी और दाहिने हाथ के अंगूठे से उसे मसलना शुरु कर दिया।

गुरूजी, सन्नी के चेहरे की तरफ देखे जा रहे थे। फिर उसमें से थोड़ी सी मात्रा उठाकर सन्नी को दी और उसे खाने का आदेश दिया.....

और ...सन्नी वह खा गया।

कुछ ही मिनट बीते कि वह कुछ परेशान होने लगा। वह अपने आपको असहाय सा महसूस करने लगा और दौड़ता हुआ वॉश-बेसिन की तरफ गया तथा उल्टियाँ करने लगा।

एक......, दो......., तीन........., और

फिर और......।।

वह तब तक उल्टियाँ करता रहा, जब तक उसके पेट में जो कुछ भी था, बाहर नहीं आ गया।

.........और काम हो गया।

उसके बाद सन्नी अपनी साधारण अवस्था में आ गया और अपने आप को ठीक महसूस करने लगा।

एक महत्वपूर्ण व अविश्वस्नीय बात यह हुई कि उस दिन के बाद उसको सिरदद्र बिलकुल नहीं हुआ।

क्या अद्‌भुत इलाज़ था....!!
बिलकुल समझ से बाहर....!!!
....हे गुरूदेव, सिर्फ आप ही ऐसा कर सकते हैं!!

अचानक मेरे स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। मेरा बिज़नेस बढ़ रहा है और अब पहले से लगभग तिगुना हो गया है।

142. गुरूजी की तस्वीर स्कूल प्रिंसीपल के ऑफिस की दीवार पर लगी थी लेकिन वह गुरूजी के बारे में कुछ नहीं जानता था।

एक दम्पति अपने बच्चे के दाख़िले के लिये एक स्कूल में गये। जब वह प्रिंसीपल के ऑफिस में पहुँचे तो दीवार पर लगी गुरूजी की तस्वीर को देख कर प्रसन्न हो गए।

वह दम्पति गुरूजी के भक्त थे। महिला के पति ने प्रिंसीपल से पूछा कि आपको गुड़गाँव गुरूजी के स्थान पर जाते हुए कितना समय हो गया है...? प्रिंसीपल ने उत्तर दिया, "मैं तो वहाँ कभी गया ही नहीं और न ही उसे गुड़गाँव स्थान के बारे में कोई जानकारी ही है।"

आश्चर्य है......!!

वह व्यक्ति बोला, "तो हमारे गुरूजी की यह तस्वीर आपकी इस दीवार पर कैसे...?"

प्रिंसीपल ने घूमकर ऊपर देखा और कहा, "यह तस्वीर...!! यह तस्वीर आपके गुरूजी की है...? यह तो मुझे सड़क के किनारे पर पड़ी हुई मिली थी। एक दिन मैं पैदल जा रहा था कि अचानक मेरी नज़र इस पर पड़ी। कुछ रद्दी के कागजों के साथ जब मैंने इसे देखा तो लगा कि कोई ख़ास व्यक्ति हैं ये, जो मुझे इतना आकर्षित कर रहे हैं। अनायास ही मैंने उठा लिया यह सोचकर कि यह किसी बड़ी दिव्य-आत्मा की तस्वीर है जो गलती से किसी से गिर गई है। मैंने इसे फ्रेम बनवा कर अपने ऑफिस की दीवार पर लगा दिया। लेकिन उसके बाद मैंने अनुभव किया कि मेरा बिज़नेस बढ़ता जा रहा है। आज मेरा स्कूल तीन गुना बड़ा हो गया है। बच्चे बढ़ते ही जा रहे है। लगता तो था कि अवश्य ही यह तस्वीर कोई चमत्कारी है पर मुझे पता आज ही लगा कि गुरूजी हैं ये।"

"इससे अधिक मुझे और कोई जानकारी नहीं है। लेकिन इन्हें प्रणाम करने के बाद ही मेरे दिन की शुरुआत होती है और मैं बहुत खुश हूँ।"

अतः गुरूजी की तस्वीर भी उतनी ही कल्याण-कारी है जितने कि गुरूजी स्वयं ।।

.........आफ़रीन

जब यह शब्द उसके मुँह से निकले कि वह थक गई है तभी अचानक पीछे से उसके कंधे पर किसी का हाथ आया। उसने पीछे घूम कर देखा तो पाया कि पीछे गुरूजी खड़े हैं और कह रहे हैं--"क्यों पुत, इतने में ही घबरा गई।"

143. *जब कृष्ण कुमार साहनी और उसकी पत्नी स्वर्ण से, गुरूजी गोल मार्किट में मिले।*

यह पता लगने के बाद कि गुरूजी, गोल मार्किट में स्थित बक्शी बतरा जी के घर पर हैं, कृष्ण कुमार अपनी पत्नी को साथ लेकर गुरूजी के दर्शन करने के लिये वहाँ गया। कृष्ण कुमार ने बहुत से लोगों से गुरूजी की महानता के बारे में सुन रखा था। जिससे गुरूजी के प्रति, उसके दिल में विश्वास पैदा हो गया था।

वहाँ पहुँचकर वे घर के पास, एक पीपल के पेड़ के नीचे खड़े हुए किसी का इन्तजार करने लगे क्योंकि उसने उन्हें गुरूजी

के दर्शन कराने का वादा किया था। इन्तज़ार का समय खिंचता हुआ दो घण्टे से भी लम्बा हो गया था। जिसका नतीजा यह हुआ कि कृष्ण कुमार की पत्नी स्वर्ण, स्वयं को असहज महसूस करने लगी। वह और अधिक देर वहाँ नहीं खड़ा रहना चाहती थी। अतः उसने अपने पति से वापिस चलने के लिए कहा कि वह थक गयी है और उससे और अधिक इन्तज़ार नहीं हो सकता।

वह पीपल का पेड़, बक्शी जी के घर से कुछ दूरी पर था। जब यह शब्द उसके मुँह से निकले कि वह थक गई है तभी अचानक पीछे से उसके कंधे पर किसी का हाथ आया। उसने पीछे घूम कर देखा तो पाया कि पीछे गुरूजी खड़े हैं और कह रहे हैं--,

"क्यों पुत, इतने में ही घबरा गई।"

उसे बहुत हैरानी हुई और आश्चर्य भी हुआ। वह बोली-- "मुझे उम्मीद नहीं थी, कि मेरे विचार गुरूजी तक इस तरह पहुँच जायेंगे और दूसरा यह कि कैसे और कहाँ से गुरूजी प्रकट हो गये और आकर मेरे कंधे पर हाथ रख दिया।" उसने यह भी कहा-- "मैंने उन्हें उस बिल्ड़िग से बाहर निकलते हुए नहीं देखा।"

एकाग्र मन से आपस में यही बात करते करते वे दम्पति अपने घर चले गये कि उनके साथ ये कैसा चमत्कार हुआ है?

फिर एक दिन ये दम्पति, अपने बहनोई के लिए जो बीमार था और गम्भीर अवस्था में था, गुरूजी का आशीर्वाद लेने गुड़गाँव स्थान पर आये।

स्थान पर पहुँचने पर उन्होंने गुरूजी से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की। लेकिन पूरन ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया। पूरन जो गुरूजी का मुख़्य सेवादार था उसे गुरूजी का ऐसा ही आदेश था कि किसी को भी उनके कमरे में न आने दिया जाये। वे दम्पति मजबूर हो गये और उनके पास और कोई चारा भी नहीं था सिवाय इसके कि स्थान के बाहर इन्तज़ार किया जाये।

उस समय वे अपनी बहन के घर, मरीज़ को लेकर बहुत चिंतित थे। कुछ ही मिनट बीते होंगे कि एक दूसरा सेवादार दौड़ता हुआ आया और उसने गुरूजी का आवश्यक संदेश दिया कि उन्हें तुरन्त अन्दर बुलाया है। जैसे ही उन्होंने अन्दर जाना चाहा तो पूरन ने दुबारा उन्हें रोक दिया। लेकिन दूसरे सेवादार ने पूरन को गुरूजी का संदेश बताया और उन्हें अन्दर जाने की इजाज़त देने को कहा।

जैसे ही उन्होंने गुरूजी को प्रणाम किया तो गुरूजी बोले,

"पुत, जल्दी से चाय का प्रसाद लो और निकल लो, तुम्हारे पास टाईम बिलकुल नहीं है।"

जैसा उन्हें आदेश मिला और वे घर पहुँचे तो पता चला कि वह मरीज़ मृत्यु को प्राप्त हो चुका है और उनकी उपस्थिति घर में बहुत ज़रुरी थी।

गुरूजी उस मरीज़ की मौत का समय जानते थे इसीलिये उन्होंने उनको तुरन्त घर वापिस भेज दिया था।

...हे भविष्य के सम्पूर्ण ज्ञाता, गुरूजी महाराज, मैं आपसे विशेष कृपा की प्रार्थना करता हूँ।

मेरे मान्यवर प्रभु...।।

"तुम्हारी शादी का होना, भगवान की मर्जी थी और तलाक का होना, एक जज का निर्णय जो एक इन्सान है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है भगवान बड़े हैं और मैं उन्ही के निर्णय को मानता हूँ।"

144. जब सेना के जनरल जगदीश अपने बच्चों के लिये कानूनी संरक्षण चाहता था।

एक बार पंजाबी बाग में सेवा करते समय एक खूबसूरत नौजवान मेरे पास आया और मुझसे अकेले में बात करने की प्रार्थना की। उसे अपने साथ लेकर मैं ड्राईंग रुम में चला गया और बात करने के लिये कहा।

उसने मुझे अपने आपको सेना का सेनानायक (Captain) *बताया और मुझे दो बच्चों की फोटो दिखाते हुए कहा कि वह उच्च न्यायालय* (High Court) *में अपने बच्चों के कानूनी संरक्षण* (Legal Custody) *के लिये याचिका* (Petition)

डालना चाहता है और उसके लिये मुझसे आशीर्वाद लेने आया है।

बच्चों के फोटो देखने के उपरान्त मैंने उसे अपनी पत्नी की फोटो भी दिखाने के लिये कहा। मुझे याद आया कि वह महिला भी अपने बच्चों को लेकर स्थान पर आयी थी।

मैंने उस व्यक्ति को दो दिन के बाद, दुबारा आने के लिये कहा और स्वय् गुरूजी के कमरे में इस परिस्थिति से निकलने और आगे का आदेश लेने के लिये चला गया।

एक तरफ वह व्यक्ति, उन बच्चों के कानूनी संरक्षण के अधिकार की बात कर रहा था तो दूसरी तरफ उस महिला को भी, उन्हीं बच्चों के साथ सुः ख से रहने का आशीर्वाद मिल चुका था।

मैंने गुरूजी से पूछा--- "गुरूजी मैं उस व्यक्ति को क्या जवाब दूंगा, जब दो दिन बाद वह मेरे पास आयेगा?"

तो गुरूजी ने कहा..."उसे आशीर्वाद दे देना और 'हाँ' कह देना"

मैंने पूछा---- "लेकिन गुरूजी, उस महिला का क्या होगा, क्या वह अपने बच्चों के बगैर रह पाऐगी...?"

गुरूजी बोले--- "नहीं बेटा, वह अपने बच्चों के साथ ही जायेगी।"

अगले दिन संयोग से वह महिला भी स्थान पर आयी और जैसे ही मेरे सामने बैठी, गुरूजी ने मुझे अपने पूर्ण अधिकार में ले लिया। अब मैं अपने आप को वैसा नही देख रहा था जैसा वास्तव में मैं हूँ। मैं अपने आपको एकदम अलग

सा महसूस कर रहा था। ये मेरे जीवन का एक अभूतपूर्व अनुभव था।

जैसे ही उसने मुझसे आशीर्वाद माँगा, मैंने कहा,

"सदा सुहागिन रहो।"

तभी उस महिला ने अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर करते हुए कहा---

"गुरूजी, आपके आशीर्वाद का अब क्या मतलब..?
मुझे मेरे पति ने तो पहले ही तलाक दे दिया है।"

कुछ देर तक शान्त रहने के बाद मैंने कहा---

"तुम्हारी शादी का होना भगवान की मर्जी थी और तलाक का होना एक जज का निर्णय, जो एक इन्सान है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है, भगवान बड़े हैं और मैं उनके निर्णय को मानता हूँ। तो मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। यदि तुम्हारा पति तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को लेने आये, तो 'हाँ' करते हुए खुःशी-खुःशी अपनी नई जिन्दगी शुरु कर देना।"

मैंने उसे आगे आदेश दिया कि वह कल एक सुन्दर सी साड़ी पहनकर और सम्पूर्ण साजो-श्रंगार के साथ, जैसा कि एक सुहागिन होती है, स्थान पर आये।

<u>अगले दिन एक आश्चर्यपूर्ण घटना घटी</u>।

मैंने उस व्यक्ति को बच्चों के संरक्षण के अधिकार का आशीर्वाद दे दिया, लेकिन उनकी माँ के साथ। उसने परेशान होकर पूछा, यह कैसे मुमकिन हो सकता है..? ऐसी बहुत सी निन्दनीय बातें, जो तलाक के समय उसके प्रति उस महिला ने कही थीं मुझे बताईं और यह भी बताया कि उसने कहा था कि वह उसके साथ किसी भी हाल में नहीं रह सकती।

...और फिर उसका अपना परिवार भी इसके लिए तैयार नहीं होगा। मैंने उसे बताया, कि कुछ दिन पहले गुरूजी ने मुझे, यही आदेश दिया था तुम्हारे लिए।

....और आख़िर, वो मान गया।

फिर जैसा गुरूदेव ने आदेश दिया, वह स्थान पर आया, अपनी पत्नी की बाँह पकड़ी और उससे कहा----

"हम सबके लिए घर चलो"

क्या दिव्य संयोग था,

कैसी रचना थी यह।

विशेष रुप से योजना बनायी थी

स्वयं् गुरूदेव ने।

एक टूटा और बिख़रा हुआ परिवार, जिसमें एक पति-पत्नी के अलावा एक बेटा और एक बेटी, स्थान से सीधा एअरपोर्ट और वहाँ से अपने नये घर में अपनी नई जिन्दगी बिताने के लिए चल दिए ।

वह सेनानायक बाद में पदोन्नत होकर मेजर बना और पूना में सेवारत हुआ। उसका बेटा और बेटी ने अच्छी संस्था में शिक्षा ग्रहण की। वे कई वर्षो बाद अपने माता-पिता के इस तरह 'दुबारा मिलन' को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

क्या कृपा है गुरूजी की...!! सचमुच ही एक अविश्वस्नीय और अनोखी घटना...। एक कानूनी तौर पर तलाकशुदा दम्पति अपनी सुःखद शादीशुदा जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दे रहे हैं।

बार-बार प्रणाम है......

....हे गुरूदेव ।।

“कल सुबह ये मुहासा नज़र नहीं आयेगा, लेकिन आत्महत्या का ख्याल दिमाग में कभी नहीं आना चाहिए। ...वादा करो।”

145. जब गुरूजी ने एक रात में ‘वीरजी’ की भाँजी के चेहरे का मुहासा दूर कर दिया।

गुरूजी गुड़गाँव में थे और अचानक एक गम्भीर समस्या मुम्बई में गुरूशिष्य ‘वीरजी’ के परिवार में आ गयी। ‘गुरूशिष्य वीरजी’ की भाँजी ने आत्महत्या करने की ध मकी दे डाली थी। वीरजी ने गुरूजी से प्रार्थना की कि जल्दी आईए और उसके परिवार की रक्षा कीजिए....।। गुरूजी, तुरन्त वहाँ पहुँचे और लड़की को अपने कमरे में बुलाया। बड़े प्यार से गुरूजी ने उससे पूछा,----

‘की गल ऐ पुत’ (क्या बात है बेटा)

उस लड़की ने सुबकते हुए कहना शुरु किया---“गुरूजी, कल मेरी सगाई है और मेरे गाल पे देखो ये मुहासा है, मैं

मेकअप कैसे करुंगी....!!"

वैसे, साधारण तौर पर देखा जाए तो यह कोई बड़ी समस्या नहीं थी। लेकिन उस लड़की ने इसे इतनी गम्भीरता से लिया कि उसकी बरदाश्त के बाहर था। इस बात को लेते हुए उसने कह दिया कि जब तक ये मुहासा ठीक नहीं होगा, वह सगाई नहीं करेगी।

पूरा परिवार उसकी इस जिद्द के सामने अपने आपको असहाय महसूस कर रहा था इसीलिए उन्होंने अपनी रक्षा हेतु गुरूजी से प्रार्थना की थी।

अत्यन्त कोमल ह्रदय वाले गुरूजी, अपने सभी कार्यक्रम रद्द करके उनके घर मुम्बई पहुँच गए।

गुरूजी ने अपनी उंगली से मुहासे को छूआ और कहा--- ***"कल सुबह ये मुहासा नज़र नहीं आयेगा, लेकिन आत्महत्या का ख़्याल दिमाग में कभी नहीं आना चाहिए। ...वादा करो।"*** *.....उस लड़की ने 'हाँ' बोल दी।*

मुम्बई वालों के लिए अद्भुत और अचरज की बात यह थी कि अगली सुबह उसके चेहरे पर मुहासा नहीं था। बाकायदा ढूंढने पर भी नज़र नहीं आया।

परिवार के अतिरिक्त मुम्बई के भक्तगण भी अपनी ज़िन्दगी में इस अविश्वस्नीय चमत्कार को देखकर मंत्रमुग्ध हो गये।

एक बहुत बड़ा गुलाबी रंग का मुहासा, आठ घण्टे के अन्दर ही अदृश्य हो गया। कैसे.......?

कृप्या गुरूजी आप ही बतायें.....कि ***...कैसे?***

आप रब हो गुरूजी
.....मेहर करो

गुरूजी ने कहा, "नहीं, इसके अंग को कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा। ...जख्म है, चौबिस घण्टे में ठीक हो जायेगा।"

146. जब गुरूजी ओ. पी. आहूजा से बोले कि वे इस व्यक्ति का इन्तजार पाँच साल से कर रहे थे।

ओ. पी. आहूजा, आयकर विभाग में एक अधिकारी के पद पर कार्य करता था। वह गुरूजी के पास आया और बोला, "गुरूजी, मेरे विभाग में एक ऑफिसर है जिसका नाम आई. डी. शर्मा है। वह मुझे बहुत परेशान करता है। मैं चाहता हूँ कि वह मेरे नियन्त्रण में आ जाये ताकि ऑफिस का माहौल ठीक हो जाये।"

गुरूजी बोले, "तुम अपनी आँखें बन्द करो और उसका चेहरा याद करो।"

जैसे ही आहूजा ने ऐसा किया, गुरूजी बोले---

"अरे इस व्यक्ति का तो मैं पिछले पाँच साल से इन्तजार कर रहा हूँ, तुम इसे यहाँ ले आओ।"

आहूजा ने कहा, "महाराज वह आपके पास आने के लिए कभी तैयार नहीं होगा।" परन्तु गुरूजी बोले, वह आयेगा।

और फिर समय बीतता गया---

एक बार जब आई. डी. शर्मा, अपने छोटे से बेटे को गोद में लेकर बैठा हुआ था तो बहुत सारी गर्म-गर्म चाय बच्चे के ऊपर गिर गई और उसका कमर से नीचे का हिस्सा, आगे से बुरी तरह से जल गया।

तुरन्त औषधीय चिकित्सा (Medical Aid) का सहारा लिया गया लेकिन बहुत दिनों के इलाज के बाद डॉक्टरों ने अपने हाथ खड़े कर दिये। उन्होंने कहा कि इस बच्चे का जनन अंग, पूरी तरह से ख़राब हो गया है।

संयोग से एक महिला, जिसका नाम सरोज बाला है और उनके परिवार से काफी नजदीकी रखती थी, वहाँ आई। उस महिला ने इसके लिए उन्हें, गुड़गाँव वाले गुरूजी के पास जाने और उनसे प्रार्थना करने की सलाह दी। उसने उन्हें पूर्ण आश्वासन दिलाया क्योंकि वह स्वयं् भी पिछले छः सालों से उनके पास जाती थी और उनके प्रति उसकी भरपूर आस्था थी। उसने कहा कि गुरूजी इस बच्चे को अवश्य ठीक कर देंगे। इसका उसे पूर्ण विश्वास है।

लेकिन आई. डी. शर्मा ने उस महिला को मना कर दिया और दृढ़ता पूर्वक कहा कि यह बीमारी ठीक करना डॉक्टरों

का काम है और जब तक वो सलाह नहीं देंगे, मैं इसे कहीं नहीं ले जाऊंगा।

वह महिला चली गई लेकिन उसे शर्माजी का इस तरह का रुखा व्यवहार पंसद नही आया। लेकिन उस महिला ने एक बार फिर कोशिश की और ज़ोर दिया कि इस मासूम बच्चे को एक बार वहाँ ले जाओ क्योंकि यह उस बच्चे की ज़िन्दगी का सवाल था।

तब आई. डी. शर्मा ने इस विषय पर दुबारा सोचा और किसी तरह गुडगाँव जाने और गुरुजी से मिलने को तैयार हो गया।

जैसे ही शर्माजी स्थान पर पहुँचे, उन्हें समझ में ना आने वाला अनुभव हुआ। उन्हें स्थान के गेट पर ॐ दिखा। वह ॐ गोल-गोल घूमने लगा। यह देखकर वे भ्रमित हो गये। उन्होंने अपने आपको संभाला और देखा कि दीवारों और छत पर भी विभिन्न रंगों से सुसज्जित बहुत से ॐ हैं।

वह अपने आप को एक अजीब से धर्म संकट की स्थिति में महसूस करने लगे। उसने उस बच्चे से पूछा कि क्या वह भी ॐ देख रहा है। बच्चे ने उन्हें बताया कि हाँ पापा, मैं भी चारों तरफ घूमते हुए ॐ देख रहा हूँ।

जब बच्चे ने भी एक साक्ष्य दे दिया कि वह भी ॐ देख रहा है तो शर्मा जी का भम्र दूर हुआ और शंका भी मिट गई कि वह सही देख रहे हैं। तभी एक आवाज गूंजी, माताजी आ

रही हैं और स्थान पर सभी लोगों को आशीर्वाद देंगी। शर्माजी तथा वह बच्चा दोनों आवाज सुनकर, स्थान पर खड़े हो गये। क्योंकि वे जानते नहीं थे कि माताजी कौन हैं......! और गुरूजी कौन......!!

गुरूजी से मिलने से पहले शर्माजी ने किसी संत-महात्मा या गुरू के पैर नहीं छुऐ थे। वह अपने पिता और बड़े भाई को सम्मान देने के अलावा किसी और के पैर नहीं छूते थे।

शर्माजी ने बच्चे को उठाया और गुरूजी के पास ले गए और गुरूजी से बात की।

गुरूजी ने पूछा---- ***'की गल ऐ पुत?'*** (क्या बात है बेटा)

शर्माजी ने गुरूजी को पूरी बात बतायी और उस बच्चे के जनन अंग के बारे में बताया।

गुरूजी ने कहा---- ***"नहीं, इसके अंग को कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।***
...जख़्म है, चौबिस घण्टे में ठीक हो जायेगा।"

शर्माजी को यह बात हज़म नहीं हुई और वे सारी रात सो नहीं सके। वे अगले दिन चार बजने का इन्तजार करते रहे कि कब जख्म अदृश्य हो ....और वह देखे!!

पट्टियाँ खोलने के लिए डॉक्टर को बुलाया गया। यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था खासतौर पर डॉक्टर के लिये-----

.......जख़्म सूख चुका था।

डॉक्टर अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। कल का जख़्म आज दिखाई भी नहीं दे रहा था। ....ये कैसे सम्भव हुआ? .....कौन है जिसने ये ठीक किया? अब शर्माजी के दिमाग की हालत का अन्दाजा तो वही लगा सकता था जिसे भगवान पर विश्वास हो।

और अब........??
अब क्या.....

अब शर्मा जी दौड़े गुरूजी से मिलने ...और पहुँचे स्थान पर। लेकिन गुरूजी से नहीं मिल सके। जिस सेवादार ने उन्हें बताया था कि गुरूजी वहाँ नहीं हैं वह उसे अपना संदेश देते हुए बोले, "ठीक है, मैं कल फिर आऊँगा।"

कल और एक बार फिर कल। परन्तु शर्माजी को गुरूजी के दर्शन करने का सौभाग्य नहीं मिल पाया। पाँच-छः दिन से ज़्यादा का समय निकल गया। आख़िर वह समय आ ही गया कि उसे गुरूजी ने दर्शन दे दिये।

गुरूजी ने कहा,

"मैं तेरा इन्तजार पाँच साल से कर रहा हूँ और क्योंकि तू जिद्द में था, इसलिए मैंने ही गर्म गर्म चाय गिराई थी तुझे बुलाने के लिए....। अब तू आ गया है, बच्चे को कुछ नहीं होगा और बच्चे के अंग को भी कुछ नहीं होगा। वह अपनी शादी-शुदा ज़िन्दगी सुः ख से बितायेगा।"

आई. डी. शर्मा हक्का बक्का रह गया। उसने गुरूजी से पूछा--- "...अब आगे मेरे लिये क्या आज्ञा है?"

गुरूजी बोले---- "सेवा करो, यही तुम्हारी भक्ति है।"
बाकी मैं कर लूंगा।

कुछ सुनहरी ऋतुऐं बदली, साल बीते, वह बच्चा धीरे-धीरे बड़ा हो खूबसूरत नौजवान बन गया। उसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की और उसकी शादी हुई। आज वह कनाड़ा में बस गया है और सफलतापूर्वक अपनी पत्नी व दो बच्चों के साथ खुशहाल ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा है।

.......तो ये है गुरूदेव की महिमा।।
महिमा एक आध्यात्मिक शब्द है। जो सिर्फ भगवान को सम्बोधित करने के लिए ही प्रयोग किया जाता है। मैं समझता हूँ कि गुरूजी के लिए यह बिलकुल उपयुक्त है।

ऑफरीन........
........हे गुरूदेव।

......आपके पवित्र चरणों में
लाखों-लाखों साष्टाँग प्रणाम हैं।

बाद में हमें गुरूजी के पर्स के बारे में पता चला कि उसमें क्या ख़ासियत है कि उसमें से किसी भी समय, कितने भी पैसे और किसी भी मुद्रा में निकालना उतना ही आसान है जितना एक साधारण व्यक्ति के पर्स से एक रुपये का नोट निकालना।

147. जब शिष्यों ने लंदन में ख़रीदारी की और गुरूजी ने पाउन्ड्स में उसका भुगतान किया।

गुरूजी अपने शिष्यों, जिनमें श्री आर. पी. शर्मा, सबरवाल, सरदार बक्शी तथा कुछ और भी शिष्य थे, को लेकर लंदन गये हुए थे। एक डॉक्टर जो ब्लैक पूल में रहता था, उसके बड़े भक्तिभाव-पूर्ण निमन्त्रण पर गुरूजी उसके घर में दो दिन के लिए ठहरे थे। डॉक्टर ने गुरूजी से प्रार्थना की, कि वे सभी को कुछ इल्कट्रोनिक वस्तुओं की ख़रीदारी करने की आज्ञा दें जो भारत में मुश्किल से मिलती हैं।

अतः सब लोगों ने कुछ ख़रीदारी करने का प्रोग्राम बनाया

और डॉक्टर उन सबको साथ लेकर वहाँ के एक मशहूर स्टोर में गये और उन लोगों ने कुछ इल्क्ट्रोनिक वस्तुऐं, जैसे टी.वी., वी.सी.आर. के साथ-साथ और बहुत कुछ सामान भी ख़रीदा जो उस समय तक भारत में उपलब्ध नहीं था।

डॉक्टर ने खरीदे गये सामान की कीमत का अन्दाज़ा लगाया जो उसकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा था। उसने उस स्टोर के मालिक से कहा कि वह किसी अपने आदमी को भेजकर उसके घर से पैमेन्ट मंगवा ले। वह डॉक्टर चाहता था कि जो सामान उन लोगों ने ख़रीदा था उसके बिल का भुगतान वह करे क्यों कि वह यह भी जानता था कि भारत सरकार केवल 500 डॉलर/प्रति व्यक्ति विदेश यात्रा पर लाने की ही अनुमति देती है। डॉक्टर उन सभी को खुः श करना चाहता था जो गुरूजी के साथ आये थे।

उस समय उसे इतना अन्दाज़ा नहीं था कि वे लोग इतनी ख़रीद़ारी करेंगे। लेकिन गुरूजी जानते थे कि जो लोग उसने जुड़े हुए हैं या उनके आस-पास भी हैं उनके दिल और दिमाग में क्या चल रहा है।

गुरूजी बीच में ही हस्तक्षेप करते हुए बोले, “नहीं बेटा, पैमेन्ट अभी हो जाएगी।” गुरूजी ने अपनी पिछली जेब से पर्स निकाला और दुकानदार को गिनकर पैसे दे दिये। उन्होंने सारे पैसे पाउन्ड्स में दिये।

आश्चर्य... !!

गुरूजी हमारे साथ ही भारत से आये थे और डॉलर में पैसे लाये थे और दिल्ली में ये सारी विदेशी मुद्रा, सरदार बक्शी

ने ही एकत्र की थी परन्तु डॉलर में, ना कि पाउन्ड्स में। पैमेन्ट उन्होंने पाउन्ड्स में की और वह भी हज़ारों पाउन्ड्स में। सरदार बक्शी के अनुसार उसने पाउन्ड्स में विदेशी मुद्रा नहीं ली थी।

बाद में हमें गुरूजी के पर्स के बारे में पता चला कि उसमें क्या ख़ासियत है कि उसमें से किसी भी समय, कितने भी पैसे और किसी भी मुद्रा में निकालना उतना ही आसान है जितना एक साधारण व्यक्ति के पर्स से एक रुपये का नोट निकालना।

- *कैसे डॉलर्स पाउन्ड्स में बदले। यह आज भी एक रहस्य है और*
- *कैसे इतनी बड़ी पैमेन्ट हो गई। जबकि भारत में विदेशी मुद्रा के लिए एक तय सीमा है।*

......इसका जवाब तो सिर्फ गुरूजी ही दे सकते है।
...... और वो भी तब यदि वे चाहें।।

गुरूजी ने मुझे ताना मारने के (Taunting Way) *अन्दाज़ में कहा, "हाँ, हाँ, जाओ, गाने गाओ, जबकि हज़ारों दुःखी लोग लाईनों में खड़े हैं।"*

148. *जब बड़े वीरवार के दिन मध्यान्तर के दौरान रवि त्रेहन के लिए गाना गाने के बाद, मैं बोल भी नहीं सका।*

अस्सी के दशक की शुरुआत की बात है। गुड़गाँव स्थान पर असंख्य लोग थे और सम्पूर्ण वातावरण में सिर्फ एक ही आवाज सुनाई दे रही थी और वह थी 'गुरूजी'।

कारों के शीशों पर स्टिकर लगे थे-- ***एक ही सत्य---'गुरूजी'*** *सम्पूर्ण वातावरण एक ही शब्द से गूंज रहा था 'गुरूजी'। स्थान के क्या बाहर और क्या अन्दर, इसी शब्द का भरपूर नशा सा छाया हुआ था।*

स्थान हाल में सेटी पर तीन शिष्य बैठे थे और उनके समक्ष

लोग कॉरपेट पर बैठे, उन्हें अपनी समस्यायें बता रहे थे और वे शिष्य लौंग, इलायची, जल आदि और जो कुछ चाहिए था, उन्हें दे रहे थे।

कुछ समय सेवा करने के उपरान्त, उन तीनों शिष्यों की जगह दूसरे तीन शिष्यों को सेवा दी जाती और इसी तरह उन शिष्यों की जगह भी कुछ समय की सेवा के बाद, अगले तीन शिष्य उनकी जगह ले लेते थे तथा उन शिष्यों को विश्राम दे दिया जाता। विश्राम का यह समय लगभग दो घण्टे का होता था।

ऐसे ही एक बड़े वीरवार के दिन, हम तीनों शिष्य जिनमें मैं तथा मेरे अलावा रवि त्रेहन भी थे, उठे और बाहर विश्राम के लिए चले गये तथा चाय का स्वादिष्ट प्रसाद लिया।

रवि को संगीत और कविताओं से बहुत लगाव है और मुझे भी गज़ल गायकी बहुत पसन्द है। तभी रवि ने मुझे, उसके लिये गज़ल गाने को कहा क्योंकि उस समय विश्राम का समय था। थोड़ी ना-नुकुर के बाद, मैं गज़ल सुनाने को राज़ी हो गया और मेन गेट के सामने वाली सीढ़ियों में आ गया। क्योंकि वह एक एकान्त सी जगह थी जहाँ अक़्सर कोई आता जाता नहीं था। वहाँ मैंने रवि त्रेहन को एक गज़ल सुनाई---

अगले दिन सुबह जब मैं उठा तो मेरा गला बन्द था औरं मैं बोल नहीं पा रहा था। गुरूजी के पास पहुँचा और अपने बोलने की समस्या बतायी, "गुरूजी, मेरा गला बैठ गया है मुझसे बिलकुल बोला नहीं जाता।"

गुरूजी ने मुझे ताना मारने के (Taunting Way) *अन्दाज़ में कहा, "हाँ, हाँ, जाओ, गाने गाओ, जबकि हज़ारों दुः खी लोग लाईनों में खड़े हैं।"*

मैंने विनय पूर्वक प्रार्थना की, "पर गुरूजी हम तो सेवा से निर्मुक्त (Free) *हो चुके थे और रवि ने कहा कि एक गज़ल सुना दो फिर हम सीढ़ियों के पास उस जग़ह गये थे जहाँ कोई नहीं जाता।"*

"....पर गुरूदेव, आपको कैसे पता चला,
.....आप तो बाहर लोगों को आशीर्वाद दे रहे थे?"

गुरूजी ने कहा, "बेटा, अगर कोई दुः खी इन्सान वहाँ आ जाता तो क्या सोचता कि हम जिस भगवान से माँगने आये हैं, वह तो बैठा गाने गा रहा है....!!

जरा विचार करो कि उसके दिल पर क्या गुज़रती.....?
क्या होता उसके विश्वास का...?

क्या यही डिज़ाईन बनाया है मैंने तुम्हारे रुप का...? ऐसा बनाया है मैंने तुम्हें... कि अब मैं देखूं कि तुम कैसा गा सकते हो...?

बड़ी शर्म आयी मुझे.... अपनी गलती का एहसास हो गया और क्षमा माँगने लगा।

...लेकिन गुरूजी चुप थे।

ये सब होने के बाद गाना तो दूर की बात है, मैं ठीक से बोल भी नहीं पा रहा था। मैं सिर्फ रुक-रुक कर कानाफूसी

की तरह से ही बात कर पा रहा था और इसी तरह करीब तीन-चार महीने बीत गए.. और ऐसा ही चलता रहा।

फिर एक दिन गुरूजी ने मुझे और के. सी. कपूर तथा कई अन्य शिष्यों को अपने साथ कश्मीर चलने का आदेश दिया। रास्ते में के. सी. कपूर ने मुझसे कुछ पूछा और मैंने उसी तरह फुसफुसाते हुए जवाब दिया। इस पर वह चिढ़कर बोला कि तुम गुरूजी से अपनी आवाज़ ठीक क्यों नहीं कराते...? मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं था। मैंने अपनी आँखें बन्द की और मन ही मन अगली सीट पर बैठे, अपने "सुपर लार्ड महागुरू साहिब" से प्रार्थना करने लगा..!

आख़िर हम कश्मीर पहुँच गये। गुरूजी हम सबको साथ लेकर, दूर दराज़ की घाटियों में से होते हुए श्रीनगर पहुँच गए। वहाँ हमने एक रात, मोहिन्दर सिंह बतरा के घर पर गुज़ारी।

अगले दिन सुबह गुरूजी ने, कंपकपाती हुई ठण्ड में हमें 'गुलमर्ग' चलने का आदेश दिया। 'गुलमर्ग' पहुँचने में हमें कुछ घण्टों का समय लगा। यह एक बहुत खूबसूरत जगह है। पहाड़ और सड़क पर पूरी तरह से बर्फ बिछी हुई थी। वह दृश्य मन को बहुत मोहने वाला था।

मैंने सोचा कि गुरूजी बहुत खुःश होंगे क्योंकि वे कुदरती सौन्दर्य के शौकीन हैं। गुरूजी इधर-उधर देख रहे थे और बहुत खुःश लग रहे थे। इतने में अचानक मेरी तरफ मुड़े और मेरी आँखों में देख कर बोले,

"...राज्जे,!! ...कर दूं तेरा गला ठीक!!"

मुझे इस अचानक होने वाली कृपा की बिलकुल आशा नहीं थी ! मैं तुरन्त बोला, "…..हाँ, गुरूजी, कर दीजिये"

कह कर मैं उनकी तरफ देखने लगा…।

गुरूजी पहाड़ की तरफ इशारा करके बोले,

"….तो फिर जा, मुट्ठी भर बर्फ खा ले।"

फिर क्या था… मैंने बर्फ उठाई और खा गया…

वाह – यह क्या हुआ..?

अविश्वस्नीय------

…मेरा गला उसी वक़्त ठीक हो गया। मैं बात कर सकता था। कमाल हो गया अगली सुबह जब मैं उठा, तो बिलकुल ठीक था। गुरूजी ने क्या किया था…? सिर्फ उन्होंने कहा ही तो था, "राज्जे…! कर दूं तेरा गला ठीक …और फिर बर्फ खाने के लिए कहा"।

आश्चर्य………

ये 'सुपर लार्ड' तो बिलकुल अलग तरह के डॉक्टर हैं। दूसरे डॉक्टर तो यदि किसी का गला खराब हो तो बर्फ से दूर रहने का परहेज़ बताते हैं ख़ास तौर पर उस व्यक्ति को, जो पिछले चार महीनों से, इस तरह की तकलीफ़ से गुज़र रहा हो !! …..पर गुरूजी ??

तो मैं ही क्या, तुम या कोई दूसरा व्यक्ति भी गुरूजी महाराज द्वारा किये गये इस इलाज के प्रति टिप्पणी कर सकता है…..।।

तो बेहतर यही होगा, कि कोई टिप्पणी न ही करे ...और गुरूजी के पवित्र चरणों में जायें ।

जैसा कि वेदों व धर्मग्रन्थों में लिखा है----

‘मंत्र मूलं गुरु वाक्यं।’

और उनके शब्दों का इन्तजार व मनन करें।

आपको शत्-शत् नमन....

......हे गुरूदेव

गुरूजी ने कहा, "बेटा मुझे अपने लिये जो अन्न चाहिये उसके लिये मुझे अपने दफ़्तर जाना ज़रुरी है। क्योंकि मैं किसी का अन्न नहीं खा सकता। खिला तो सकता हूँ लेकिन खा नहीं सकता।"

149. *एक संसारिक रुप में गुरूजी, 'मर्यादा पुरूषोत्तम'*

अस्सी के दशक के मध्य की बात है जब गुड़गाँव के सैक्टर-7 पर गुरूजी के दर्शन के लिये असंख्य लोगों की भीड़ चरम सीमा तक पहुँच गयी थी। रोज़ाना सुबह और शाम को स्थान के हाल में तथा बाहर सड़क पर अनगिनत भक्तजन दर्शन हेतु एकत्रित होते थे। गुरूजी के लिये अपने ऑफिस जाना भी मुश्किल हो जाता था।

ऐसी स्थिति आ गई कि गुरूजी ने सुबह नौ बजे के बजाय सुबह छः बजे अपने ऑफिस जाना शुरु कर दिया। क्योंकि

गुरुजी किसी को भी 'ना' नहीं कहते थे परन्तु उन्हें अपने ऑफिस भी समय पर पहुँचने में आनन्द आता था। इसलिए उन्होंने अपनी कार्य पद्धति में बदलाव करते हुए अपने ऑफिस जाने का समय बदल दिया।

गुरुजी ने कहा,

"बेटा मुझे अपने लिये जो अन्न चाहिये उसके लिये मुझे अपने दफ़्तर जाना ज़रुरी है।"

क्योंकि मैं किसी का अन्न नहीं खा सकता।
खिला तो सकता हूँ लेकिन खा नहीं सकता।

अनुपलभ्य...!!
अर्थातः सभी की समझ से परे..!!
ऐसा महान प्रभुत्व, जिन्हें लाखों लोगों ने भगवान के रुप में अपनाया और उनकी पूजा करते हैं और जिन्होंने संसारिक बन्धन में रहते हुए भी स्वयं को अनुशासित रखा।

छः महीने की जान लेवा बीमारी और आपने चुट्कियों में ठीक कर दी..!!
ऐ मेरे मालिक..।।

150. *मेरे एक मित्र की बहन नाज़ी, जो लगातार सिरदर्द्र व नींद न आने की बीमारी से ग्रसित थी।*

<u>मेरे बचपन के दोस्त</u> को पता चला कि गुड़गाँव वाले महान गुरूजी ने मुझे अपना शिष्य बनाया है। वह मेरी पत्नी 'गुलशन' के भी बहुत करीब था, उसने अपनी परेशानी का कारण बताते हुए कहा कि मेरी छोटी बहन नाज़ी, जो पिछले छः महीने से लगातार होने वाले सिरदर्द्र से बहुत परेशान है और रात को सो भी नहीं सकती। उसकी शादी कोलकत्ता में हुई थी। गुलशन ने मेरे मित्र को उसे जल्दी दिल्ली बुलाने और गुरूजी से मिलवाने के लिए कहा।

गुलशन को पूजनीय साहेब जी पर अटूट विश्वास था। मेरा

मित्र, गुलशन को बहुत सम्मान देता था और उस पर बहुत विश्वास भी करता था इसलिए उसने अपनी बहन नाज़ी को दिल्ली बुला लिया।

उसे अपने साथ लेकर गुरूजी के पास गयी और वहाँ एक अजीब घटना घटी। गुरूजी उसे बड़ों की तरह देख रहे थे लेकिन नाज़ी एक छोटे बच्चे की तरह बर्ताव कर रही थी। वह एक बच्चे की तरह गुरूजी से बोली, "गुरूजी ये सिरदर्द मुझे जीने नहीं देती और पिछले छः महीने से मैं रात को सोई तक नहीं।"

गुरूजी ने उसकी तरफ देखा, अपने बाँये हाथ से उसके सिर को पकड़ा और उसके माथे के बीच में ग्यारह स्ट्रोक्स (Strokes) लगाये। उसका माथा सूज गया। गुरूजी ने उसे विशेष हिदायतें दी जिसमें से एक यह भी थी कि वह अपनी सास को कभी अपने सिर में तेल ना लगाने दे।

नाज़ी यह सुनकर स्तब्ध रह गई। वह असमन्जस की स्थिति में सोचने लगी कि उसकी सास तो लगातार पिछले कई महीनों से उसके बालों में तेल की मसाज़ करती है...!!
खैर... किसी तरह से नाज़ी बिलकुल ठीक हो गयी। उसे किसी प्रकार का सिरदर्द नहीं था और वह रात को आराम की नींद सोने लगी।

कोलकत्ता वापिस जाने के बाद अगले दिन से वह दिन में बीस घन्टे सोने लगी, जो बड़ा अज़ीब लग रहा था और नाज़ी ने शिकायत की कि शायद वह बीमार हो गई है? मैंने गुरूजी को बताया तो गुरूजी बोले, **"हाँ बेटा, पिछला घाटा भी तो मैंने पूरा करना ही है ना...** इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है वह कुछ समय बाद ठीक हो जायेगी, नाज़ी को बता दो।"

उसके बाद तीस साल का लम्बा समय बीत गया, आज तक ना तो उसे फिर कभी ऐसा सिरदद्र हुआ और ना ही कभी नींद की समस्या ही सामने आई।

छः महीने की जान लेवा बीमारी और आपने चुट्‌कियों में ठीक कर दी....!!

ऐ मेरे मालिक...।।

कभी तो बता दीजिए कि आप हैं कौन...
प्रणाम साहेब,

अपनी कृपा बनाये रखना जी...

"बेटा, तुम नौकरी से त्यागपत्र (Resign), नहीं दोगे और याद रखना, यदि तुम इस कम्पनी से बाहर चले गये तो यह कम्पनी बन्द हो जायेगी।"

151. जब मुम्बई के दिनेश ने 1989 में अपने सीनियर स्टाफ की शिकायत, गुरूजी से की।

मुम्बई के रहने वाले भक्तजन गुड़गाँव आकर, गुरूजी का आशीर्वाद लेने की 'महाशिवरात्रि' और 'गुरू पूर्णिमा' का बेसब्री से प्रतीक्षा करते थे। दिनेश भंड़ारे भी, 'सुपर लार्ड' का इन्तज़ार करने वालों में ऐसा ही एक भक्त है जो कभी इस अवसर को अपने हाथ से निकलने नहीं देना चाहता था।

ऐसे ही एक अवसर पर वह गुरूजी के समक्ष बैठकर अपने ऑफिस के माहौल के बारे में गुरूजी को बता रहा था।

असल में हुआ ये था कि उसका कुछ रैंक प्रोमोशन हुआ और जिन लोगों से वह आगे निकल गया था वे उससे जलते थे।

उसे यह प्रोमोशन, गुरूजी के आशीर्वाद से हासिल हुई थी और उसकी ईमानदारी, उसके लालच से कही अधिक ज़्यादा थी। क्रय विभाग का मुखि़या (Head of the Purchase Department) होने के नाते अतिरिक्त आमदनी, उसे प्रलोभन दे रही थी लेकिन वह व्यक्ति कभी बिकाऊ नहीं था।

उसके विभाग के कुछ अन्य अधिकारी, उसके कार्य में रोड़े अटका रहे थे जिससे वह मानसिक रुप से परेशान हो जाये और कुछ हद् तक वे अपने मकसद् में कामयाब भी हो गये। दिनेश ने गुरूजी से शिकायत की, "गुरूजी, उसके ऑफिस का माहौल ऐसा बन गया है कि या तो वह प्रोमोशन से वापिसी ले ले और/या फिर नौकरी से त्यागपत्र (Resign) दे दे।

गुरूजी बहुत अच्छे मूड (Excelent Mood) में थे।

वे बोले--

"बेटा, तुम नौकरी से त्यागपत्र (Resign) नहीं दोगे और याद रखना यदि तुम इस कम्पनी से बाहर चले गये, तो यह कम्पनी बन्द हो जायेगी।"

ये शब्द उससे पूजनीय गुरूजी से सन् 1989 में कहे थे। गुरूजी के उस आज्ञाकारी भक्त ने, गुरूजी की आज्ञा से मुम्बई वापिस जाकर, उसी कम्पनी में सभी परेशानियों को झेलते हुए अपना काम शुरु कर दिया। ठीक बारह साल

बाद सन् 2001 में दिनेश ने, बिना किसी दबाव के अपनी मर्जी से, उस कम्पनी की नौकरी से त्यागपत्र (Resign) *दे दिया।*

करीब एक महीने बाद दिनेश को पता लगा कि उस कम्पनी के सभी कर्मचारियों को नोटिस दे दिया गया है कि वह कम्पनी बन्द हो रही है।

हे भगवान----

गुरूजी ने दिनेश को सन् 1989 में ये कहा था, "जिस दिन तू यह कम्पनी छोड़ देगा उस दिन के बाद ये कम्पनी बन्द हो जायेगी" और यह बारह साल के बाद हुआ। दिनेश ने कम्पनी छोड़ी और कुछ ही हफ्तों में कम्पनी बन्द हो गयी।

गुरूजी आप भगवान की तरह ही महान हो।

जैसे वो जानता है कि आगे क्या होने वाला है।

........आपको
कोटि-कोटि प्रणाम गुरूदेव।

शिष्य को स्थान से लेकर लाईन के अन्त तक कतार में खड़े प्रत्येक भक्त की आँखों में देखते हुए चलकर जाना होता होता था और वहाँ से वापिस आना होता है। इसे 'परिक्रमा' कहते हैं।

152. *जब गुरूजी ने एफ. सी. शर्मा जी को बाहर सड़क पर गुरु दर्शन के लिए लाईन में खड़े भक्तजनों की, परिक्रमा करने के लिए कहा।*

गुड़गाँव के सैक्टर 7, के स्थान के बाहर सड़क पर गुरूजी के दर्शन के लिए, अनगिनत लोग लाईन में खड़े थे। स्थान के पीछे सड़क और फुटपाथ को अलग रखने के लिए शामियानें लगाये गये थे ताकि उसमें भक्तजन लाईन में अपने 'सुपर लार्ड' गुरूजी की एक झलक पाने के लिए इन्तज़ार कर सकें।

गुरूजी बाहर आते और स्थान के गेट से करीब़ पचास गज़ की दूरी तक लाईन में कुछ लोगों को आशीर्वाद देते और

लोगों को आदेश देते कि वे स्थान पर जायें और वहाँ विस्तार से गुरूशिष्यों से बात करें जो स्थान के हॉल में उनकी सेवा के लिए बैठे हैं। बाकी के लोग सड़क के किनारे-किनारे करीब़ ढ़ाई किलोमीटर लम्बी लाईन में खड़े इन्तजार कर रहे होते थे।

एक बार गुरूजी ने अपने मुख़्य शिष्य एफ. सी. शर्मा जी को आदेश दिया कि वे जहाँ तक भक्तजन लाईन में खड़े इन्तजार कर रहे हैं वहाँ जायें और उनकी परिक्रमा करके वापिस स्थान पर पहुँचें। (परिक्रमा का अर्थ है--- स्थान से चलकर जाना और जहाँ तक लाईन समाप्त होती है वहाँ तक जाकर, वापिस आना।)

यह कार्य करते हुए शिष्य को स्थान से लेकर लाईन के अन्त तक कतार में खड़े प्रत्येक भक्त की आँखों में देखते हुए चलकर जाना होता होता था और वहाँ से वापिस आना होता है। इसे 'परिक्रमा' कहते हैं। गुरूजी का हर शिष्य यह परिक्रमा करता था।

इस परिक्रमा करने का एक विशेष आध्यात्मिक कारण भी है जो ना कभी पढ़ा और ना ही सुना होगा। गुरूजी हमें आदेश देते थे कि वे पीड़ित लोग, इन्सान नहीं अपितु भगवान हैं। परिक्रमा का अर्थ है---- भगवान, जो मनुष्य रुप में, गुरूजी के आशीर्वाद के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं उनका ***'वरण'*** *करना।*

ईश्वर द्वारा निर्धारित इस क्रिया से एक ख़ास लक्ष्य की प्राप्ति की सम्भावना तो है, परन्तु यह प्राप्ति कोई शिष्य अकेला नहीं कर सकता। गुरू के आधीन होकर ही इस लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

वे लगातार लोगों के सिर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे। बारह घण्टे बीतने के बाद भी लगातार गुरूजी के चेहरे पर वही मुस्कुराहट थी जैसे कि शुरु में थी।

153. प्रेम और भक्ति की चरम सीमाओं का एक उद्हारण

गुरूजी ने कहा, "बेटा, मैंने ये भी तो देखना है ना कि मेरे गुरू के गले में हार मुझसे कम ना पड़ें।

...वाह, क्या रिश्ता है गुरूजी का अपने गुरू के साथ, प्रेम और मौहब्बत की इन्तहा-- जवाब नहीं।

वो शिवरात्रि का दिन था। सुबह की शुरुआत से लेकर रात्रि के 12 बजे तक लोगों की भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। अपने हाथों में फूलों की दो-दो मालाऐं लिए, एक स्थान

पर चढ़ाने और दूसरी गुरूजी के गले में डालने के लिए लम्बी-लम्बी कतारों में लोग खड़े थे। कोई कोई सिर्फ एक ही माला लेकर आ रहा था, जिसे वह स्थान पर ना चढ़ाकर, गुरूजी को अर्पण कर रहा था। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि विशेषकर फूलों की मालाओं और लोगों से सम्बन्धित इस तरफ किसी का ध्यान नहीं था।

दरवाजा, जो गलियारे की तरफ खुलता था के बीचोंबीच गुरूजी खड़े थे। लोग पहले कमरे में प्रवेश करते और स्थान पर माथा टेककर माला अर्पण करते थे। तद्‌ोपरान्त वे गुरूजी के पास आते प्रणाम करते और उनके गले में माला डालते थे। सुबह से ऐसा ही चल रहा था। मैं गुरूजी के पीछे खड़े होकर बाहर जाने के रास्ते के बारे में लोगों का मार्गदर्शन कर रहा था।

वास्तव में यह मेरी कल्पना से परे एक ऐसा दृश्य था, जिसे देखकर मुझे अन्दर से इतनी खुः शी की अनुभूति हो रही थी कि प्रत्येक दो/तीन सैंकिण्ड के बाद मेरे पूजनीय गुरूजी के गले में हार डाले जा रहे थे और वे लगातार लोगों के सिर पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे। बारह घण्टे बीतने के बाद भी, लगातार गुरूजी के चेहरे पर वही मुस्कुराहट थी जैसे कि शुरु में थी। गुरूजी के व्यवहार और मुस्कान में कोई परिवर्तन नहीं आया था।

लेकिन कुछ समय के बाद मैंने अनुभव किया कि गुरूजी कुछ लोगों को तो गले में माला डालने की अनुमति दे रहे हैं लेकिन कुछ लोगों को नहीं। वे उनकी मालाऐं अपने हाथ में ही ले लेते हैं। मैंने फिर कुछ अन्तराल के बाद फिर दुबारा ऐसा ही अनुभव किया। मैं उन लोगों की भावनाओं के बारे

में सोचने लगा जिन्हें गुरुजी ने गले में माला डालने की अनुमति नहीं दी थी।

जब मुझे ऐसा अनुभव कई बार हुआ तो मैंने साहस बटोर कर आख़िर गुरुजी से पूछ ही लिया, "गुरुजी, आप कुछ लोगों को गले में माला डालने देते हो, पर कुछ को नहीं। जिनसे नहीं डालवाते, उनका दिल दुःखता नहीं होगा...?

गुरुजी अपना मुँह स्थान की तरफ करके खड़े हुए थे। वे मेरी तरफ मुड़े और बहुत प्यार से स्थान की तरफ इशारा करते हुए बोले, "बेटा, मैंने अपने गुरु की तरफ भी तो देखना है ना, कि मेरे गले में ज़्यादा मालाऐं ना पड जायें.."

...वाह, साहेब जी.....वाह! आफरीन...! आफरीन...।।

ऐसे वातावरण में भी अपने गुरु का इतना ध्यान...!!
इस समय जब लोगो का समुद्र उमड-उमड़ कर आप पर न्यौछावर हो रहा है, इस समय भी आपको अपने गुरु का इतना ध्यान है...! और पूरी गिनती भी है कि कितनी मालाऐं स्थान पर पड़ी हैं और कितने आपके गले में।

कृप्या गुरुजी बतायें कि आप हैं कौन....?

हम पर अपनी कृपा बनाये रखना जी......।।

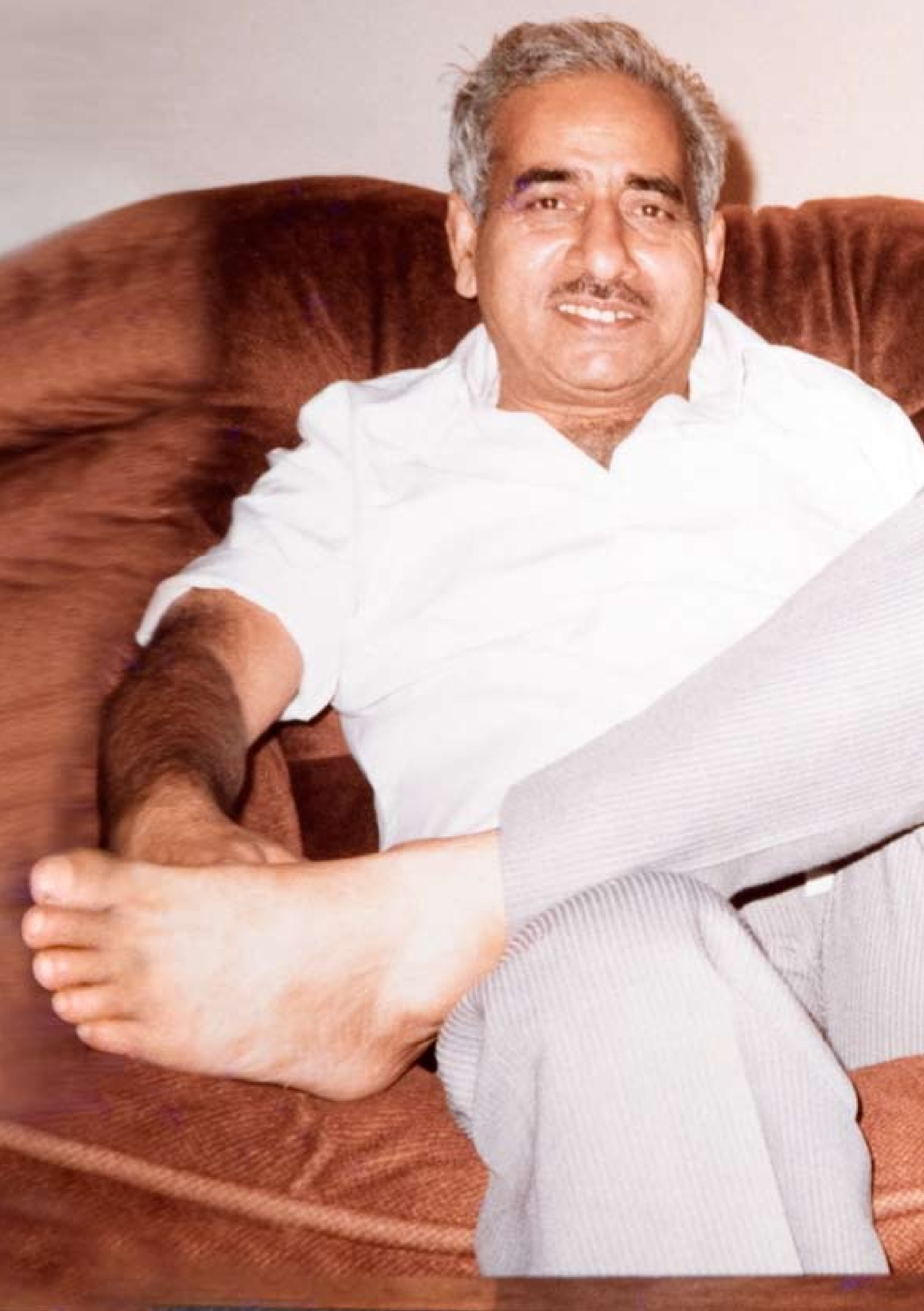

नोटः -

सभी कार्यक्रम की तिथियों के लिए, स्थान के नोटिस बोर्ड तथा गुरूजी की वेब साईट देखे--

www.gurujiofgurgaon.com

गणेश चर्तुथी, महाशिवरात्रि, गुरूपूर्णिमा धनतेरस एवं प्रत्येक बड़े वीरवार पर सेवा के लिए :

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A. पटौदी रोड़,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

बंसत-पंचमी व निर्वाण दिवस पर भंडाराः

नीलकण्ठ धाम,
नजफ़गढ. - तिलकनगर रोड़,
निकट साँई बाबा मंदिर,
नजफ़गढ़,
नई दिल्ली-110043

गुरूजी का मुख़्य स्थान 1

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A. पटौदी रोड़,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

गुरूजी का मुख़्य स्थान 2

हिमगिरि,
मकान नं0 702, सैक्टर 7,
जय सिनेमा के पीछे,
गुड़गाँव। हरियाणा

गुरूजी का जन्म स्थान

शीतला मंदिर,
दिल्ली गेट,
ग्राम व पोस्ट हरियाना,
ज़िला होशियारपुर (पंजाब)

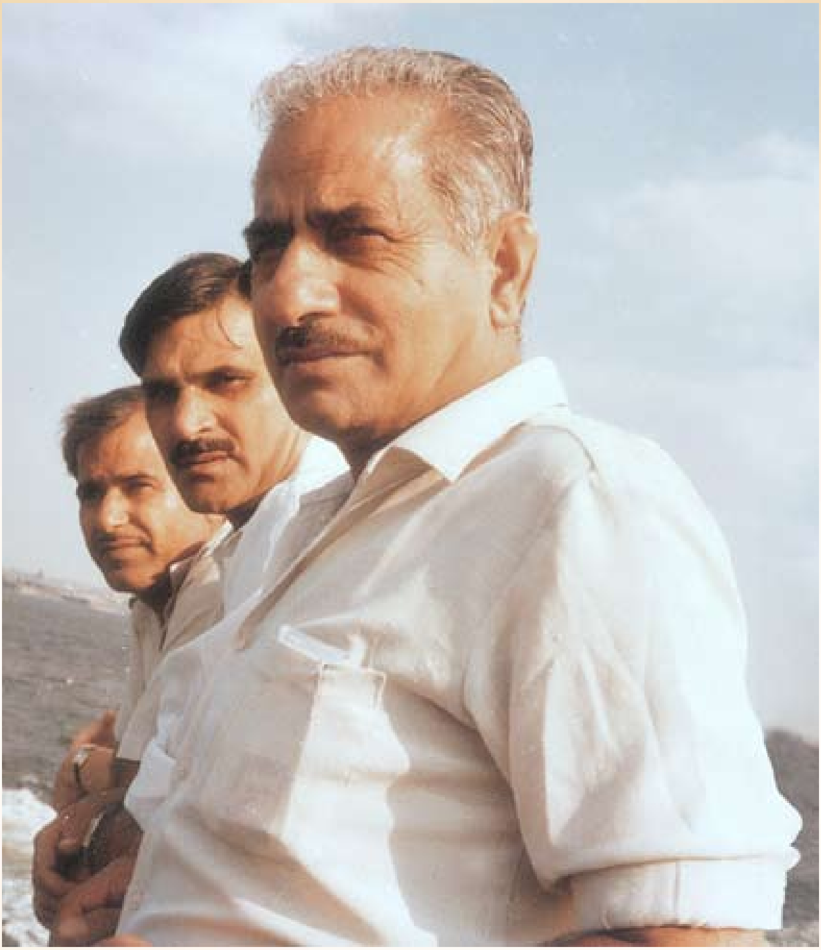

“प्रभुता के प्रभु”

वर्तमान युग में अपने शिष्यों के साथ

(गुरूजी, राज्जे और सन्तलाल जी)

गुरूजी
गुड़गाँव वाले

अविश्वस्नीय झलकियाँ

भाग-3